मास्टर ऑफ आर्ट्स (हिन्दी)

एम.ए. (हिन्दी)

अन्तिम वर्ष

छायावाद

(वैकल्पिक प्रश्न पत्र)

दूरवर्ती अध्ययन एवं सतत् शिक्षा केन्द्र
महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट (सतना) म.प्र. - ४८५३३४

वैकल्पिक प्रश्न पत्र– छायावाद

ई–संस्करण 2023–24 / M.A Hindi. –II - 36

प्रेरणा एवं मार्गदर्शन :

प्रो. भरत मिश्र

कुलपति

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट (म.प्र.)

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल

पाठ्यक्रम संयोजक

डॉ. कुसुम कुमारी सिंह

पाठ्यक्रम अभिकल्पना एवं सम्पादक मण्डल :

डॉ. कमलेश थापक　　डॉ. ललित सिंह

डॉ. कुसुम कुमारी सिंह　　डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

मुद्रण प्रस्तुति

डॉ. सन्तोष अरसिया, उपकुलसचिव (दूरवर्ती परीक्षा)

सन्तोष राजपूत, सहायक कुलसचिव (दूरवर्ती परीक्षा)

शिवांगी त्रिपाठी

सम्पर्क सूत्र :

डॉ. कमलेश थापक, निदेशक, दूरवर्ती शिक्षा

दूरवर्ती अध्ययन एवं सतत् शिक्षा केन्द्र

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट (म.प्र.)

दूरभाष– 07670–265460, E-mail – directordistancemgcgv@gmail.com, website : www.mgcgvchitrakoot.com

प्रकाशक :

दूरवर्ती अध्ययन एवं सतत् शिक्षा केन्द्र

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट (म.प्र.)

प्राक्कथन...

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की तपोस्थली, मंदाकिनी नदी के सुरम्य तट पर स्थापित महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय भारतरत्न नानाजी देशमुख के शैक्षिक चिंतन और संकल्पों की जीवंत अभिव्यक्ति है, जो म.प्र.शासन द्वारा 12 फरवरी, 1991 को विशेष अधिनियम 09, 1991 द्वारा स्थापित हुआ।

विश्वविद्यालय का ध्येय वाक्य है–'विश्वं ग्रामे प्रतिष्ठितम्' अर्थात ग्राम विश्व का लघु रूप है। विश्वविद्यालय चित्रकूट में स्थित है, जो एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। नई पीढ़ी के लिये यह स्थान आदर्श एवं प्रेरणा का केन्द्र है।

विश्वविद्यालय में कृषि, प्रबंधन, अभियांत्रिकी, लोक विज्ञान, ग्रामीण विकास एवं स्थानीय स्वशासन, लोक शिक्षा, कला, संस्कृति एवं साहित्य सहित सभी अकादमिक धारायें प्रभावी रूप में उपस्थित हैं। विश्वविद्यालय, ग्राम को समाज जीवन की मूल इकाई मानकर शिक्षण, प्रशिक्षण, शोध और प्रसार कार्यों से सर्वांगीण विकास के लिए विगत 3 दशकों से अधिक समय से समर्पित प्रयास कर ग्रामोदय से राष्ट्रोदय के संकल्प में लगा हुआ है। विश्वविद्यालय ने अपनी गतिविधियों और कार्यक्रमों के माध्यम से कौशल विकास के उन्नयन एवं प्रमाणन तथा सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है तथा शासन के सहयोगी के रूप में उल्लेखनीय भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

प्राचीन एवं सनातन भारतीय ज्ञान की परम्परा के आलोक में आई, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 चिरवांछित जन आकांक्षाओं की सम्यक् अभिव्यक्ति है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के युगान्तरकारी प्रावधानों को लागू करने में मध्यप्रदेश अग्रणी राज्य रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने नवाचारों के लिए सकारात्मक और अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराया है। विद्यार्थियों की पठन–पाठन की स्वतंत्रता, कौशल विकास के समुचित अवसर तथा राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुसार आने वाले भविष्य के लिए तैयार करने की प्रतिबद्धता राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों में स्पष्टतः दिखाई देती है।

विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों को दूरवर्ती के विभिन्न पाठ्यक्रमों में अर्थपूर्ण रूप से जोड़कर इन्हें सत्र 2023–24 से पुनः संशोधित/परिवर्धित रूप में प्रारम्भ किया है। विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के प्रसार एवं रोजगार के अवसर बढ़ाने हेतु दूरवर्ती माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष प्रयास कर रहा है। दूरवर्ती पद्धति से संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों में नियमित संपर्क कक्षाओं के आयोजन, उच्च शिक्षा की स्व–अध्ययन सामग्री एवं नई शैक्षिक प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए शिक्षार्थी को बेहतर शैक्षणिक अनुभव प्रदान करने की व्यवस्था सुनिश्चत की जा रही है।

विश्वविद्यालय के दूरवर्ती अध्ययन एवं सतत शिक्षा केन्द्र द्वारा सत्र 2024–25 में संचालित परास्नातक, स्नातक तथा डिप्लोमा स्तरीय दूरवर्ती पाठ्यक्रमों के शिक्षार्थियों हेतु ई–स्वनिर्देशित अध्ययन सामग्री प्रस्तुत करते हुये मुझे हर्ष का अनुभव हो रहा है।

पाठ्यक्रम से जुडे सभी शिक्षार्थियों, अभिभावकों, प्रशासकों, समन्वयकों और अन्य सभी को मेरी मंगलकामनायें

प्रो. भरत मिश्रा
कुलपति

छायावाद

इकाई–1 : **जयशंकर प्रसाद**

सौंदर्यदर्शन और श्रृंगारिकता, स्वानुभूति, जड़–चेतन संबंध और आध्यात्मिक दर्शन, नारी की महत्ता, मानवीय पक्ष, प्राकृतिक अवयव, चित्रात्मकता

इकाई–2 : **सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला**

काव्य का विद्रोही स्वर, भावनाओं का प्रबल वेग, व्यंग्यपरक कविताएँ, प्रगतिवादी स्वर, प्रकृति चित्रण, सौन्दर्य बोध

इकाई–3 : **महादेवी वर्मा**

स्वानुभूति, विरह वेदना का वर्णन, संवेदनशीलता, आध्यात्मिक दर्शन एवं रहस्यवाद, प्रकृति चित्रण

इकाई–4 (क) : **सुमित्रानन्दन पन्त**

कोमल कल्पनाओं की प्रमुखता, नव रहस्यवाद और नवमानवतावाद, प्रगतिवादी युग–चेतना, चित्रणशक्ति (चित्रात्मकता), प्रकृति–चित्रण

इकाई– 4 (ख) : **माखनलाल चतुर्वेदी**

विद्रोह का स्वर, राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना, प्रकृति चित्रण, सौन्दर्यदृष्टि

इकाई–5 : **द्रुत पाठ – मुकुधर पाण्डय, जानकीवल्लभ शास्त्री, विद्यावती कोकिल, सुमित्रा कुमारी सिन्हा, रामकुमार वर्मा**

मुकुटधर पाण्डेय का जीवन परिचय एवं कृतित्व, जानकीवल्लभ शास्त्री का जीवन परिचय एवं कृतित्व, विद्यावती कोकिल का जीवन परिचय एवं कृतित्व, सुमित्राकुमार सिन्हा का जीवन परिचय एवं कृतित्व, रामकुमार वर्मा का जीवन परिचय एवं कृतित्व, द्रुत पाठ हेतु चयनित कवियों के काव्य की अंतर्वस्तु, मुकुटधर पाण्डेय के काव्य की अंतर्वस्तु, जानकीवल्लभ शास्त्री के काव्य की अंतर्वस्तु, विद्यावती कोकिल के काव्य की अंतर्वस्तु, सुमित्रा कुमारी सिन्हा के काव्य की अंतर्वस्तु, रामकुमार वर्मा के काव्य की अंतर्वस्तु

छायावाद

Notes

इकाई–1 : जयशंकर प्रसाद

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 पृष्ठभूमि

1.3 जीवन परिचय एवं कृतित्व

1.4 प्रसाद के काव्य की अंतर्वस्तु

1.4.1 सौंदर्यदर्शन और श्रृंगारिकता

1.4.2 स्वानुभूति

1.4.3 जड़–चेतन संबंध और आध्यात्मिक दर्शन

1.4.4 नारी की महत्ता

1.4.5 मानवीय पक्ष

1.4.6 प्राकृतिक अवयव

1.4.7 चित्रात्मकता

1.5 संरचना शिल्प (काव्य रूप, काव्य भाषा)

1.6 काव्य वाचन और संदर्भ सहित व्याख्या

1.7 सारांश

1.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Notes

1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- छायावादी स्तंभ महाकवि जयशंकर प्रसाद के युग की पृष्ठभूमि एवं उनके जीवन और कृतित्व के बारे में जान सकेंगे
- प्रसाद के काव्य की अंतर्वस्तु बता सकेंगे
- प्रसाद की कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे, और
- महाकवि की भाषा-शैली आदि की विशेषताओं को जान सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

इस इकाई में आप छायावादी कविता के आधार स्तंभ महाकवि जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में अध्ययन करेंगे। अनेक मूर्धन्य आलोचक व साहित्यकार प्रसाद को छायावाद का प्रवर्तक मानते हैं। सन् 1918 ई. में प्रकाशित उनकी 'झरना' कृति से छायावाद का श्रीगणेश माना जाता है। यद्यपि सुमित्रानंदन समेत कुछ अन्य समीक्षक प्रसाद को छायावाद का प्रवर्तक नहीं मानते हैं, फिर भी कुल मिलाकर प्रसाद को ही प्रवर्तक ठहराया जाता है। इस संदर्भ में सुमित्रानंदन पंत लिखते हैं- ''मेरे विचार में छायावाद की प्रेरणा छायावाद के प्रमुख कवियों को उस युग की चेतना से स्वतंत्र रूप से मिली है। ऐसा नहीं हुआ कि किसी एक कवि ने पहिले उस धारा का प्रवर्तन किया हो और दूसरों ने उसका अनुगमन कर उसके विकास में सहायता दी हो। सामान्यतया छायावाद के प्रवर्तक होने का कीर्ति-किरीट हमारे अग्रज प्रसाद जी के मस्तक पर रखा जाता है और हम भावना की दृष्टि से उसका आदर करते हैं, पर तथ्य विश्लेषण की दृष्टि से यह उचित नहीं लगता।'' (सुमित्रानंदन पंत, छायावाद : पुनर्मूल्यांकन, पृष्ठ छत्तीस, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्कार 1965 ई0)। प्रसाद का 48 वर्षों का जीवन बहुत संघर्षपूर्ण, किन्तु उपलब्धियों भरा रहा। उनके जीवन से संबंधित तथ्यों को हम उनके जीवन परिचय के अंतर्गत तथा साहित्यिक उपलब्धियों की चर्चा कृतित्व में करेंगे। अंतर्वस्तु में आप उनकी काव्यगत विशेषताओं को पढ़ेंगे। सौंदर्य दर्शन से लेकर चित्रात्मकता तक की विशेषताएँ आप विस्तार से जान सकेंगे।

प्रसाद के काव्य रूप आदि के बारे में आप संरचना शिल्प के अंतर्गत जानेंगे। शिल्प और भाषा की विविधता उनके विषयगत वैविध्य से सामंजस्य रखती है, उसको भी आप जान सकेंगे।

आइए, अब प्रसाद की युगीन पृष्ठभूमि का जायजा लें।

1.2. – पृष्ठभूमि

Notes

महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपादन में निकलने वाली पत्रिका 'सरस्वती' ने हिंदी के साहित्य जगत में हलचल मचा रखी थी। राजनीतिक क्षितिज पर प्रथम विश्वयुद्ध (सन् 1914–18 ई.) ने सम्पूर्ण मानवता को अपनी चपेट में ले लिया था। सोवियत संघ के गठन ने एक और राजनैतिक व्यवस्था को जन्म दे दिया था। भारत गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा सिसक रहा था। परतंत्रता की छटपटाहट लेखनीकारों को कुछ नया कर गुजरने को प्रेरित कर रही थी। 'सरस्वती' के माध्यम से महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सन् 1903 ई. में इसका संपादन संभालते ही जहां एक ओर हिंदी के व्याकरण को सुव्यवस्थित किया, वहीं दूसरी ओर खड़ी बोली को हिन्दी को मानक भाषा के रूप में स्थापित कर दिया था। परंतु द्विवेदीगुगीन आदर्शवादिता, मर्यादावादिता और अतिरंजित नैतिकता की जकड़न में साहित्यकार छटपटा रहा था तथा सपाटबयानी से मुक्त होने की कोशि करने लगा था। अंग्रेजों के दमन–चक्र के कारण भी कवि व साहित्यकार अभिधा की बजाय अपनी बातें लक्षणा अथवा व्यंजना में कहने को बाध्य था। सर्वहारा वर्ग के प्रति सहानुभूति एवं संवेदना के कारण विश्वदृष्टि उभर रही थी। नई अभिव्यंजना पद्धति, नई भाषा, नई शैली, नए छंद आदि अब सबकुछ नया करने की ललक कवियों में पैदा हो गयी थी। मुकुटधर पांडेय, मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' श्रीधर पाठक आदिउ ने जो नई भूमि तैयार कर दी थी, उस पर जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत आदि चलने का तैयार थे।

1.3 – जीवन परिचय एवं कृतित्व

जयशंकर प्रसाद के पूर्वज कन्नौज में इत्र के व्यापारी थे। व्यापार में असफलता के कारण उनके पूर्वज जौनपुर चले गए। वहां से एक शाखा काशी में जा बसी और सुंघनी साहु के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसी शाखा में जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी, सन् 1890 ई. (माघ सुदी दशमी सं. 1946 वि.) को काशी में हुआ। उस समय प्रसाद का परिवार संपन्नता में केवल काशी नरेश से ही पीछे था। सन् 1901 ई. में जब वे क्वींस कॉलेज में सातवीं के विद्यार्थी थे, उनके पिता श्री देवीप्रसाद जी का निधन हो गया। कुछ समय बाद एक मात्र अग्रज शंभूरत्न का भी निधन होने से प्रसाद को आठवीं के बाद नियमित अध्ययन छोड़कर व्यवसाय में उतरना पड़ा। स्वाध्याय से उन्होंने वैदिक वांगमय और भारतीय दर्शन का ज्ञान प्राप्त किया तथा घर पर ही हिंदी, संस्कृत, फारसी आदि भाषाओं का अध्ययन किया। गृहकलह के कारण धीरे–धीरे संपत्ति नष्ट हो गई और कर्ज चढ़ गया। प्रसाद के घर में अकाल मृत्यु का जमघट लगा रहा और एक–एक कर उनकी दो पत्नियों का निधन हो गया, जिससे उन्हें तीसरा विवाह करना पड़ा। तीसरी पत्नी से उन्हें पुत्र रत्नशंकर की प्राप्ति

Notes

हुई। 14 नवंबर, सन् 1937 ई. (कार्तिक सुदी एकादशी सं. 1994 वि.) को राजयक्ष्मा की बीमारी से 48 वर्ष की अवस्था में उनका निधन हो गया।

प्रसाद का बचपन का नाम झारखंडी था। आठ-नौ वर्ष की अवस्था में ही अमरकोश और लघु कौमुदी कंठस्थ कर लेना उनकी प्रतिभा को संकेतित करता है। इसी वय में उन्होंने ब्रजभाषा में कवित्त और सवैये 'कलाधर' उपनाम से लिखने शुरू कर दिए थे। उन्होंने अपने गुरू मोहनलाल गुप्त 'रससि)' को नौ वर्ष की अवस्था में एक सवैया लिखकर दिया था। अंतर की व्याकुलता और नियति का खेल उनके संपूर्ण साहित्य पर प्रभावी है। कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास- इन सभी क्षेत्रों में प्रसाद ने अपना नवीन जीवन-दर्शन स्थापित किया है, तथा भाषा, शैली और शब्द-विन्यास पर अपनी छाप छोड़ी है।

कृतित्व :-

जयशंकर प्रसाद बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार थे। काव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास तथा निबंध सभी विधाओं मेंवह अपनी मौलिक देने के लिये स्मरण किए जाते हैं। प्रसाद की ब्रजभाषा में लिखी कविताएँ सन् 1909-1910 के लगभग प्रकाश में आने लगी थी। उनकी प्रकाशित काव्य रचनाएँ निम्नलिखित हैं :-

उर्वशी	(1909)
झरना	(1918)
चित्राधार	
आँसू	(1925)
लहर	(1933)
कानन-कुसुम	(1913)
करुणालय	(1913)
प्रेम पथिक	(1913)
महाराणा का महत्व	(1914)
कामायनी	(1934)
वन मिलन	(1909)

नाटक : कामना, विशाख, एक घूँट, अजातशत्रु, जनमेजय का नाग-यज्ञ, राज्यश्री, स्कन्दगुप्त, सज्जन, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, कल्याणी, प्रायश्चित

Notes

उपन्यास : कंकाल, तितली, इरावती,

कहानी संग्रह : छाया, आँधी, प्रतिध्वनि, इन्द्रजाल, आकाशदीप

निबन्ध संग्रह : काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध

प्रसाद संगीत : (नाटकों में प्रयुक्त गीतों का संकलन)

प्रसाद जी की प्रारम्भिक ब्रजभाषा की रचनाएँ चित्राधार काव्य के माध्यम से प्राचीन परंपरा का पालन करती है। आगे-चलकर इन्हीं के अन्दर विद्यमान सूक्ष्म बीज झरना एवं अन्य काव्य-संग्रहों में अंकुरित हुए जिसका प्रतिफल कामायनी जैसे गौरवशाली महाकाव्य के रूप में मिला। इनके नाटक, कहानी, उपन्यास और निबन्ध इतिहास और कल्पना के साथ-साथ प्रकृति वर्णन की अद्वितीय क्षमता को दर्शाते हैं।

प्रसाद के काव्य की अंतर्वस्तु :-

छायावादी कविता का वैभव अपनी क्लासिक पूर्णता के साथ प्रसाद की कविताओं में मिलता है। पुनर्जागरणकालीन रचनाकार होने के कारण प्रसाद में अतीत के प्रति एक प्रकार की मोहकता और मादकता भरी आसक्ति मिलती है। प्रसाद मुख्यत:, लावण्य के कवि हैं। मोती में आभा के समान शरीर की अन्त:कान्ति के चित्रण की प्रवृत्ति प्रसाद में है। प्रसाद का सौन्दर्य-बोध इस बात की पुष्टि करता है कि छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।

प्रसाद जी की प्रारम्भिक कविताओं में अतीत की दु:खद स्मृतियाँ, हल्के विषाद का आवरण तथा श्रंगार की अतृप्त भावनाओं का आभास मिलता है। 'कानन-कुसुम', 'चित्राधार', 'झरना' में इन्हीं दबी हुई भावनाओं का आभास मिलता है। आँसू में यह पक्ष दार्शनिक समाधान के साथ उभरा है। पश्चात की कृतियों में परिष्कृत सौंदर्य की भावधारा त्रिवेणी के रूप में प्रवाहित होती दिखाई पड़ती है, वह कामायनी में काव्य-दर्शन और आनन्द के महोदधि में समाहित होती है।

यहाँ हम जयशंकर प्रसाद की काव्य-प्रवृत्तियों का आंकलन करेंगे।

1.4.1 – सौंदर्य दर्शन और श्रृंगारिकता :-

छायावादी कवियों ने प्रकृति के जड़-चेतन तत्वों में सौंदर्य के दर्शन कर प्रकृति का बड़ा ही सजीव वर्णन किया है। उन्हें प्रकृति के अंग-अंग में सौन्दर्य के दर्शन होते हैं। वस्तुत: छायावादी

Notes

कवियों की यह प्रमुख प्रवृत्ति रही है। प्रसाद भी छायावाद के अन्यतम स्तम्भ हैं। उन्होंने भी प्रकृति के प्रत्येक अंग में सौन्दर्य की अनुभूति की है। छायावादी न केवल वाह्य सौन्दर्य के प्रेमी रहे वरन् उन्होंने अन्त: सौन्दर्य के दर्शन कर उसका सूक्ष्म अंकन भी किया है। 'लहर' का कवि अपनी अतीत की स्मृतियों में खोया रहता है। वह बीते दिनों को लौटाने का प्रयास करता है। प्रेम प्रवञ्चना ने रह-रह कर उसे प्रताड़ित किया है। उसके प्रेम की अत्यंत प्यास 'लहर' के गीतों में स्पष्ट झलकती है। वह प्रेम विभोर होकर लहरों की भांति भावों के उतार-चढ़ाव को गीत रूप में व्यक्त करता है। उसका यौवन अधीर हो उठता है :-

'आह रे ! वह अधीर यौवन।

अधर में वह अधरों की प्यास,

नयन में दर्शन का विश्वास

धमनियों में आलिंगनमयी,

वेदना लिये व्यथायें नई

छूटते जिससे सब बन्धन

सरस-सीकर से जीवन कन।'

प्रसाद जी सौन्दर्य और प्रेम के गायक कवि हैं। उनके सौन्दर्य चित्रण में रीतिकालीन स्थूलता और मांसलता का अभाव है। वे आध्यात्मिक सौन्दर्य के उपासक हैं। उनके सौन्दर्य प्रेम में सूक्ष्मता और कोमलता की अभिव्यक्ति हुई है। लहर तक आते-आते कवि अधिक चिन्तनशील हो गया है। यही कारण है कि इसमें अनुभूति के साथ-साथ चिन्तन की प्रधानता है। डॉ. जयभगवान गोयल के शब्दों में, ''इसकी अनुभूति में भी झरना तथा आँसू की अनुभूति से अन्तर है। झरना तथा आँसू की अनुभूति से अन्तर है। झरना तथा आंसू की अनुभूति में यौवन का आवेग, आवेग तथा प्रवाह तीव्र है, किन्तु लहर की अनुभूति में गहराई अधिक है। इसमें यौवन का आवेग झंझावात तथा हलचल नहीं बल्कि एक शान्ति, गहराई तथा उज्ज्वलता है। उनके मस्तिष्क में जो पीड़ा घनीभूत होकर छाई हुई थी, उसके आँसू बनकर बरस जाने से मस्तिष्क धुलकर निर्मल हो गया है और इसी कारण कवि वैयक्तिक धरातल से ऊपर उठकर जीवन तथा जगत् के सम्बन्ध में अधिक गम्भीरता से विचार करने लगा है।'' अतृप्त प्रेम की अनुभूति को प्रसाद जी कुछ इस तरह से व्यक्त करते हैं -

'चिर-तृषित कंठ से तृष्टि विधुर,

वह कौन अकिंचन अति आतुर।

धीरे से वह उठता पुकार,

मुझको न मिला रे कभी प्यार।'

इस प्रकार प्रसाद के काव्यों की मूल प्रवृत्ति श्रृंगारिकता या प्रेम की है। प्रारम्भ में उन्होंने प्रेम का चित्रण प्रकृति और नारी के माध्यम से किया, किन्तु आगे चलकर वे अलौकिकता की ओर उन्मुख हो गये। दूसरे, उन्होंने सौन्दर्य के सूक्ष्म अवयवों का चित्रण किया। तीसरे, उन्होंने वाह्य विषयों की अपेक्षा वैयक्तिक अनुभूतियों को अभिव्यक्ति प्रदान की।

1.4.2 – स्वानुभूति :–

छायावादी कवियों ने भोगे हुए यथार्थ का सूक्ष्म चित्रण अपनी रचनाओं में किया है। प्रसाद ने भी अपने सुख'दु:ख–मयी अनुभूति की विवृत्ति अपने काव्य में की है। निराश प्रेमी लहरों की भांति उठ–उठ गिर–गिर कर पागलों की भांति प्रेम की गुहार करता है –

'तब लहरों सा उठ कर अधीर, तू मधुर व्यथा–सा शून्य चीर,

सूखे किसलय–सा भरा–पीर, गिरजा पतझड़ का पा समीर।

पहने छाती पर तरल हार, पागल पुकार फिर प्यार–प्यार।'

यहां निराश प्रेमी की अन्तर्वेदना मूर्तिमान हो उठी है। प्रसाद जी ने आजीवन संघर्ष किया। यही संघर्ष उन्हें बार–बार आशावादी बनाता रहा है। वे जीवन की पहेली को अपने चिन्तन द्वारा हल करना चाहते हैं। यही प्राय: उनके काव्य का विषय होता है। वे दु:ख और निराशाओं का निराकरण ही अपने जीवन का लक्ष्य मानते हैं। वे 'कामायनी' के मुख से कहलाते हैं :–

'दुख की पिछली रजनी बीच,

विकसता सुख का नवल प्रभात।'

प्रसाद जी अद्वितीय संवेदना के कवि हैं। उन्हें मानव समष्टि के मन की सच्ची परख है। उनकी प्रेम भावना कई आयामों को समेटे हुए हैं। 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' कहकर ये कभी देश प्रेम को प्रकट करते हैं, तो कहीं कामायनी में 'इड़ा' के मुख से जनसंहार का विरोध कराकर मानवता के प्रति प्रेम का प्रदर्शन करते हैं। प्रसाद जी का लौकिक प्रेम भी अत्यन्त ही संयमित और मर्यादित है। उनकी मार्मिक वेदना की व्यंजना 'आँसू' में देखिए –

Notes

'इस करुणा कलित हृदय में, अब विकल रागिनी बजती।

क्यों हाहाकार स्वरों में वेदना असीम गरजती।'

प्रसाद जी का छायावादी श्रृंगार टूटे मन का अतृप्त श्रंगार है, जिसमें आँसू और पीड़ा की लपटें हैं। पराजय और कुण्ठा के गोद की कसक है। छायावादी रेशमी झिल-मिल आवरण में परिवेष्ठित उनके श्रृंगार में स्वस्थ प्रेरणा और जीवन्तता का अभाव है।

1.4.3 – जड़ चेतन संबंध और आध्यात्मिक दर्शन :-

छायावादी कवि प्राकृतिक क्रिया व्यापारों पर चेतन मानवीय व्यापारों को सर्वत्र आरोपित करता दिखाई देता है। उसे प्रकृति के सजीव रूप में दर्शन होते हैं। वह मानव की भाँति हंसती-रोती, आनन्द-उल्लास मनाती छायावादी कवि के समक्ष प्रस्तुत होती है। छायावदी काव्य में प्रकृति का सर्वत्र सजीव वर्णन हुआ है। 'लहर' की कविताओं में प्रकृति के मानवीय क्रिया व्यापारों के चित्र प्राप्त होते हैं :-

'बीती विभावरी जाग री

अम्बर पनघट में डुबो रही तारा घट ऊषा नागरी'

तू अब तक सोई है आली आँखों में भरे विहागरी।'

प्रसाद जी के काव्य का मुख्य विषय प्रेम और सौन्दर्य ही है। प्रकृति के सचेतन अनुभूति के पीछे एक परम सत्ता का आभास उनके काव्य में सर्वत्र हुआ है। यही प्रसाद जी का रहस्यवाद है, जिसमें न तो कबीर की साधनापरक प्रौढ़ता है न जायसी की प्रेममूलक संवेदना। यह भाव-सौन्दर्य उत्प्रेरित प्रकृति का रहस्यवाद है। कवि 'लहर' की एक कविता 'मेरे नाविक' में कहता है :-

'ले चल मुझे भुलावा देकर

मेरे नाविक ! धीरे-धीरे।'

छायावादी कवि सदैव अद्वैत या सर्वात्मवाद का पोषक रहा है। यही कारण है कि वह सर्वत्र अज्ञात सत्ता के दर्शन करता है। जिसकी सत्ता सर्वत्र व्याप्त है। छायावादी कवि इसी निर्गुण सत्ता के साथ अपना रागात्मक सम्बन्ध स्थापित करता दिखाई पड़ता है। वह कभी उससे कुछ पूंछता है, कभी मिलन के लिए उत्सुक हो उठता है, कभी उसके वियोग में आठ-आठ आँसू रोता है, कभी उसे पुकार उठता है-

'अरे कहीं देखा है तुमने मुझे प्यार करने वाले को ?

मेरी आंखों में आकर फिर आँसू बन ढरने वाले को।'

Notes

प्रसाद जी ने आत्मा की विरहानुभूति को लोक–सापेक्ष भूमि पर उकेरने का जैसा सफल प्रयत्न किया है वैसा बहुत कम ही देखने को मिलता है। उदाहरणार्थ :–

'अरे बता दो, मुझे दया कर

कहां प्रवासी है मेरा ?

उसी बावले से मिलने को

डाल रहीं हूँ मैं फेरा।

रहस्यवादी सभी कवि उस अनन्त शक्ति का ज्ञान प्राप्त करने के बाद उसके दर्शन या मिलन के लिए उत्सुक दिखाई देते हैं। ऐसे रहस्यवादी कवियों ने उस अज्ञात सत्ता से मिलन की आकुलता का वर्णन बड़ी तत्परता के साथ किया है। कवि के जीवन की यथार्थ अनुभूति प्रिय–मिलन के लिये रूपायित हो उठती है, किन्तु वह प्रत्यक्ष दर्शन को छलना समझ कर संकेतों के माध्यम से हृदय की अंधेरी झोली में ज्योति–शिक्षा देने के बहाने आह्वान करता है–

'जग की सजल कालिमा, रजनी में मुख चन्द्र दिखा जाओ,

हृदय अंधेरी झोली, इसमें ज्योति–भीख देने आओ।'

1.4.4 – नारी की महत्ता :–

छायावादी युग के पूर्व नारी–मुक्ति आन्दोलन प्रारम्भ हो चुका था। उसे सामाजिक और राजनीतिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जाने लगा था। छायावादी कवियों ने भी नारी के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की और उसके दिव्य सौन्दर्य तथा गुणों की भूरि–भूरि प्रशंसा की। उसे दया, माया, ममता की प्रतिमूर्ति कहकर पीयूष–स्रोत सी बहने वाली कहा है। उसके आँचल में मातृत्व की वात्सल्य भावना और आँखों से करुणा का प्रवाह बहता दिखाई देता है। 'लहर' संकलन में सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति कमला का यह चित्र उसके राजनैतिक जीवन का ज्वलंत उदाहरण है :–

'सोचती थी –

पद्मिनी जली थी स्वयं, किन्तु मैं जलाऊँगी

Notes

वह दावानल ज्वाला, जिसमें सुलतान जले।

देखें प्रचण्ड रूप ज्वाला–सी धधकती

मुझको सजीव व अपने विरू)।'

मानवीय सौन्दर्य के अंतर्गत नारी–सौन्दर्य की ही अभिव्यक्ति को उसके काव्य में प्रमुखता मिली है। 'आँसू' और 'कामायनी' में नारी–सौन्दर्य अधिक आलोकमय एवं मधुर रूप में व्यक्त हुआ है। देखिए –

'चंचला स्नान कर आये, चन्द्रिका पर्व में जैसी।

उस पावन तक की शोभा, आलोक मधुर थी ऐसी।।'

कामायनी में श्रद्धा को देखकर मनु के मन में जो प्रतिक्रिया हुई, वह शारीरिक उपभोग की नहीं अपितु उसके दर्शन से उत्पन्न मानसिक कौतूहल तथा तृप्ति से समन्वित थी। इसमें सौन्दर्य के प्रति शारीरिक उपभोग का भाव न होकर मानसिक परितोष का भाव ही अधिक है। प्रसाद जी के श्रृंगार और प्रेम के चित्र लौकिकता की पवित्र भूमि से दूर दिव्यता की पावनता से युक्त होते हैं। यथा–

'घिर रहे घुँघराले बाल अंस अवलम्बित मुख के पास।

नील घन शावक से सुकुमार सुधा भरने को विधु के पास।'

'लहर' में पूर्ण नारी का सौन्दर्य तो नहीं मिलता किन्तु उसकी अलकों औ नेत्रों, देहयष्टि तथा चुम्बनरत अधरों का अधूरा चित्र देखने को मिल जाता है –

'तुम्हारी आंखों का बचपन, खेलता था जब अल्हड़ खेल

हारता था हँस–हँस कर मन।'

प्रसाद से पूर्व रीतिकाल में नारी के प्रति बड़ा हीन और संकुचित दृष्टिकोण था। प्रसादजी ने अपने काव्य में नारी को महत्ता प्रदान की और श्रद्धा की साक्षात प्रतिमा कहा। प्रसाद के अमर महाकाव्य 'कामायनी' की नायिका 'श्रद्धा' भी इसी कोटि की नारी है। श्रद्धा अगाध विश्वास, त्याग, सौन्दर्य एवं विश्वबन्धुत्व की मूर्तिमान प्रतीक है। वास्तव में 'श्रद्धा' के रूप में प्रसाद ने अपने नारी विषयक दृष्टिकोण को विशद् रूप में अंकित किया है–

'नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नभ पग तल में।

पीयूष स्रोत–सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।'

Notes

प्रसाद जी नारी के मंगलरूप के उपासक हैं और उसे जीवन में इतना महत्वपूर्ण मानते हैं कि न केवल भौतिक, अपितु, आध्यात्मिक आनन्द का मार्ग वही दिखाती है। कामायनी के 'रहस्य' सर्ग में रहस्य की व्याख्या श्रद्धा ही करती है।

1.4.5 – मानवीय पक्ष :–

छायावादी कवि मानवता के अनन्य प्रेमी रहे। वे देश–काल की सीमा से उठकर विश्व व्यापी मानवता की भावना से ओत–प्रोत दिखाई पड़ते हैं। विश्व–बन्धुत्व की भावना उनकी कविताओं में पदे–पदे परिलक्षित होती है। 'लहर' का कवि जलते–भुनते संसार को दु:खी देखकर करुणा की तरंग बनकर प्रवाहित होने की अभिलाषा व्यक्त करता हुआ कहता है –

'भुनती वसुधा, तपते नग, दुखिया है सारा अग–जग,

कंटक मिलते हैं प्रति पग जलती सिकता का यह मग,

वह जा बन करुणा की तरंग चढ़ता है यह जीवन–पतंग।'

छायावादी काव्य पर रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, गांधी, टैगोर तथा अरविन्द दर्शन का व्यापक प्रभाव पड़ा है। अत: उसमें मानवतावाद का स्वर होना स्वाभाविक है। रूढ़ियों एवं मिथ्या परम्पराओं के आक्रोश और जाति एवं वर्गगत संकीर्णता से ऊपर उठकर विश्व मानवता का जयघोष प्रसाद जी की कविता में मिलता है। कामायनी में मानवतावादी दृष्टिकोण विविध रूपों में अभिव्यक्त हुआ है। प्रसाद जी मानवतावाद के अनन्य पुजारी हैं। श्रद्धा में मनु को मातृत्व की पावन विभूति के दर्शन होते हैं –

'तुम देवि आह ! कितनी उदार।

वह मातृभूमि निर्विकार।'

प्रसाद ने काव्य में मानवतावादी विचार की विजय दिखाई है। प्रसाद 'जियो और जीने दो' Ilive and let live) के सिद्धान्त को मानने वाले हैं। उन्होंने लिखा है –

'क्यों इतना आंतक ठहर जा, ओ गर्वीले।

जीने दे सबको फिर तू भी सुख से जी ले।'

इस उद्देश्य को आजकल के योरोपीय राष्ट्र अपना सकें तो मानव–समाज का कितना

Notes

कल्याण हो। डॉ. रामेश्वर दयाल खण्डेलवाल ने 'जय शंकर प्रसाद : वस्तु और कला' में लिखा है कि प्रसाद जी का चिन्तन हवाई नहीं है, गम्भीर मनन से प्रारम्भ उनके विचारों के सुन्दर चित्र विराट काल-फलक पर फैली उनकी सुदीर्घ ऐतिहासिक दृष्टि के तट पर बने हुए हैं। अत: वे यथार्थ व व्यवहार्य हैं। उनका चिन्तन समग्र मानव जीवन, मानव की सहज शारीरिक-मानसिक क्षमता और मानव की मूल आदर्श प्रियता, तीनों के सामंजस्य से तैयार हुआ है, फिर इस चिन्तन को उन्होंने अधिकांशत: साहित्य या कला की मांग के अनुसार भाव व रस में परिणत कर एक स्वस्थ तृप्तिकारी संजीवनी के रूप में प्रस्तुत किया है।

1.4.6 – प्राकृतिक अवयव :-

प्रसाद जी छायावाद और रहस्यवाद के हिन्दी के प्रथम कवि माने जाते हैं। वीरगाथा काल, भक्तिकाल तथा रीतिकाल के कवियों ने प्रकृति को श्रृंगार रस के उद्दीपन के रूप में एवं अलंकारों के अप्रस्तुत विधान के रूप में ही स्मरण किया है। प्रसाद जी पहले कवि हैं, जिन्होंने प्रकृति को सजीव एवं स्वतन्त्र सत्ता के रूप में स्वीकार करके मनोरम कल्पनाएँ प्रस्तुत कीं। प्रसादर जी प्रकृति के अनन्य उपासक थे। उनकी कविता प्रकृति के अनेक रूपों एवं चित्रों से सुशोभित है। प्रसाद जी ने प्राकृतिक शोभा वाले स्थलों की यात्रा करके प्रकृति के व्यापक एवं चिरन्तन सौन्दर्य से परिचय प्राप्त किया था। 'लहर' में सूर्योदय का एक सुन्दर चित्र इस प्रकार है –

'अन्तरिक्ष में अभी सो रही है ऊषा मधुबाला।

अरे खुली भी नहीं अभी तो प्राची की मधुशाला।।'

महाकवि प्रसाद जी ने प्रात:कालीन प्रकृति के जागरण के चित्रण के माध्यम से विहाग का समय अर्थात् अर्द्धरात्रि समझकर आलस्य में पड़े देशवासियों को 'लहर' से अद्भुत इस उद्बोधन शैली में लिखे जागरण गीत में सन्देश दिया है –

'बीती विभावरी जाग री।

अम्बर पनघट में, डुबो रही तारा-घट ऊषा नागरी।

तू अब तक सोई है आली आंखों में भरे विहागरी।'

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने प्रकृति का मानवीकरण किया है। इसके अतिरिक्त आलम्बन के रूप में प्रसाद जी ने प्रकृति को कोमल एवं भयानक दोनों दशाओं में चित्रित किया है। उद्दीपन, पृष्ठभूमि, अलंकार, संवेदनात्मक, उपदेशिका इत्यादि रूपों का भी इन्होंने अपनी कविताओं में

बहुतायत से प्रयोग किया है –

'अरी वरुणा की शांत कछार,

तपस्वी के विराग का प्यार।'

उसके हृदय में बुद्ध के उपदेश झिलमिलाने लगते हैं, किन्तु कुछ समय बाद प्रकृति का उन्मुक्त हास उसे अतीत की स्मृतियों में डुबो देता है। वह आत्म विभोर हो उठता है। प्रेम के पश्चात् प्रसाद जी की कविता की प्रमुख विशेषता प्रकृति चित्रण ही मानी जाती है। प्रसाद जी के प्रकृति चित्रण के विषय में डॉ. रामकुमार वर्मा ने लिखा है – ''प्रकृति का उनके (प्रसाद जी के) काव्य में विशेष महत्व है। वह किसी के मात्र दु:ख–सुख की सहचरी नहीं है, स्वयं सत्ताधारिणी है। उसका अपना सौन्दर्य है, अपने भाव हैं। प्रकृति एक जीवित पात्र की ही भाँति उनके काव्य में समाविष्ट हुई है। प्रकृति के प्रति कवि के मन में जो जिज्ञासा पक्ष ही प्रधान है। आगे चलकर उनका हृदय–पक्ष अनेकानेक परिस्थितियों में प्रेम और करुणा के चित्र उपस्थित कर सका है।''

1.4.7 – चित्रात्मकता :–

प्रसाद जी ने अपनी कविताओं में जीवन–जगत के विविध चित्रों को बड़े ही सहज रूप में उकेरने का प्रयास किया है। उनके शब्द चित्र कहीं–कहीं पर अत्यन्त सजीव से प्रतीत होते हैं। प्रकृति के मूक अवयव मानवीय क्रिया–व्यापारों को संपादित करते हैं, अमूर्त का मूर्त विधान 'लहर' काव्य में द्रष्टव्य है :–

'उठ–उठ रही लघु लोल लहर।

करुणा की नव अंगड़ाई सी।

मलयानिल की परछाई–सी।

इस सूखे तट पर छिटक–छहर।'

छायावादी कविता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि छायावादी कवियों ने लक्षणा शक्ति के प्रयोग द्वारा अन्त: व्यथाओं एवं सुप्त भावों का चित्र खींचने की कोशिश की है। जैसे–

'सुन कर क्या तुम भला करोगे, मेरी भोली आत्मकथा।

अभी समय भी नहीं थका, सोई है मेरी मौन व्यथा।।'

यहाँ आत्मकथा 'भोली' है और कवि की मूक पीड़ा सोयी है। कवि अज्ञात सत्ता के

Notes

अनन्त सौन्दर्य की झाँकी पृथ्वी के अणु–अणु में देखता है। उसकी शक्ति व सीमा का चित्र प्रसाद जी ने 'लहर' में ऐसे संजोया है –

'खिंच जाये अधर पर वह रेखा, जिसमें अंकित हो मधु लेखा।

जिसको यह विश्व करे देखा, वह स्मृति का चित्र बता जा रहे।।'

1.5 – संरचना शिल्प :–

जयशंकर प्रसाद जी की भाषा व्यावहारिक तथा संस्कृतनिष्ठ दो रूपों में पायी जाती है। भावों की गम्भीरता के साथ–साथ भाषा संस्कृतनिष्ठ होती चली गई है। वस्तुतः उनकी भाषा संस्कृत के तत्सम शब्दों से युक्त है। फिर भी उसमें प्रवाह तथा ओज, प्रसाद तथा माधुर्य है। कोमलकान्त पदावली तथा वाक्य विन्यास भावानुकूल है। गीति शैली के सभी प्रमुख तत्व– वैयक्तिकता, भावात्मकता, संगीतात्मकता, संक्षिप्तता, कोमलता, ध्वन्यात्कता, नाद–सौन्दर्य आदि इनके काव्य में उपलब्ध होते हैं। 'बीती विभावरी जाग री' कविता गीतिशैली की नाद सौन्दर्य, ध्वन्यात्मकता, अमूर्त का मूर्त विधान का सर्वोत्तम उदाहरण है।

'उठ–उठ री लघु लोल लहर चित्र भाषा, भावाभिव्यंजना और संगीतात्मकता के लिए अनूठी है। एक अन्य कविता में

'निदय हृदय में हक उठी क्या सोकर पहले चक उठी क्या,

अरे कसक वह कूक उठी क्या झंकृत कर सूखी डाली को ?'

प्रसाद जी ने प्रबंध और मुक्तक दोनों शैलियों का प्रयोग किया है, गीतात्मक, सरल, अलंकृत, गुंफित, सांकेतिक शैलियों का प्रयोग प्रमुखता से उनकी रचनाओं में देखा जा सकता है। प्रसाद जी का शिल्प पूर्ववर्ती कविता से सर्वथा भिन्न है। उनकी रचनाओं में जो नवीन प्रयोग किए गए वे हैं– शब्दों का अधिकाधिक मात्रा में लाक्षणिक प्रयोग, सूक्ष्म प्रतीक योजना, धवन्यात्मक शब्दों का प्रयोग, सतर्क, शब्द चयन, वर्णप्रियता, प्रकृति का सूक्ष्मातिसूक्ष्म निरीक्षण, अमूर्त उपमान योजना और उत्कृष्ट गीति रचना।

प्रसाद जी ने मानवीकरण के साथ–साथ उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा इत्यादि अलंकारों का प्रयोग किया। इनकी आरम्भिक रचना धनाक्षरी में लिखी है। बाद की खड़ी–बोली की रचनाओं में अनुकान्त छन्द का प्रयोग किया है। कामायनी में नाटक तथा रोला आदि छन्दों का प्रयोग किया है। अलंकृत शैली की 'कामायनी' की ये पंक्तियां उल्लेखनीय हैं –

'संध्या अरण जलज के सर से अब तक मन थी बहलाती

मुरझा कर कब गिरा तामरस उसको खोज कहाँ पाती

क्षितिज भाल का कुंकुम मिटता मलिन कालिमा के कर से

कोकिल की का कली वृक्ष ही मिटता मलिन कालिमा से

पर मडराती।'

Notes

1.6 – काव्य वाचन और संदर्भ सहित व्याख्या :-

यहाँ हम आपको काव्य पाठ के लिये जयशंकर प्रसाद की दो कविताएँ 'जाग री !' और 'मेरे नाविक' दे रहे है। हम आपको इनमें से कुछ अंश लेकर व्याख्या करना भी सिखा देंगे। कुछ अंशों की व्याख्या आप करेंगे।

जाग री !

बीती विभावरी जाग री !

अम्बर पन घट में डुबो रही

तारा–घट ऊषा नागरी।

खग–कुल कुल–कुल–सा बोल रहा,

किसलय का अञ्चल डोल रहा।

लो यह लतिका भी भर लायी

मधु मुकुल नवल रस गागरी।

अधरों में राग अमन्द पिये,

अलकों में मलयज बन्द किये,

तू अब तक सोयी है आली।

आंखों में भरे विहाग री।

Notes

मेरे नाविक

ले चल मुझे भुलावा देकर
मेरे नाविक ! धीरे – धीरे।
जिस निर्जन में सागर लहरी
अम्बर के कानों में गहरी
निश्छल प्रेम कथा कहती हो,
तज कोलाहल की अवनी रे।
जहाँ साँझ–सी जीवन छाया
ढीले अपनी कोमल काया,
नील–नयन से ढुलकाती हो
ताराओं की पाँत घनी रे।
जिस गम्भीर मधुर छाया में,
विश्व चित्र–पट चल माया में–
विभुता विभु–सी पड़े दिखाई,
दुख–सुख वाली सत्य बनी रे।
श्रम–विश्राम क्षितिज बेला से,
जहाँ सृजन करते मेला से,
अमर जागरण उषा नयन से
बिखराती हो ज्योति घनी रे।

काव्यांशों की व्याख्या :–

अंश (1)

बीती विभावरी जाग री।
अम्बर पन घट में डुबो रही
तारा–घट ऊषा नागरी।

खग–कुल कुल–कुल–सा बोल रहा,

किसलय का अञ्चल डोल रहा।

लो यह लतिका भी भर लायी

मधु मुकुल नवल रस गागरी।

संकेत – बीती विभावरी ..... गागरी।

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यांश छायावाद युग के प्रवर्तक महाकवि जय शंकर प्रसाद के द्वारा रचित 'लहर' काव्य की 'जाग री' कविता से अवतरित है।

प्रसंग : महाकवि श्री प्रसाद ने प्रात:कालीन प्रकृति के जागरण के चित्रण के माध्यम से विहाग का समय अर्थात अर्द्धरात्रि समझकर आलस्य में पड़े देशवासियों को जागरण का सन्देश इस गीत में दिया है।

व्याख्या : हे सखी ! अब रात बीत चुकी है और प्रभात का सुन्दर समय आ गया है, अत: तुम जाग जाओ। देखों उषा रूपी चतुर नायिका आकाश रूपी पनघट में तारे रूपी घड़ों को डुबो रही है। प्रभातकालीन पक्षियों की कलरव ध्वनि तारे रूपी घड़ों में पानी भरने की ध्वनि प्रतीत होती है। नायिका की साड़ी के आंचल के रूप में वृक्षों की टहनियों पर हरित किसलय हिल रहे हैं। अरे यह लता रूपी नायिका भी अपनी कली रूपी गगरी (घड़े) में नवीन मकरन्द रूपी रस को भरकर ले आती है। प्रात:काल होने पर जैसे स्त्रियां पनघट पर इकट्ठी हो जाती हैं और क्रम–क्रम से पानी भरती हैं। उषा आकाश में उदय होती है मानों पनघट पर जल भरने आती है। उषा काल में तारे क्रमागत विलीन और मलिन हो रहे हैं, मानों ये घड़ों के रूप में डूब रहे हैं।

काव्य सौन्दर्य :

1. यह प्रसाद का उद्‌बोधन शैली में लिखा हुआ एक प्रसिद्ध जागरण गीत है, जिसमें प्रकृति के माध्यम से देशवासियों को जागरण का सन्देश दिया गया है।

2. खग कुल कुल–कुल–सा में उपमा अनुप्रास तथा सम्पूर्ण में सांगरूपक अलंकार का सफल प्रयोग हुआ है।

3. कोमलकान्त पदावली और माधुर्य गुण सम्पन्न परिनिष्ठित खड़ी बोली का व्यवहार हुआ है।

Notes

Notes

अंश (2)

ले चल मुझे भुलावा देकर

मेरे नाविक। धीरे–धीरे

जिस निर्जन में सागर लहरी

अम्बर के कानों में गहरी

निश्छल प्रेम–कथा कहती हो,

तज कोलाहल की अवनी रे।

संकेत : ले चल ..... अवनी रे।

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यांश छायावाद युग के प्रवर्तक महाकवि जयशंकर प्रसाद के द्वारा रचित 'लहर' काव्य की 'मेरे नाविक।' कविता से अवतरित है।

प्रसंग : कवि प्रसाद ने प्रस्तुत अंश में परमात्मा से जीवात्मा के गूढ़ सम्बन्ध और प्रेम का वर्णन करते हुए पीड़ा और दु:ख के संसार–सागर से दूर ले जाने का आग्रह किया है।

व्याख्या : हे मेरे ईश्वर रूपी नाविक ! तू मुझे इस विश्व के मिथ्या रास्तों से हटाकर (अर्थात् मुझे भ्रमित करके) धीरे–धीरे मेरे वास्तविक गन्तव्य स्वर्ग की ओर ले चल। वहाँ की पवित्र निर्जन (अर्थात देवों की) भूमि में अथाह सागर की उत्ताल तरंगें अनन्त आकाश के कानों में आत्मा और परमात्मा के पवित्र और छल–रहित प्रेम की कथा कहती हो। इस कोलाहल युक्त (विवाद और युद्ध) की पृथ्वी को छोड़कर तू मुझे उसी स्वर्ग की ओर ले चल।

काव्य सौन्दर्य : (1) आध्यात्मिक रहस्यवाद से युक्त ये पंक्तियां प्रकृति के सचेतन अनुभूति के पीछे एक अज्ञात सत्ता का आभास कराती हैं।

(2) नाविक, निर्जन, में अन्दोक्ति, धीरे–धीरे में पुनरूक्ति प्रकाश तथा सम्पूर्ण में अनुप्रास एवं सांगरूपक अलंकार है।

(3) कोलकान्त पदावली, गीति शैली, माधुर्य गुण युक्त खड़ी बोली।

शेष अंशों की व्याख्या स्वयं करें।

1.7. – सारांश

Notes

इस प्रकार से महाकवि जयशंकर प्रसाद ऐसे कवि थे जिन्होंने मानव–जीवन की प्रत्येक अनुभूति को अपने संघर्षशील जीवन और कविता में ढाल कर खरा सोना बना दिया। मानवीय तथा प्राकृतिक सौन्दर्य को देखने और समझने की उनकी व्यापक दृष्टि उनके निजी और आध्यात्मिक दर्शन से सम्पृक्त विचारों की परिचायक है। हिन्दी साहित्य की लगभग प्रत्येक विधा में सशक्त रचना करने वाले मानवता के अमर गायक और नारी के श्रद्धा रूप को समाज के सामने रखने वाले प्रसाद जी की कविता में अनुभूति और चिन्तन की प्रधानता है। इनका शिल्प सर्वथा नवीन और सुग्राह्य है।

प्रसाद की रचनाओं में मधु की मिठास है जो उनके आनन्दवादी जीवन दर्शन के अनुरूप है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रसाद की 'मधुमयी प्रतिभा' और 'जागरूक भावुकता' की ओर विशेष रूप से संकेत किया है। श्री नन्ददुलारे बाजपेयी ने लिखा है कि ''प्रसाद जी का साहित्य सच्चे अर्थ में नवीन जीवन से सम्ब) है और वह आधुनिक समस्याओं का हल भी उपस्थित करता है। वह साम्प्रतिक जीवन का उन्नायक है।

1.8 – कुछ उपयोगी पुस्तकें :–

(1) जयशंकर प्रसाद : आचार्य नंददुलारे बाजपेयी, भारती भण्डार लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सं. 2023 वि.

(2) प्रसाद प्रतिभा : सं. इन्द्रनाथ मदान, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, सन् 1971 ई.

(3) प्रसाद साहित्य की समीक्षा, कैलाश नारायण अवस्थी, अनुभूति प्रकाशन कानपुर, सन् 1978 ई.

(4) प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ : सं. वाचस्पति पाठक, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद–1, सन् 1969 ई.

(5) छायावाद पुनर्मूल्यांकन : श्री सुमित्रानंदन पंत, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1965 ई.

1.9 – बोध प्रश्न और उनके उत्तर

प्रश्न 1. जयशंकर प्रसाद का बचपन का नाम क्या था ?

उत्तर : झारखण्डी।

Notes

प्रश्न 2. कविता के अतिरिक्त किन अन्य दो विधाओं में प्रसाद ने ख्याति अर्जित की ?

उत्तर : नाटक और कहानी।

प्रश्न 3. जयशंकर प्रसाद की रचना 'लहर' का प्रकाशन वर्ष क्या है ?

उत्तर : सन् 1933 ई.।

प्रश्न 4. प्रसाद जी की प्रारंभिक ब्रजभाषा की रचनाएँ किस काव्य में हैं ?

उत्तर : 'चित्राधार' में।

प्रश्न 5. छायावाद का उपनिषद किस ग्रन्थ को कहा जाता है ?

उत्तर : कामायनी महाकाव्य।

प्रश्न 6. प्रसाद जी का 'लहर' काव्य किस प्रकार का है ? संक्षेप में बताइए।

उत्तर : 'लहर' प्रेम, सौन्दर्य और प्रकृति विषयक 25 गीतों का संग्रह है ये गीत प्रेम और यौव की भावात्मक अभिव्यक्ति हैं। अन्तिम चार रचनायें 'अशोक की चिन्ता', 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण', 'प्रोशेला की प्रतिध्वनि' और 'प्रलय की छाया' पूर्णत: वर्णनात्मक और प्रतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित हैं।

प्रश्न 7. 'लहर' किसका प्रतीक है ?

उत्तर : 'लहर' छायावादी काव्य के उत्कर्ष और विकास समेटे हुए कवि की लघु भावनाओं का प्रतीक है।

प्रश्न 8. प्रसाद जी ने किस कविता में ऊषा को नागरी कहा है ?

उत्तर : जाग री ! (बीती विभावरी जाग री !) कविता में।

प्रश्न 9. 'कामायनी' में रहस्य की व्याख्या कौन करता है ?

उत्तर : श्रद्धा।

प्रश्न 10. प्रसाद की कविताओं का प्रमुख स्वर क्या है ?

उत्तर : प्रेम और सौन्दर्य

इकाई – 2 : सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

Notes

इकाई की रूपरेखा :-

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 पृष्ठभूमि

2.3 जीवन परिचय एवं कृतित्व

2.4 निराला के काव्य की अंतर्वस्तु

2.4.1 काव्य का विद्रोही स्वर

2.4.2 भावनाओं का प्रबल वेग

2.4.3 व्यंग्यपरक कविताएँ

2.4.4 प्रगतिवादी स्वर

2.4.5 प्रकृति चित्रण

2.4.6 सौन्दर्य बोध

2.5 संरचना शिल्प (काव्य रूप, काव्य भाषा)

2.6 काव्य वाचन और सन्दर्भ सहित व्याख्या

2.7 सारांश

2.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.9 बोध प्रश्न और उनके उत्तर

Notes

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- छायावादी कवि निराला के युग की पृष्ठभूमि एवं उनके जीवन और कृतित्व के बारे में जान सकेंगे।
- निराला की विषयगत काव्य विशेषताओं के बारे में बात कर सकेंगे।
- निराला की कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे और
- महाप्राण निराला की शिल्पगत विशेषताओं को जान सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना :–

पिछली इकाई में आपने छायावादी कविता के आधार स्तंभ महाकवि जयशंकर प्रसाद के बारे में अध्ययन किया था। इस इकाई में आप एक और छायावादी कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के बारे में अध्ययन करेंगे। सर्वप्रथम हम उनकी युगीन पृष्ठभूमि को देखेंगे। निराला की युगीन पृष्ठभूमि भी वही रही है, जो उनके अग्रज रचनाकार प्रसाद जी की रही है। इसके बाद निराला के जीवन परिचय और कृतित्व की जानकारी प्राप्त करेंगे। निराला का जीवन बहुत संघर्षपूर्ण रहा है। पारिवारिक संकटों और अभावों को निरन्तर झेलने वाले निराला ने अपना जीवन यथार्थ की कठोर भूमि पर जिया और क्रान्ति के अग्रदूत बनें। काव्य की अंतर्वस्तु में उनके विद्रोही और क्रान्तिकारी स्वर से लेकर प्रकृति चित्रण तक की विशेषताएँ देखने को मिलेंगी। उन्होंने परम्परा से हटकर मुक्त छंद के साथ विद्रोही रूप में हिन्दी जगत में प्रवेश किया।

निराला के काव्य की शिल्पगत प्रवृत्तियों के परम्परागत और नवीन रूपों की जानकारी आप संरचना–शिल्प शीर्षक के अंतर्गत करेंगे।

आइये, निराला की युगीन पृष्ठभूमि की चर्चा करें।

2.2 पृष्ठभूमि :–

पिछली इकाई में हमने छायावाद के प्रमुख स्तंभ जयशंकर प्रसाद की युगीन पृष्ठभूमि की चर्चा की थी–लगभग समकालीन रचनाकार होने के कारण सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की पृष्ठभूमि

भी वही है। दोनों कवियों ने अपने-अपने समय की बुराइयों का अपनी कविता में विरोध किया है यह बात अलग है कि दोनों का अंदाज अलग-अलग है। प्रसाद जहां समरसता और समझौते से काम चला लेना चाहते हैं, वही निराला विद्रोह करके अपना प्राप्तव्य पाने पर जोर देते हैं। प्रत्येक कवि की रचनाधर्मिता पर युगीन परिस्थितियों के साथ ही व्यक्तिगत जीवन की विषमताओं और समस्याओं-घटनाओं इत्यादि का भी प्रभाव पड़ता है और यही उसे दूसरे कवियों से अलग करता है। वैसे 'छायावाद' शब्द के प्रयोग की जहां तक बात है तो तत्कालीन कवि श्री मुकुटधर पाण्डेय ने जबलपुर से प्रकाशित ''श्री शारदा'' नामक पत्रिका के 1920 के अंकों में 'हिन्दी कविता में छायावाद' नाम से एक लेखमाला आरम्भ की और उसमें न केवल पहली बार 'छायावाद' का नामकरण किया, बल्कि छायावादी कविता के आरम्भिक चरण चिन्हों को अंकित भी किया।

Notes

2.3 जीवन परिचय और कृतित्व :-

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1897 ई. को बसन्त पंचमी के दिन बंगाल में महिषादल राज्य में हुआ था। ये अपने पिता के दूसरे विवाह से उत्पन्न इकलौते पुत्र थे। पिता पं. रामसहाय त्रिपाठी उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिला स्थित गढ़ाकोला गांव के निवासी थे। महिषादल में वे नौकरी करते थे। महिषादल के राजा पं. रामसहाय त्रिपाठी को बहुत मानते थे। बालक सूर्यकुमार (सूर्यकान्त) की प्रारम्भिक शिक्षा वहीं हुई। बंगला, संस्कृत, अंग्रेजी के अध्ययन के साथ ही संगीत, कुश्ती इत्यादि का भी इन्हें बहुत शौक था। स्वच्छंद विचारों के निराला हाईस्कूल से आगे पढ़ाई जारी नहीं रख सके। लगभग 14 वर्ष की आयु में उनका विवाह मनोहरा देवी से हो गया था। उन्हीं की प्रेरणा से निराला जी भी 'श्रीरामचरितमानस' की ओर आकर्षित हुए। 1918 ई. में जब देशव्यापी इन्फ्लुएंजा के कारण इनके परिवार के कई व्यक्तियों के साथ ही इनकी पत्नी का भी स्वर्गवास हो गया तब इनके दो बच्चे (पुत्र श्री रामकृष्ण त्रिपाठी और पुत्री सरोज देवी) थे। वे कलकत्ते से लखनऊ चले आये। तब से वे अधिकांशत: लखनऊ और प्रयाग में ही रहे। संसार के महान कलाकारों के जीवन में जितनी विडम्बनाएँ आई हैं, निराला जी उन सबके शिकार रहे। परिवार में एक मात्र पुत्री बची थी। बीस वर्ष की आयु में वह भी चल बसी। पुस्तक प्रकाशकों और अखबार के मालिकों ने इनका खूब शोषण किया। गरीबी और पारिवारिक संघर्षों में पिसकर ये विक्षिप्त हो गये। जीवन के अन्तिम दिनों में आप विक्षिप्त अवस्था में इलाहाबाद (दारागंज) में एक कोठरी में रहते और रात-दिन साहित्य के सृजन तथा चिन्तन में ही लीन रहते थे। यहीं पर 15 अक्टूबर सन् 1961 ई. (वि.2018) में इस महाप्राण का स्वर्गवास हो गया।

Notes

पत्नी की मृत्यु निराला के लिए मात्र एक सांसारिक दुर्घटना ही नहीं थी, बल्कि वह एक कवि, उच्चाशय चिन्तक और जीवन-क्षेत्र में एकदम अव्यावहारिक व्यक्ति के हाथों से सम्पूर्ण जीवनानुभूति का लुट जाना था। एक प्रकार से उनके अव्यवस्थित जीवन का सूत्रपात यहीं से हुआ।

कृतित्व :-

निराला जी की कविताओं का प्रथम संग्रह 'अनामिका' है। अपने उदात्त और प्रयोगशील स्वर के कारण निराला का काव्य व्यक्तित्व प्रारम्भ में बहुत कुछ अस्वीकृत रहा है, किन्तु आज उनकी सार्वभौतिकता निस्संशय है। कविता के अतिरिक्त निराला ने अन्य साहित्यिक विधाओं में रचनाएँ की हैं - जिनमें उपन्यास, कहानी, संस्मरण, रेखाचित्र, नोट्स, टिप्पणियां और अनेक विषयों पर लिखे गये लेख शामिल हैं। उनके द्वारा रचित और अनूदित ग्रन्थों की संख्या लगभग 61 है। यहां उनकी कुछ प्रमुख रचनाओं के नाम दिये जाते हैं -

अनामिका	(1923 ई.)
परिमल	(1930 ई)
गीतिका	(1936 ई.)
तुलसीदास	(1938 ई.)
जूही की कली	(1916 ई.)
अपरा	
यमुना के प्रति	
कुकुरमुत्ता	(1942 ई.)
बेला	
नये पत्ते	
आराधना	
अर्चना	
गीतगुंज	
सांध्यकाकली	(1969 ई.)

उपन्यास :- प्रभावती, काले कारनामे, चोटी की पकड़, अलका, अप्सरा, निरूपमा

कहानी संग्रह :- चतुरी चमार, सुकुल की बीबी

रेखाचित्र :- बिल्लेसुर बकरिहा, कुल्ली भाट

निबन्ध :- प्रबन्ध प्रतिमा, चाबुक, प्रबन्ध पद्य, रविन्द्र कविता कानन

जीवनी :- प्रह्लाद, राणाप्रताप, ध्रुव, शकुन्तला

निराला के अद्वितीय व्यक्तित्व की ही भाँति उनका कृतित्व भी अप्रतिम है। 'सरोज स्मृति' जैसी चिर स्मरणीय आत्मपरक करुण कविता के मार्मिक स्रष्टा सूर्यकांत त्रिपाठी निराला संसार साहित्य के जाज्वल्यमान रत्न हैं। यद्यपि उन्होंने उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं, जिनमें बिल्लेसुर बकरिहा अपने सजीव ग्राम-चित्रण एवं 'अपने' कान्यकुब्ज-समाज पर तीखे व्यंग्य के कारण अत्यन्त रोचक हैं, तथापि वे प्रमुखतः कवि ही थे।

2.4 निराला के काव्य की अंतर्वस्तु :-

निराला जी को छायावाद का शक्तिवादी कवि कहा जा सकता है। सम्पूर्ण छायावादी कविता में निरालाजी ही एक ऐसे कवि हुए जिनका स्वर आद्योपात ओजस्वी बना रहा। यह ओजस्विता ही उनकी कविताओं को अन्य कवियों की छायावादी रचनाओं से पृथक कर देती है। निराला जी की प्रौढ़तर रचनाएँ राम की शक्ति पूजा, सरोज-स्मृति, तुलसीदास, तोड़ती पत्थर, वर दे वीणा वादिनि वर दे तथा भिक्षुक है। इन कविताओं में जहाँ निराला के कोमल उदात्त स्वर हैं वहीं कठोर और प्रचण्ड भावों की भी प्रचुरता है। अपने स्वाध्याय एवं चिन्तन मनन के सहारे वे नाना विचार-भूमियों से गुजर रहे थे, फलतः ये जीवन-जगत् की भावी परिकल्पना में प्रवृत्त हुए। उन्होंने अपने युग को पौराणिकता से मुक्त किया और आधुनिकता का वरण करते हुए नूतन-पुरातन के संकट-बिन्दु का सन्धान किया। हम निराला के काव्य की विशेषताओं का बिन्दुवार आकलन करेंगे :-

2.4.1 : काव्य का विद्रोही स्वर :-

निरालाजी ने सामाजिक बुराइयों पर अपनी कविताओं के माध्यम से प्रहार किया है। वे समाज के अन्धविश्वास, ढोंग, पाखण्ड के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने विधवा के जीवन का बहुत मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। निराला दैन्य और पलायन की स्थिति वाले कवि नहीं हैं। वे उन भौंड़ी बातों को सहन नहीं कर सकते थे जो मानवीय गुणों को ढँकती हैं। निराला वाह्य क्रांति के ही

Notes

नहीं अपितु आंतरिक क्रांति के पक्षधर हैं। बंधन निराला को सदा–सर्वथा असह्य रहा है, वह जीवन की गति को बाधित करने वाला हो अथवा काव्य को। मुक्ति ही निराला का अथ और इति है –

तोड़ो–तोड़ो, तोड़ो कारा,

पत्थर की निकले फिर

गंगा जलधारा।

परिमल की भूमिका में उन्होंने लिखा है– मनुष्य की मुक्ति की तरह कविता की मुक्ति होती है। मनुष्य की मुक्ति कर्मों के बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना है। जिस तरह मुक्त मनुष्य कभी किसी दूसरे के प्रतिकूल आचरण नहीं करता उसके तमाम कार्य औरों को प्रसन्न करने के लिए होते हैं– फिर भी स्वतंत्र, इसी तरह कविता का भी हाल है। जघन्य अभाव, घोर–तिरस्कार–उपेक्षा और अवहेलना निराला के जीवन का भुक्त यथार्थ रहा है–

मेरा अंतर वज्र कठोर,

देना जो भरसक झकझोर

मेरे दुख की गहन अंधतम्

निशि न कभी हो मोर,

क्या होगी इतनी उज्ज्वलंता

इतना वेदन अभिनंदन ?

जीवन चिर कालिक क्रंदन।।

सामाजिक अवहेलना एवं प्रवंचनाजनित पीड़ा के दंशों से निराला की मनः चेतना निपट निडर और दृढ़ मानवी बनी है। विधवा, भिक्षुक, तोड़ती पत्थर तथा कुकुरमुत्ता इसी प्रवंचना तथा सामाजिक व्यवस्था व्युत्पन्न वैषम्य, उत्पीड़न और अन्याय के विरूद्ध प्रतिरोधी आत्मभिव्यक्ति है। घोर अमानुषी वर्चस्ववादी शक्तियों ने ही निराला में इस अन्याय के विरूद्ध प्रतिरोधी और परिवर्तन कारी बीज बोये हैं।

2.4.2 भावनाओं का प्रबल वेग :-

Notes

निरालाजी के काव्य में भावनाओं का प्रबल वेग है। उनकी गगन-कल्पना की उड़ान संवेदनशीलता के पंखों के सहारे हुई है। उनके 'अपरा' संग्रह की 'जुही की कली' रचना में जो यौवन की मस्ती एवं मनोवेगों का उन्मुक्त चित्रण है, वह छायावादी कविता का प्राणतत्व है। परन्तु पौरुष निराला की रचनाओं का लक्षक गुण है। उनका प्रेम तक पौरुष और ओज से खाली नहीं। 'जुही की कली' का नायक पवन, झंझा की झाड़ियों से कली की सारी देह झकझोर डालता है -

'निर्दय उस नायक ने
निपट निठुराई की,
कि झोंको की झाड़ियों से
सुन्दर सुकुमार देह सारी झकझोर डाली,
मसल दिये गोरे कपोल गोल।'

मगर कली है कि फिर भी क्षमा नहीं माँगती, बस हँसकर रह जाती है। आक्रामकता मनुष्य की आदिम प्रवृत्ति है, इसलिए दीनता उसका जन्मत, स्वभाव नहीं है। जो निराला अपने ही समाज में अस्पृश्य और तिरस्कृत हो गया हो, भला फिर भिक्षुक की दारुण-दीनता, तोड़ती पत्थर की मूक वेदना और एक विधवा की पीड़ा के साथ-साथ अपनी बेटी सरोज को खो देने की एक बाप की व्यथा, ऐसे असंवेद्य और अमानवीय समाज को निराला धिक्कारेगा नहीं तो क्या करेगा ? 'सरोज स्मृति' में कवि की पीड़ा द्रष्टव्य है-

'धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका।'

कवि जब किसी पात्र की रचना करता है, तो उसमें अपने व्यक्तित्व का कुछ अंश डाल देता है या यूं कहिये, उसके पात्रों में उसके व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप उसके पात्रों में स्वत: झलक पड़ती है। दिन-रात सरस्वती की उपासना में लीन निराला जैसे प्रतिभाशाली साहित्यकार की भी आर्थिक विपन्नता की जड़ें इतनी गहरी होती थीं कि वह परिवार का भरण-पोषण भी उचित ढंग से नहीं कर सकता था। यही कारण है कि औषधि के अभाव में पुत्री की मृत्यु पर पिता का हृदय करुण क्रन्दन कर उठता है।

Notes

2.4.3 व्यंग्यपरक कविताएँ :-

निराला की कविता का एक प्रमुख गुण व्यंग्य है। संघर्ष और दुख ने निराला की कविता में जिस तीखे व्यंग्य की अवतारणा की, वह अन्य किसी भी छायावादी कवि में नहीं मिलती। यों तो 'परिमल' तथा 'अनामिका' की कुछ रचनाओं में भी व्यंग्य के दर्शन होते हैं, किन्तु 'कुकुरमुत्ता' तथा 'अपरा' रचनाओं की कविताओं के व्यंग्य प्रखर तथा निर्मम हैं। 'कुकुरमुत्ता' सर्वहारा वर्ग का प्रतीक है और गुलाब शोषक का–

'अबे सुन बे, गुलाब .....

खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,

डाल पर इतरा रहा कै पिटलिस्त।'

'निराला' की व्यंग्य दृष्टि का पैनापन (महंग महंगा रहा' कविता से मालूम पड़ता है। जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व का नपे–तुले शब्दों में इतना सही अंकन कहां मिलेगा–

'लेडी जमीदारों को आखों तले रखे हुए,

मिलों के मुनाफा खाने वालों के अभिन्न मित्र,

देश के किसानों मजदूरों के भी अपने सगे।'

आर्थिक एवं सामाजिक विषमताओं के निरंतर प्रहारों ने 'निराला' की कविता को व्यंग्य एवं करूण बना दिया है। समाज की आर्थिक व्यवस्था से क्षुब्ध निराला का जो पितृ–हृदय अपने समाज की परम्परा के विरूद्ध निर्भय होकर विद्रोह करता है। पुत्री की अकाल मृत्यु पर विद्रोह का उनका वही साहस टूट कर बिखर जाता है। हार कर वह जमाने की रफ्तार के प्रति व्यंग्य करता हुआ कहता है :-

'जमाने की रफ्तार में कैसा तूफाँ

मरे जा रहे हैं, जिये जा रहे हैं।

खुला भेद विजयी कहाये हुये जो

लहू दूसरों का पिये जा रहे हैं।'

2.4.4 प्रगतवादी स्वर :-

Notes

निराला जी छायावादी तथा रहस्यवादी कवि होने के साथ-साथ प्रगतिवादी भी हैं। अपने युग से एक कदम आगे रहने की यही प्रवृत्ति निराला को छायावाद के अन्य कवियों से भिन्न दर्शाती है। नयी भाषा-शैली का सबसे सुन्दर रूप और पूंजीवाद का विरोध इनकी रचनाओं में मिलता है। निम्न वर्ग के दैनिक जीवन के कार्यकलापों का सुन्दर चित्रण 'वह तोड़ती पत्थर' और 'भिक्षुक' कविताओं में देखा जा सकता है। जरा भिक्षुक को तो देखिए -

'वह आता -

दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता

पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक

चल रहा लकुटिया टेक,

मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को,

मुंह फटी पुरानी झोली को फैलाता।'

निराला का 'भिक्षुक' मात्र एक पात्र ही नहीं, बल्कि वह पूरे आर्थिक परिवेश से उपजा हुआ एक चरित्र भी है जो कि समस्त सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था पर चोट करता है। यही स्थिति भारतीय विधवा की भी है। देखिए भारतीय विधवा का यह रूप -

'वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा सी,

वही दीप-शिखा सी शान्त भाव में लीन

वह क्रूर काल-ताण्डव की स्मृति-रेखा-सी,

वह टूटे तरु की छटी लता सी दीन,

दलित भारत की ही विधवा है।'

निराला लौह, पुरूष थे। आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक किसी प्रकार की बाधाएँ उनके मजबूत कन्धों को झुका नहीं पायीं। वो आजीवन एकाकी समस्त समाज से जूझते रहे। भारतीय समाज में कृषकों की दीन-हीन दलित अवस्था से क्षुब्ध निराला भारतीयों के हीनत्व भावों को

Notes

उखाड़ फेंक, उन्हें चरम विश्वास से भर देना चाहते हैं। वे अपने सम्पूर्ण पौरुष को जन-जन में भर देना चाहते हैं। तभी तो 'अपरा' की जागो फिर एक बार कविता में कहते हैं –

'है नश्वर यह दीन भाव,
कायरता, कामपरता,
ब्रह्म् हो तुम,
पदरज भर भी है नहीं
पूरा यह विश्व भार –
जागो फिर एक बार।'

2.4.5 प्रकृति चित्रण :–

निराला जी छायावादी होने के साथ-साथ रहस्यवादी भी हैं। ये प्रकृति को रहस्यवादी और अद्वैतवादी दृष्टिकोण से देखते हैं। 'जुही की कली' में प्रकृति के प्रति इनके ये दोनों दृष्टिकोण विकसित रूप में देखे जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त जब ये प्रकृति में चेतन सत्ता का अनुभव करने लगते हैं, तब प्रकृति उन्हें एक सुन्दर स्त्री के रूप में दिखाई देने लगती है। इसी प्रसंग में 'सन्ध्या सुन्दरी का शान्त और स्तब्ध रूप देखिए –

'दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
यह संध्या-सुन्दरी परी-सी
धीरे धीरे धीरे।'

निराला जी ने प्रकृति के अनेक कोमल और रौद्र रूपों को चित्रित किया है और बार-बार मानवीकरण (नारीकरण) किया है। 'तुलसीदास' नामक काव्य में उन्होंने प्रकृति के माध्यम से चित्त का उदात्तीकरण कराया है। सागर, सरिता, निर्झर तथा जल प्रवाह की ध्वन्यात्मक व्यंजना निरालाजी की कविताओं में बहुत है। 'बादल राग', 'अलि घिर आये घन पावस के', 'प्रपात के प्रति आदि कवितायें इस दृष्टि से सफल हैं। निराला की ऋतु संबंधी कविताओं में सर्वाधिक कविताएँ वर्षा ऋतु उन्हें बार-बार आकर्षित करती है। कालिदास के मेघदूत के बाद निराला ही मेघों पर अनुपम काव्य रचना में समर्थ हुए। बावजूद इसके निराला सुख, समृद्धि और उल्लास के लिए बसन्त

का ही चुनाव करते हैं। वर्षा के बाद उनके काव्य संसार में सबसे अधिक चित्रण बसन्त का ही हुआ है। वासन्ती अनुभूति कवि को सुख और सौन्दर्य की अनुभूति से भर देती है –

Notes

'अभी न होगा मेरा अन्त।
अभी अभी ही तो आया है
मेरे वन में मृदुल वसन्त–
अभी न होगा मेरा अन्त।'

बसन्त में कवि के भीतर की भाव–भूमि का यह वन जब यौवन से भर जाता है तब कवि का अन्तर उल्लसित हो उठता है। बाहर–भीतर, भीतर–बाहर वही नवता, वही उत्साह और उल्लास है, प्रणय–समीरण है और इससे बनता है निराला कवि का का रचना संसार। बसन्त के आते ही कवि मुग्ध होकर गीता गा उठता है –

'सखि बसन्त आया।
किसलय वसना नव–वय लतिका
मिली मधुर प्रिय–उर तरु–पतिका।'

2.4.6 सौन्दर्य बोध :–

निराला का सौंदर्य बोध और काव्यबोध रस सम्मत है। उनके रस सौंदर्य में अनुभूति का सौंदर्य है। ये अनुभूतियाँ कल्पना, बिंब आदि में परिणत होकर भी एक स्वानुभूतिमूलक सहज रस का, आस्वाद कराती हैं। वस्तुत: छायावादियों की कल्पनाएँ कवि–कौतुक या बौद्धिक चमत्कार मात्र न होकर अंतस् से फूटी विवशकारिणी भाववृत्ति जैसी प्रतीत होती हैं। निम्नलिखित पंक्तियाँ उनकी रस–सौंदर्य स्निग्ध काव्यानुभूति का उत्कृष्ट उदाहरण है –

'किसलय वसना नव वय लतिका
मिली मधुर प्रिय–उर–तरू–पतिका।'

निराला का सौन्दर्य बोध इतना सूक्ष्म है कि उसकी मात्र अन्त: प्रतीति ही संभव है। कवि ने प्रकृति को मानवी की भांति विकसित होते हुए देखा है –

'मूक आह्वान भरे लालसी कपोलों के

Notes

व्याकुल विकास पर

झरते हैं शिशिर से चुम्बन गगन के।'

यहां कपोलों को जिस प्रकार आह्वानयुक्त, लालसापूर्ण एवं भावाकुलतापूर्वक उल्लसित–विकसित होते चित्रित किया गया है और उन पर अंकित होने वाले चुम्बन को जिस प्रकार आकाश से झर–झर झरते शिशिर कणों के रूप में दर्शाया है वह सौन्दर्यबोध का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने अपनी संचित सौन्दर्यानुभूति द्वारा विविध रूपों, भावों और दृश्यों की मानसी प्रतिमा स्थापित की ही, साथ ही उसका साक्षात्कार कराया है, वह अवलोकनीय है :–

'नयनों का नयनों से गोपन, प्रिय संभाषण

पालकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान, पतन।

काँपते हुए किसलय, झरते पराग समुदय।'

राम और सीता पारस्परिक साक्षात्कार के क्षणों में जब अकस्मात् एक दूसरे पर दृष्टि विक्षेप करते हैं तो सुकुमारी सीता के नेत्र स्त्री–सुलभ शील संकोच के कारण मुँदकर आत्मगोपन करने लगते हैं।

2.5 संरचना शिल्प :–

निराला की भाषा शुद्ध खड़ी बोली है, जो संस्कृत के तत्सम शब्दों से पूर्णत: सम्पन्न है। इनकी भाषा पर बंगला भाषा की छापे दिखलाई पड़ती है। भाषा की क्लिष्टता के कारण कविता दुरूह और दुर्बोध हो गयी है। भाव–गाम्भीर्य के कारण निराला की भाषा विशेष बोझिल सी हो गयी है। बंगला शब्दों के साथ–साथ निरालाजी के काव्य में उर्दू, फारसी और विदेशी शब्दों के भी प्रयोग मिलते हैं। निराला की मुख्य शैली मुक्तक गीति शैली है। 'तुलसीदास राम की शक्तिपूजा' आदि निराला की कथात्मक शैली के नमूने हैं। ध्वन्यात्मकता भी प्राय: इनकी कविताओं में देखने को मिल जाती है। यथा–

'रात घूर्णावर्त, तरंग–भंग उठते पहाड़,

जल–राशि राशि–जल पर चढ़ता खाता पछाड़।''

प्रकृति का मानवीकरण करते हुए निराला ने विराट बिम्बों की योजना की है –

'गिरिवर उरोज, सदि पयोधर

पृथ्वी के उठे उरोज मंजु पर्वत निरूपम।'

Notes

राम की शक्ति पूजा कविता में शब्द वैभव, लय और छंद का जो अनुशासन इस कविता में देखने को मिलता है, साथ ही राम चरित्र पर नव्य प्रयोग जिस शिल्प संयोजन के माध्यम से निराला ने किया है वह अद्वितीय है। 'पंचवटी–प्रसंग' मुक्त छंद में प्रवाहपूर्ण नाट्यकला का एक प्रयोग है। प्रवाहमय संवादों के लिए निराला मुक्त छंद को ही सर्वाधिक उपयुक्त मानते हैं। वाचस्पति पाठक ने लिखा है– ''लय, ताल, तुक और पद–योजना के जितने प्रयोग अपने गीतों में निराला ने किए हैं, उतने किसी अन्य कवि ने नहीं।''

2.6 काव्य वाचन और सन्दर्भ सहित व्याख्या :–

यहाँ हम आपको काव्य पाठ के लिये जयशंकर प्रसाद की दो कविताएँ 'बादल–राग' और संन्ध्या–सुन्दरी' दे रहे हैं। हम आपको इनमें से कुछ अंश लेकर व्याख्या करना भी सिखायेंगे। कुछ अंशों की व्याख्या आप करेंगे।

बादल राग

तिरती है समीर सागर पर

अस्थिर सुख पर दुख की छाया–

जग के दग्ध हृदय पर

निर्दय विप्लव की प्लावित माया–

यह तेरी रण–तरी,

भरी आकांक्षाओं से,

घन, भेरी–गर्जन से सजग, सुप्त अंकुर

उर में पृथ्वी के, आशाओं से

नव जीवन की ऊंचा कर सिर

ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल।

फिर फिर।

Notes

बार–बार गर्जन,

वर्षण है मूसलधार

हृदय थाम लेता संसार,

सुन–सुन घोर वज्र–हुंकार।

सन्ध्या सुन्दरी

दिवसावसान का समय,

मेघमय आसमान से उतर रही है

वह सन्ध्या–सुन्दरी परी–सी

धीरे धीरे धीरे।

तिमिराञ्चल में चञ्चलता का नहीं कहीं आभास,

मधुर–मधुर हैं दोनों उसके अधर–

किन्तु जरा गम्भीर, – नहीं है उनमें हास–विलास।

हंसता है तो केवल तारा एक

गुँथा हुआ उन घुंघराले काले काले बालों से

हृदयराज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।

अलसता की – सी लता

किन्तु कोमलता की वह कली

सखी नीरवता के कन्धे पर डाले बांह,

छाँह–सी अम्बर–पथ से चली।

नहीं बजती उसके हाथों में कोई वीणा,

नहीं होता कोई अनुराग–राग–आलाप

नूपुरों में भी रुनझुन नहीं

काव्यांशों की व्याख्या :-

Notes

अंश (1)

बार-बार गर्जन,

वर्षण है मूसलधार

हृदय थाम लेता संसार

सुन-सुन घोर वज्र हुंकार।

संकेत- बार-बार ..... वज्र हुंकार।

संदर्भ- प्रस्तुत काव्यांश 'अपरा' में संकलित एवं छायावादी कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित 'बादल राग' शीर्षक कविता से अवतरित है।

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि बादल को सम्बोधित करते हुए कह रहा है -

व्याख्या- हे विप्लव के बादल ! तुम्हारी भीषण गर्जना को बार-बार सुनकर और वर्षा ऋतु में मुसलाधार वर्षा को देखकर सम्पूर्ण संसार भय और आशंकाओं से अपने हृदय को थाम लेता है। तुम्हारी वज्र की कड़क-सी विद्युत की गड़गड़ाहट को सुनकर यह विश्व आशान्वित भी होता है।

काव्य सौन्दर्य- (1) प्रस्तुत पंक्तियों में बादल का मानवीकरण तथा नाद-सौन्दर्य बड़ा ही सुन्दर वन पड़ा है। (2) बादल का भीषण रूप भी आनन्द और सुख की कल्पना से युक्त है।

अंश (2)

दिवसावसान का समय,

मेघमय आसमान से उतर रही है

वह सन्ध्या सुन्दरी परी-सी

धीरे-धीरे-धीरे।

तिमिराञ्चल में चञ्चलता का नहीं कहीं आभास,

मधुर-मधुर हैं दोनों उसके अधर-

Notes

किन्तु जरा गम्भीर, नहीं–है उनमें हास–विलास।

हँसता है तो केवल तारा एक

गुंथा हुआ उन घुंघराले काले बालों से

हृदयराज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।

संकेत– दिवसावसान का समय ..... अभिषेक।

सन्दर्भ– प्रस्तुत पद्यांश 'अपरा' में संकलित 'सन्ध्या सुन्दरी' शीर्षक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता छायावादी कवि महाप्राण निराला हैं।

प्रसंग– कवि सन्ध्या का सुन्दरी के रूप में वर्णन करते हुए कहता है कि दिन की समाप्ति का समय है। आकाश बादलों से घिरा है और उस मेघमय आसमान में धीरे–धीरे परी के समान सन्ध्या–सुन्दरी उतर रही है।

व्याख्या– कवि कहता है कि सन्ध्या सुन्दरी के अन्धकार–रूपी आँचल में कहीं भी चंचलता का आभास नहीं होता। उसके दोनों होठ मधुर–मधुर हैं, किन्तु वे तनिक गम्भीर हैं, हंसी–खुशी का उनमें निशान भी नहीं है। सन्ध्या समय में वातावरण शान्त तथा गम्भीर रहता है। अन्धकार आता हुआ होता है। सन्ध्या–सुन्दरी के अन्धकार–रूपी काले घुंघराले बालों में गुंथा हुआ केवल एक तारा है (अभी आकाश में केवल एक तारा निकला है) जो हंसता प्रतीत होता है। वही तारा अपने हृदय राज्य की रानी संध्या का अभिषेक करता है।

काव्य–सौन्दर्य :– (1) छायावादी कविता, सन्ध्या को सुन्दरी नायिका का रूप दिया गया है। (2) मानवीकरण अलंकार, खड़ी बोली, श्रृंगार रस।

शेष अंशों की व्याख्या स्वयं करें।

2.7 सारांश :–

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि निराला अपने युग की काव्य–परम्परा के प्रति प्रबल विद्रोह का भाव लेकर काव्य रचना करने वाले विशिष्ट कवि हैं। उनके भाव पूरी स्वच्छन्दता के साथ उभरते हैं और उनकी कलय का पैनापन एक साफ–सुथरे व्यंग्य का सृजन करता है। उनका प्रकृति–चित्रण हो या सौन्दर्य निरूपण– दोनों ही ओज तथा धरातलीय कठोरता के साथ हुए हैं। इन्होंने तत्कालीन काव्य–परम्परा पर आधारित छन्द

एवं बिम्ब-विधान की उपेक्षा करके स्वच्छन्द एवं छन्दमुक्त कविताओं की रचनाएँ प्रारम्भ कीं और नवीन बिम्ब-विधान एवं काव्य-चित्रों को प्रस्तुत किया। निराला के बारे में डॉ. रामप्रसाद मिश्र ने अपनी पुस्तक 'प्रसाद, निराला और पंत' में लिखा है- ''निराला का विश्वकवि-रूप इतना विराट् एवं इतना सशक्त, इतना मौलिक एवं इतना युगांतरकारी है कि अपने समग्र में भी प्रसाद कुछ ही आगे लग पाते हैं, पंत तक कुछ पिछड़ जाते हैं तथा महादेवी एवं अज्ञेय उनके समकक्ष नहीं सिद्ध हो पाते।''

Notes

2.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें :-

(1) प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ : सं. वाचस्पति पाठक; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद। सन् 1969 ई.

(2) अपरा : निराला; भारती भण्डारकर, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सन् 1965

(3) प्रसाद, पंत और निराला : अधुनातन आकलन : डॉ. रामप्रसाद मिश्र; दिनमान प्रकाशन 3014, बल्लीमारान, दिल्ली-110006, सन् 1990

(4) हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास : गणपति चन्द्रगुप्त; लोकभारती प्रकाशन 15-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-1, सन् 1989 ई.

(5) राग विराग : सं. डॉ. रामविलाश शर्मा; लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, सन् 1985 ई

(6) हिन्दी साहित्य का विवेचनपरक इतिहास : डॉ. मोहन अवस्थी, वाणी प्रकाशन 21 ए दरियागंज नई दिल्ली, सन् 2008

(7) छायावाद पुनर्मूल्यांकन : श्री सुमित्रानंदन पंत; लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1965 ई.

2.9 बोध प्रश्न और उनके उत्तर :-

प्र.1- निराला जी ने भारतमाता को किस रूप में स्वीकार किया है ?

उत्तर : निराला ने भारतमाता को सर्वशुक्ला सरस्वती के रूप में प्रस्तुत किया है।

प्र.2- 'भिक्षुक' कवि को कैसा दिखाई देता है ?

उत्तर : जैसे स्वयं दीनता ही दुर्बल शरीर धारण करके बैठी हो।

प्र.3- निराला का बचपन का नाम बताइए।

Notes

उत्तर : सूर्यकुमार।

प्र.4– निराला के पिता पं. रामसहाय त्रिपाठी मूलत: कहां के निवासी थे ?

उत्तर : निराला के पिता मूलत: उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिला स्थित गढ़ाकोला गांव के निवासी थे।

प्र.5– 'सरोज स्मृति' किस कवि की रचना है ?

उत्तर : निराला की।

प्र.6– सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की सर्वप्रथम रचना कौन–सी मानी जाती है ?

उत्तर : जूही की कली।

प्र.7– 'सरोज स्मृति' किस कोटि का काव्य है ?

उत्तर : शोक–गीत काव्य।

प्र.8– 'राग–विराग' किसकी रचना है ?

उत्तर : निराला की।

प्र.9– मुक्त छंद किसे कहते हैं ? उसकी विशेषताएँ बताइये।

उत्तर : मुक्त छन्द उस छन्द को कहते हैं जो पिंगल शास्त्र के नियमों के सारे बंधनों से मुक्त हो। यह मात्राओं और अक्षरों की गिनती पर निर्भर नहीं करता है। इसका कोई भी चरण कितना भी लम्बा हो सकता है। चरणों में केवल धारा प्रवाह हो, लय हो। निराला इसके प्रवर्तक हैं। इनकी 'जूही की कली' मुक्त छन्द में लिखी गई हिन्दी की पहली कविता है। मुक्त छन्द में तुक का भी बन्धन नहीं है।

प्र.10– 'कुकुरमुत्ता' किस वर्ग का प्रतीक है ?

उत्तर : सर्वहारा वर्ग का।

प्र.11. कवि ने 'सन्ध्या सुन्दरी' कविता में सन्ध्या को किस रूप में दर्शाया है ?

उत्तर : सुन्दर परी के रूप में।

इकाई–03 : महादेवी वर्मा

Notes

इकाई की रूपरेखा :–

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 पृष्ठभूमि

3.3 जीवन परिचय एवं कृतित्व

3.4 महादेवी वर्मा के काव्य की अंतर्वस्तु

3.4.1 स्वानुभूति

3.4.2 विरह वेदना का वर्णन

3.4.3 संवेदनशीलता

3.4.4 आध्यात्मिक दर्शन एवं रहस्यवाद

3.4.5 प्रकृति चित्रण

3.5 संरचना शिल्प (काव्य रूप, काव्य भाषा)

3.6 काव्य वाचन और सन्दर्भ सहित व्याख्या

3.7 सारांश

3.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.9 बोध प्रश्न और उनके उत्तर

Notes

3.0 उद्देश्य :–

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा के युग की पृष्ठभूमि एवं उनके जीवन और कृतित्व के बारे में जान सकेंगे,
- महादेवी वर्मा के काव्य की अंतर्वस्तु बता सकेंगे,
- महादेवी की कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे और
- कवयित्री की भाषा–शैली आदि की विशेषताओं को जानेंगे।

3.1 प्रस्तावना :–

इस इकाई में आप छायावादी कविता की प्रमुख स्तंभ करुणा की कवयित्री महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में अध्ययन करेंगे। सबसे पहले महादेवी वर्मा की युगीन पृष्ठभूमि पर चर्चा करेंगे। इसके बाद व्यक्तित्व और कृतित्व की चर्चा करते हुए उनकी काव्यगत प्रवृत्तियों पर नजर डालेंगे। महादेवी जी की कविता रहस्य, करूणा, वेदना, विरह और व्यस्टि में भी समष्टि की उद्भावना करने वाली कविता है। पन्त जी ने इन्हें 'छायावाद के बसन्त वन की सबसे मधुर, भाव–मुखर पिकी' कहा है। संरचना शिल्प के अंतर्गत आप महादेवी जी की काव्य भाषा के वैविध्य के साथ ही शिल्प विधान की नवीनता पर भी दृष्टि डालेंगे।

अब महादेवी वर्मा के युग की पृष्ठभूमि देखें–

3.2 पृष्ठभूमि :–

पिछली इकाई में हमने छायावादी कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की पृष्ठभूमि ही महादेवी वर्मा की भी है। ज्ञान–विज्ञान और समाज की नई चुनौतियाँ स्वीकार करके अपने स्वाध्याय एवं चिन्तन–मनन के सहारे प्रसाद, निराला, महादेवी सरीखे रचनाकारों ने काव्य को अधिक उर्वरा बनाया। इन्हीं रचनाकारों की भांति महादेवी जी ने भी छायावाद को एक नया आयाम दिया।

3.3 जीवन परिचय एवं कृतित्व :-

Notes

वेदना की साकार मूर्ति श्रीमती महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई. (सं. 1964 वि.) को फर्रूखाबाद में हुआ था। इनके पिता श्री गोविन्द प्रसाद वर्मा और माता हेमरानी देवी दोनों ही शिक्षा के अनन्य प्रेमी थे। पिता भागलपुर में हेडमास्टर थे। शिक्षा और साहित्य-प्रेम महादेवी जी को एक तरह से विरासत में मिला था। इनके नाना स्वयं ब्रजभाषा में अच्छी कविताएं लिखते थे। महादेवी जी का बचपन इसी साहित्यिक वातावरण में बीता। छठे दर्जे तक की शिक्षा इन्दौर में हुई और घर पर ही चित्रकला और संगीत की शिक्षा प्राप्त की। कुल नौ वर्ष की आयु में ही उनका विवाह (सन् 1916) डॉ. स्वरूपनारायण वर्मा के साथ हो गया। कुछ साधारण-सी बाधाओं के पश्चात् उनकी पढ़ाई चालू रही और 1933 ई. में उन्होंने संस्कृत विषय लेकर एम.ए. की परीक्षा, प्रयाग विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इसके पश्चात प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्रिंसिपल हो गई। इन्होंने साहित्य संसद नामक संस्था की स्थापना की और इसके माध्यम से हिन्दी लेखकों की सहायता का प्रशंसनीय कार्य किया। इन्हें 'नीरजा' पर 500 रूपये का 'सेरुसरिया पुरस्कार' तथा 'यामा' पर 1200 रूपये का 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' प्राप्त हुआ था। भारत सरकार ने इन्हें पद्म भूषण अलंकरण से अलंकृत किया था। सन् 1987 ई. में इनका परलोकवास हो गया।

महादेवीजी ने गद्य और पद्य दोनों में श्रेष्ठ रचनाएँ की हैं। इनका प्रथम कविता संग्रह 'नीहार' है। भाषा-सौष्ठव और संगीत के माधुर्य के कारण इस संग्रह के गीतों ने अत्यन्त ख्याति प्राप्त की।

कृतित्व :-

महादेवी वर्मा की प्रकाशित काव्य रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

नीहार	(1930 ई.)
रश्मि	(1932 ई.)
नीरजा	(1935 ई.)
सांध्यगीत	(1936 ई.)
सन्धिनी	
दीपशिखा	(1942 ई.)
यामा	(1940 ई.)
सप्तपर्णा	(1960 ई.)

Notes

निबन्ध संग्रह :- अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएं, श्रृंखला की कड़ियाँ, क्षणदा, पथ के साथी, साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध।

सम्पादित ग्रन्थ :- हिमालय

आलोचनात्मक ग्रन्थ :- हिन्दी का विवेचनात्मक गद्य।

3.4 महादेवी वर्मा के काव्य की अंतर्वस्तु :-

महादेवी वर्मा करुण रस की अमर गायिका हैं। यद्यपि उन्होंने प्रारम्भ में सामाजिक तथा राष्ट्रीय कविताएँ भी लिखी थीं, तथापि उनकी प्रतिभा यहीं तक सीमित न रह सकी। बाद की रचनाओं में आपने अपने दार्शनिक विचार, हृदय की वेदना तथा प्रेम को ही अपने काव्य का विषय बनाया है। इसीलिए ये रचनाएँ कल्पना प्रधान तथा करुण रस से पूर्ण हैं। इनकी रचनाओं में असारता, शून्यता, रहस्यवाद तथा आत्म निवेदन प्रमुख है। महादेवी जी की कविताओं में अव्यक्त ईश्वर के प्रति प्रेम, विरह, आत्म समर्पण की भावना, प्रकृति के मनोरम दृश्यों का चित्रण तथा अद्वैतवादी सिद्धान्तों का वर्णन मुख्य है।

यहाँ हम महादेवीजी की कविता की प्रवृत्तियों की विवेचना शीर्षक सहित करेंगे।

3.4.1 स्वानुभूति :-

महादेवी जी का वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहा। विवाह के कुछ समय बाद ही हुए अलगाव और जीवन-जगत् के कटु अनुभवों के कारण उन्हें वैवाहिक जीवन से वैराग्य हो गया। अपने परिवेश और समाज से अर्जित गुणों, संवेदनाओं को उन्होंने अपने गीतों में पिरोया। प्रायः उनकी कविताएँ पढ़कर उनके वैयक्तिक जीवन को जानने की उत्सुकता बढ़ती है। उन्होंने इस विराट युग की विविधमुखी जीवन परिस्थितियों से केवल वेदना को ही अपनी अन्तः संगिनी चुना-

'टूट गया वह दर्पण निर्मम।'

डॉ. नगेन्द्र लिखते हैं- ''महादेवी ने अज्ञात प्रियतम के प्रति प्रणय-निवेदन किया है, किन्तु उनका प्रणय दुःख प्रधान है। वे प्रिय से मिलन की कामना नहीं करतीं क्योंकि मिलन में तो व्यक्तित्व का ही नाश हो जाता है-

------- 'मिलन का मत नाम लो मैं विरह में चिर हूँ।'

महादेवी का दु:खवाद निराशा या अकर्मण्यता का व्यंजक नहीं है, उनकी वेदना की तुलना प्रसाद के 'आँसू' काव्य के अन्त में दिखाई देने वाली करूणा की अनुभूति से की जा सकती है। महादेवी ने दु:ख को केवल व्यक्तिगत जीवन के सन्दर्भ में स्वीकार किया है, सामाजिक जीवन के प्रसंग में तो वे अथक और अमर साधना में विश्वास करती है। उन्हें, अमरत्व। के लोक की कामना नहीं है वे तो मिटने के अधिकार को ही बनाए रखना चाहती है। अपनी पीड़ा का वर्णन उन्होंने इन शब्दों में किया है– 'अभरता उसमें मनाती है मरण त्योहार।' उनका दु:खवाद किसी सीमा तक समाज कल्याण की भावना में सम्पृक्त है।'' महादेवी की कविता में व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों प्रकार की अनुभूति एक साथ दिखाई देती है–

'कितनी बीती पतझारें, कितने मधु के दिन आये।

मेरी मधुमय पीड़ा को, पर कोई ढूँढ़ न पाये।।'

3.4.2 विरह–वेदना का वर्णन :–

महादेवी के काव्य में विरह, वेदना और करुणा के भावों की प्रधानता है। ये भाव एक–दूसरे के इतने सम्पूरक हैं कि उन्हें अलग नहीं किया जा सकता। जहां इनमें से एक होगा, वहाँ दूसरा अपने आप आ जायेगा। करूणा महादेवी को संसार के दु:ख पर आती है। विरह की भावना उसकी अपने प्रिय के प्रति है। महादेवी जी ने सारा जीवन विरह की ज्वाला में झुलसते ही बिताया। उन्हें मिलन की अपेक्षा यह विरह प्रिय था। उन्होंने अपने इस मानवीय, स्थूल एवं लौकिक विरह को उदात्तरूप देकर आत्मा और परमात्मा का वियोग निरूपित किया। उन्होंने स्वयं अपने गीत में मिलन की अपेक्षा विरह के प्रति अपनी रुचि प्रकट की है –

'शलभ मैं शापमय वर हूँ, किसी का दीप निष्ठुर हूँ

शून्य मेरा जन्म था,

विश्वास है, मुझको सबेरा,

प्राण आकुल के लिए,

साथी मिला केवल अंधेरा।

मिलन का मत नाम ले मैं विरह में चिर हूँ।'

Notes

Notes

महादेवी के समस्त काव्य में वेदना की धारा बहती है। यह वेदना भाव दुर्लभ प्रतीत होता है। बहुत से विद्वानों ने महादेवी के विरह-भाव को समझाने का प्रयत्न किया है, किन्तु इसकी दुर्बोधता द्रोपदी के चीर की तरह बढ़ती ही गई है, किसी को इसका अन्त नहीं मिला। महादेवी का वेदना भाव कभी उनके लौकिक जीवन से सम्बन्धित जान पड़ता है और कभी यह परमात्मा के वियोग में आत्मा की वेदना प्रतीत होती है –

'मेरी मधुमय पीड़ा को कोई पर ढूँढ़ न पाया
पा लिया मैंने जिसे इस वेदना के मधुर क्रम में
गई वह अधरों की मुस्कान, मुझे मधुमय पीड़ा में बीर।

उपर्युक्त पंक्तियों में जहाँ भी वेदना या पीड़ा का उल्लेख हुआ है, वहाँ उसके साथ मधुर, विशेषण का प्रयोग भी सर्वत्र हुआ है। जैसे मधुर पीड़ा, वेदना के मधुर क्रम आदि। साधारण वेदना या पीड़ा मधुमय नहीं होती, जो मधुमय होता है, उसे वेदना या पीड़ा न कहकर सुख और प्रसन्नता का नाम देना अधिक उचित है। किन्तु एक अनुभूति ऐसी भी होती है, जिसमें एक ओर सुख, हृदय में भ्रमित आल्हाद होता है तो दूसरी ओर अत्यधिक पीड़ा। उस मीठी और तीखी अनुभूति को प्रेम या प्रणय की संज्ञा दी जाती है।

3.4.3 संवेदनशीलता :–

महादेवी जी ही छायावादियों में एकमात्र वह चिरन्तन भावयौवना कवयित्री हैं जिन्होंने नये युग के परिप्रेक्ष्य में राग-तत्व के गूढ़ संवेदन तथा रागमूल्य को अधिक मर्मस्पर्शी, गम्भीर, अन्तर्मुखी, तीव्र संवेदनात्मक अभिव्यक्ति दी है, जिसका कारण उनका नारी व्यक्तित्व है। उनकी अभिव्यक्ति का क्षेत्र सीमित एवं भाव-संस्कार-जनित सूक्ष्मता का द्योतक होने के कारण उसमें अन्तः सलिला ध ाारा का-सा प्रच्छन्न प्रवेग तथा भाव संवेदन की निगूढ़ गहराइयां मिलती हैं। उनकी अभिव्यक्ति मीरा की सी सीधी या निराला की सी शक्ति प्रेरित न होकर, प्रतीकों-बिम्बों के सौन्दर्यगुण्ठन से अप्रत्यक्ष कटाक्ष करती है, प्रसाद ने भावनाओं का निरपेक्ष रूप से सूक्ष्म विवेचन तथा मूर्तीकरण किया, महादेवी ने भावना के संवेदनों का सूक्ष्म विश्लेषण तथा उनके सुख-दुःखमय और अधिकतर दुःखमय स्पर्शो के देश का चित्रण किया है। महादेवी का काव्य मुख्यतः भाव संवेदना प्रधान है।

'अलि मैं कण-कण को जान चली
सबका क्रन्दन पहचान चली।'

संवेदना का करूणा से गहरा संबंध है। किसी को दु:ख में देखकर हृदय पिघल जाता है अश्रुपात होने लगता हैं, किन्तु यहां कवयित्री सशरीर पिघलने का चाह रखती है –

Notes

मैं नीर भरी दु:ख की बदली

परिचय इतना इतिहास यही

उमड़ी कल थी मिट आज चली।'

3.4.4 आध्यात्मिक दर्शन एवं रहस्यवाद :–

महादेवी जी ने अपने काव्य में अध्यात्म और रहस्यवाद के क्षेत्र में अपनी अनोखी प्रतिभा का परिचय दिया है। उन्होंने अपने काव्य में रहस्यात्मक भावनाएँ प्रकृति के माध्यम से प्रस्तुत की है। महादेवी जी के काव्य में आत्मा का परमात्मा के प्रति प्रणय निवेदन है। कवि की आत्मा मानों इस विषय में बिछुड़ी हुई प्रेयसी की भांति अपने प्रियतम का स्मरण करती है। उसकी दृष्टि से विश्व की सम्पूर्ण प्राकृतिक शोभा–सुषमा एक अनन्त अलौकिक चिर सुन्दर छायामात्र है। इस प्रतिबिम्ब जगत को देखकर कवि का हृदय उसके सलोने बिम्ब के लिए ललक उठा है। मीरा ने जिस प्रकार उस परम पुरुष की उपासना सगुण रूप में की थी, उसी प्रकार महादेवी ने अपनी भावनाओं में उसकी आराधना निर्गुण रूप में की है। अपने कोमल हृदय में पीड़ा का मधुर राग भरते हुए प्रियतम से पूछती है –

कौन तुम मेरे हृदय में ?

कौन मेरी कसक में नित

मधुरता भरता अलक्षित ?

कौन प्यासे लोचनों में

घुमड़ घिर झरता अपरिचित ?

कवयित्री ने यत्रतत्र मध्ययुगीन रहस्यवादी अभिव्यक्ति के प्रभावों को ग्रहण कर उन्हें छायावादी युग के अनुरूप नये प्रतीकों एवं बिम्बों में ढालकर अदृश्य–मूल्य के प्रति अपनी खोज, उसके अभाव की पीड़ा और आगे चलकर उसके भीतर से एक नयी आस्था, आशा तथा अपने ध्येय की विजय को वाणी दी है। उन्होंने अत्यन्त गूढ़ और गुह्य भी समझे जाने वाले राग–संवेदन या प्रेम संवेदन को अपनी काव्य–वस्तु के लिए चुना। उन्होंने अज्ञात प्रियतम की बात कही है, उसके

Notes

लिए उनके प्राणें में व्यथा भी मचली है, उसका स्वप्न-दर्शन या स्पर्श भी उन्हें कभी मिला है, और बीच में वह स्पर्श खो भी गया है, पर यह अज्ञात प्रियतम तो वह प्रेम-मूल्य या राग मूल्य है, जिसे उन्होंने निवृत्ति के आनन्द से मण्डित न कर, प्रवृत्ति की पीड़ा के माध्यम से व्यक्त किया है, जो उनके युग का आग्रह था। महादेवी जी ने आत्मा-परमात्मा से मिलन, विरह, मान, अभिसार, श्रृंगार आदि का चित्रण किया है। असीम की एकता और दूरी का भाव भरा पद्य देखिए -

बीन भी हूँ मैं, तुम्हारी रागिनी भी हूँ।

नयन में जिनके प्रलय वह तृषित चातक हूँ।

शलभ जिसके प्राण से वह निठुर दीपक हूँ।

दूर तुमसे हूँ अखण्ड सुहागिनी भी हूँ।'

महादेवी जी का रहस्यावाद मीरा, कबीर आदि की तरह साधनात्मक न होकर भावात्मक है। वस्तुत: वे अपनी रहस्यवादी भावनाओं और मधुर गीतों के कारण आधुनिक साहित्य की मीरा कहलाती हैं।

3.4.5 प्रकृति चित्रण :-

महादेवी जी ने प्रकृति का चित्रण अनेक रूपों में किया है, किन्तु स्वतन्त्र रूप से उसका वर्णन नहीं किया है। उनके प्रकृति-चित्रण में छायावाद और रहस्यवाद की ही प्रधानता है। अत: इनके काव्यों में आत्मा-परमात्मा का मिलन, वियोग तथा प्रकृति के व्यापारों की छाया स्पष्टत: दृष्टिगोचर होती है। किन्तु अन्य कवियों की भाँति इन्होंने प्रकृति में उल्लास का अनुभव न कर वेदना का अनुभव किया है। जैसे -

'अपनी जब करुण कहानी कह जाता है मलयानिल।

आंसू से भर जाता तब, सूखा अवनी का अंचल।'

उन्होंने प्रकृति में विराट सत्ता का चित्रण एवं व्यक्तिगत सत्ता की छाया का भी चित्रण किया है। प्रकृति में मानवीय क्रियाओं का चित्रण करते हुए वे कहती हैं -

'हँस देता जब प्रात सुनहरे, अंचल में बिखरा रोली।

लहरों की बिछलन पर जब, मचली पड़तीं किरणें भोली।'

महादेवी वर्मा की प्रकृति–वर्णन से सम्बन्धित कविताओं में भी विरह, करुणा और वेदना का ही भाव दृष्टिगोचर होता है। आषाढ़ मास में आकाश में घिरने वाले नये बादल फिर से वियोगिनी महादेवी को प्रिय का कोई सन्देश लेकर आये जान पड़ते हैं।

Notes

वे बादल से पूछती हैं –

'सुख – दु:ख से भर
आया यह उर।
मोती से उजले जल कण से,
छाये मेरे विस्मित लोचन।
लाये कौन सन्देश गये घन।'

3.5 संरचना शिल्प :–

महादेवी वर्मा के काव्य की अंतर्वस्तु के साथ–साथ संरचना–शिल्प भी अत्यन्त सबल है। उनकी प्रारम्भिक रचनाएँ ब्रज–भाषा और बाद की खड़ी बोली में हैं, जो शुद्ध साहित्यिक और मधुर हैं। इनकी भाषा में नैन, बैन, बयार आदि तद्भव शब्द भी स्वाभाविक ढंग से प्रयुक्त हुए हैं। शब्द चयन सुन्दर, भावानुकूल एवं काव्योचित है। महादेवी जी का काव्य गीत काव्य है। इसमें उन्होंने दो मुख्य शैलियों–चित्र शैली और प्रगति शैली को अपनाया है। चित्र शैली में उन्होंने संध्या या रात्रि के वातावरण का चित्रण किया है या विरह की अभिव्यक्ति की है। महादेवी वर्मा की शैली में चित्रात्मकता के साथ–साथ ध्वन्यात्मकता है। सरलता सरसता विशेषकर है –

'नव कुन्द–कुसुम से मेघ–पुँज,
बन गए इन्द्रधनुषी वितान।'

महादेवी का काव्य भाव और अनुभूति–प्रधान है। इसलिए उन्होंने विषय के अनुकूल वियोग श्रृंगार शान्त और करूण रसों का व्यापक प्रयोग किया है। शब्दों पर उनका अद्भुत अधि ाकार है। वे उन्हें पंक्तियों के सूत्र में पिरोकर कुछ ऐसे ढंग से प्रस्तुत करती हैं कि उनकी मौक्तिक आभा एवं संगीतात्मक गूंज सहज ही पाठक को आकर्षित कर लेती है। इतना अवश्य है कि उनके प्रतीकों, रूपकों एवं उपमानों की गहराई तक पहुंच पाने के लिए आस्तिकता, आध्यात्मिकता एवं अद्वैत दर्शन की एक डुबकी सदा अपेक्षित होती है।

Notes

3.6 काव्य वाचन और सन्दर्भ सहित व्याख्या :-

यहाँ हम आपको काव्य पाठ के लिये महादेवी वर्मा की दो कविताएँ ' चिर सजग आंखें उनींदी ' और ' मैं नीर भरी दु:ख की बदली ' दे रहे हैं। हम आपको इनमें से कुछ अंश लेकर व्याख्या करना भी सिखायेंगे। कुछ अंशों की व्याख्या आप करेंगे।

'चिर सजग आँखें उनींदी'

चिर सजग आंखें उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना।
जाग तुझको दूर जाना।
अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कम्प हो ले,
या प्रलय के आंसुओं में मौन अलसित ब्योम रोले,
आज पी आलोक को डोले तिमिर की घोर छाया,
जाग या विद्युत-शिखाओं में निठुर तूफान बोले।
पर तुझे है नाश-पथ पर चिन्ह अपने छोड़ आना।
जाग तुझको दूर जाना।
बाँध लेंगे क्या तुझे ये मोम के बन्धन सजीले ?
पन्थ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले ?
विश्व का क्रन्दन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन,
क्या डुबा देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले ?
तू न अपनी छांह को अपने लिए कारा बनाना।
जाग तुझको दूर जाना।
वज्र का उर एक छोटे अश्रुकण में धो गलाया,
दे किसे जीवन-सुधा दो घूँट मदिरा माँग लाया ?
सो गयी आंधी मलय की बात का उपधान ले क्या ?
विश्व का अभिशाप क्या चिर नींद बनकर पास आया ?

अमरता-सुत चाहता क्यों मृत्यु को उर में बसाना ?

जाग तुझको दूर जाना।

कह न ठण्डी साँस ले अब भुल वह जलती कहानीं।

आग हो उर में तभी दृग में सजेगा आज पानी,

हार भी तेरी बनेगी मानिनी जय की पताका,

राख क्षणिक पतंग की है अमर दीपक की निशानी।

है तुझे अंगार-शय्या पर मृदुल कलियाँ बिछान्त।

जाग तुझको दूर जाना।

'मैं नीरभरी दुख की बदली'

मैं नीरभरी दुख की बदली।

स्पन्दन में चिर निस्पन्द बसा,

क्रन्दन में आहत विश्व हंसा,

नयनों में दीपक से जलते

पलकों में निर्झरिणी मचली।

मेरा पग पग संगीत भरा

श्वासों से स्वप्न-पराग झरा,

नभ के नव रंग बुनते दुकूल

छाया में मलय-बयार पली।

मैं क्षितिज-भ्रकुटि पर घिर धूमिल,

चिन्ता का भार बनी अविरल,

रज कण पर जल-कण हो बरसी

नव जीवन-अंकुर बन निकली।

पथ को न मलिन करता आना

पद-चिन्ह न दे जाता जाना,

Notes

सुधि मेरे आगम की जग में

सुख की सिहरन हो अन्त खिली।

विस्तृत नभ का कोई कोना,

मेरा न कभी अपना होना,

परिचय इतना इतिहास यही

उमड़ी कल थी मिट आज चली।

काव्यांशों की व्याख्या :-

अंश (1)

चिर सजग आंखें उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना।

जाग तुझको दूर जाना।

अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कम्प होले,

पर तुझे है नाश पथ पर न्हि अपने छोड़ आना।

जाग तुझको दूर जाना।

संकेत- चिर सजग ..... तुझको दूर जाना।

संदर्भ- प्रस्तुत गीत 'यामा' काव्य-संग्रह में संकलित एवं महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'चिर सजग आंखें उनींदी' शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग- श्रीमती महादेवी वर्मा अपने साधना-पथ में तनिक भी आलस्य नहीं आने देना चाहतीं, अत: वे अपने प्राणों को सम्बोधित करते हुए कहती हैं -

व्याख्या- हे प्राण ! निरन्तर जागरूक रहने वाली आंखें आज आलस्युक्त क्यों हैं और तुम्हारा वेश आज अस्त-व्यस्त क्यों है ? आज अलसाने का समय नहीं। आलस्य और प्रमाद को छोड़कर अब तुम जाग जाओ, क्योंकि तुम्हें बहुत दूर जाना है। तुम्हें अभी बहुत बड़ी साधना करनी है। चाहे आज स्थिर हिमालय कम्पित हो जाय या फिर आकाश से प्रलयकाल की वर्षा होने लगे अथवा घोर अन्धकार प्रकाश को निगल जाय और चाहे

चमकती और कड़कती हुई बिजली में से तूफान बोलने लगे तो भी तुम्हें उस विनाश–बेला में अपने चिन्हों को छोड़ते चलना है और साधना–पथ से विचलित नहीं होना है।

Notes

महादेवी जी पुनः अपने प्राणों को उद्वेलित करते हुए कहती हैं– हे प्राण ! तू अब जाग जा, क्यों तुझे बहुत दूर जाना है।

काव्य सौन्दर्य– (1) इन पंक्तियों में महादेवी जी सच्ची साधिका के रूप में हमारे सामने उपस्थित हैं। साधना के मार्ग में आने वाली विभिन्न बाधाओं का प्रतीकात्मक शब्दावली में उल्लेख किया गया है। (2) मानवीकरण अलंकार, ओज एवं प्रसाद गुण और लक्षणा शब्द है। वीर रस है।

अंश (2)

मैं नीर भरी दुख की बदली।

स्पन्दन में चिर निस्पन्द बसा

नभ के नव रंग बुनते दुकूल

छाया में मलय बयार पली।

संकेत– मैं नीर भरी ..... बयार पली।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश छायावाद की कवयित्री महादेवी वर्मा के 'यामा' काव्य–संग्रह की 'मैं नीरभरी दुख की बदली' कविता से अवतरित है।

प्रसंग– इस गीत में महादेवी जी ने अपनी आन्तरिक वेदनाओं को व्यक्त करते हुए अपना अत्यन्त ही मर्मस्पर्शी परिचय प्रस्तुत किया है। वे कहती हैं –

व्याख्या– मैं वह बादल हूँ, जिसमें दुःख के आंसुओं का जल भरा हुआ है। मेरे हृदय की धड़कन में चिर शाश्वत मौन छिपा हुआ है। मेरे रुदन में आहत संसार की सम्पूर्ण मुस्कान छिपी हुई है। मेरी आंखों में आशाओं के दीपक बराबर जला करते हैं, जबकि पलकों में वेदनाओं के आंसुओं की निर्झरिणी बहा करती है। मेरे जीवन–गति के पग–पग से आनन्द भरे सगीत मुखरित होते हैं और हमारी श्वासों से स्वप्नों की सुगन्ध आती है। मेरे मस्तिष्क–रूपी आकाश में कल्पना रूपी रेशमी वस्त्र नित्य नये–नये रूप में बुने जाते हैं। मेरी छाया में

Notes

मलयज वायु पला करती है।

काव्य–सौन्दर्य– (1) इस गीत में महादेवी वर्मा ने करूणा और पीड़ा की आत्माभिव्यक्ति को बड़ी ही मार्मिकता और संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है।

(2) बादल का मानवीकरण हुआ है। आशावादी दृष्टिकोण है।

इसी प्रकार शेष अंशों की व्याख्या स्वयं करें।

3.7 सारांश :–

जब हम महादेवी जी के काव्य का अध्ययन करते हैं तो इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि महादेवी जी ने अपने काव्य में क्षण–भंगुर तथा नाशवान मानव हृदय की अमर पीड़ा को वाणी देने का प्रयास किया है। यथार्थ की अमर पीड़ा को वाणी देने का प्रयास किया है। यथार्थ में करूणा महादेवीजी की चिरसंगिनी है जो चहुँ ओर से प्रत्येक क्षण महादेवीजी को आच्छादित किये रहती है। मीरा के बाद महादेवी हिन्दी साहित्य में करूणा की स्रोतस्विनी हैं। कवि और चित्रकार का ऐसा मेल हिन्दी साहित्य में और कहीं नहीं है। गीतों के अपने निजी प्रयोग उन्हें पंत, निराला और प्रसाद से भी ऊपर ले जाते हैं। करुणा, विरह, वेदना, प्रकृति, रहस्य, आत्मा और परमात्मा की गहन अनुभूतियां जैसी उनके गीतों में हैं वैसी अन्यत्र नहीं। संस्कारित भाषा, बिम्ब, प्रतीक, उपमान, रस, छन्द, अलंकार और शब्द–योजना किसी शिल्पकार की उत्कृष्ण कला के समान आकर्षित करने वाली है। कविवर सुमित्रानंदन पंत ने कहा है कि ''यह उनके सूक्ष्म अन्तर्जगत् के चेतन, उपचेतन, सूक्ष्म–चेतन स्तरों में व्याप्त उस चिरन्तन भारतीय नारी, उस आने वाली विश्व–नारी का रूप है, उस अजेय–राम–तत्व की अन्तस्तप्त, स्वप्न–सौन्दर्य–भूषित, विरह, दम्ध, तपः शुभ्र, सूक्ष्म–सूक्ष्मतम परमाणुओं से निर्मित विराट् प्रतिभा का रूप है, जो विश्व की या सृष्टि की प्राणपीठिका पर अनादिकाल से प्रतिष्ठित हैं।''

3.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें :–

(1) छायावाद पुनर्मूल्यांकन : श्री सुमित्रानंदन पंत; लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद; सन् 1965 ई.

(2) प्रसाद, निराला, पन्त, महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ : वाचस्पति पाठक; लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1984 ई.

(3) हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. देवीशरण रस्तोगी; राजहंस प्रकाशन मन्दिर मेरठ, सन् 1967 ई.

(4) छायावाद की सही परख पहचान : डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित; साहित्य रत्नाकर; रामबाग, कानपुर, सन् 1991 ई.

(5) हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र; मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, सन् 2004 ई.

Notes

3.9 बोध प्रश्न और उनके उत्तर :–

प्र.1. 'यामा' किनकी रचना है ?

उत्तर : महादेवी वर्मा की।

प्र.2. 'आधुनिक युग की मीरा' किसको कहा जाता है ?

उत्तर : महादेवी वर्मा को।

प्र.3. विरह वेदना की कवयित्री कौन हैं ?

उत्तर : महादेवी वर्मा।

प्र.4. 'सन्धिनी' किसकी रचना है ?

उत्तर : महादेवी वर्मा की।

प्र.5. महादेवी जी को 'छायावाद के वसन्त वन की सबसे मधुर, भाव मुख पिकी' किसने कहा है ?

उत्तर : सुमित्रानंदन पंत ने।

प्र.6. महादेवी का जन्म कब व कहां हुआ था ?

उत्तर : सन् 1907 ई. को फर्रूखाबाद में।

Notes

प्र.7. महादेवी वर्मा ने किस संस्था की स्थापना की ?

उत्तर : साहित्य संसद की।

प्र.8. महादेवी वर्मा को किस रचना पर 'मंगलाप्रसाद पारितोषित' प्राप्त हुआ था ?

उत्तर : 'यामा' काव्य संग्रह पर।

प्र.9. छायावाद का दूसरा नाम बताइए।

उत्तर : चित्रभाषावाद।

प्र.10. छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह क्यों कहा जाता है ?

उत्तर : छायावादी कवि यथार्थ की कठोर भूमि को छोड़कर भावुकता, यथार्थ के स्थान पर वायनीय कल्पना एवं स्थूल के स्थान पर सूक्ष्म की ओर उन्मुख हुए। इसलिए डॉ. नगेन्द्र ने छायावाद को 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह कहा है।

इकाई–4 (क) सुमित्रानन्दन पन्त :–

इकाई की रूपरेखा :–

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 पृष्ठभूमि

4.3 जीवन परिचय एवं कृतित्व

4.4 सुमित्रानंदन पंत के काव्य की अंतर्वस्तु

4.4.1 कोमल कल्पनाओं की प्रमुखता

4.4.2 नव रहस्यवाद और नवमानवतावाद

4.4.3 प्रगतिवादी युग–चेतना

4.4.4 चित्रणशक्ति (चित्रात्मकता)

4.4.5 प्रकृति–चित्रण

4.5 संरचना शिल्प (काव्य रूप, काव्य भाषा)

4.6 काव्य वाचन और संदर्भ सहित व्याख्या

4.7 सारांश

4.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.9 बोध प्रश्न और उनके उत्तर

4.0 उद्देश्य :–

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- छायावादी कवि सुमित्रानन्दन पन्त के युग की पृष्ठभूमि और उनके जीवन तथा कृतित्व के बारे में जान सकेंगे,
- पन्तजी के काव्य की अंतर्वस्त बता सकेंगे,
- पन्तजी की कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे और
- कविवर पन्त की भाषा–शैली आदि की विशेषताओं को जान सकेंगे।

Notes

4.1 प्रस्तावना :-

इस इकाई में आप छायावादी कविता के अन्यतम स्तंभ और 'प्रकृति के सुकुमार कवि' सुमित्रानंदन पंत के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में अध्ययन करेंगे। जयशंकर प्रसाद और निराला ने जिस छायावाद के मूल को सींचकर दृढ़ और सशक्त बनाया, पंत जी ने उसे अपनी रचनाधर्मिता से पल्लवित-पुष्पित करके विशला वटवृक्ष बना दिया। महादेवी वर्मा ने 'पथ के साथी' में लिखा है, ''सुमित्रानन्दन जी हिमालय के पुत्र हैं पर उन्हें देखकर न उन्नत हिम-शिखरों का स्मरण आता है और न ऊँचे चिर सजग प्रहरी जैसे देवदारु याद आते हैं। न सभीत करने वाले गहरे गर्त की ओर ध्यान जाता है और न उच्छृंखल गर्जन भरे निर्झर स्मृति में उदित होते हैं। वे उस प्रशान्त छोटी झील से समानता रखते हैं जो अपने चारों ओर खड़े शिखरों और देवदारुओंकी गगन-चुम्बी ऊँचाई को अपने हृदय में प्रतिबिम्बित कर उसे धरती के बराबर कर देती है, गहरे गर्तों को अपने जल से सम कर देती है और उच्छृंखल निर्झर के पैरों तले तरल आंचल बिछाकर उसे गिरने, चोट खाने से बचा लेती है।''

पंत जी के काव्य की अंतर्वस्तु में आप उनकी भाषा, शब्द-योजना, शिल्प आदि की नवीनता और विविधता को जानेंगे।

आइए, अब पंतजी की युगीन पृष्ठभूमि का अवलोकन करें।

4.2 पृष्ठभूमि :-

पिछली इकाइयों में हमने छायावादी कवियों, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा को प्राप्त जिस राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि की चर्चा विस्तार से की थी- लगभग वही पृष्ठभूमि सुमित्रानंदन पंत की भी है। ये चारो कवि समवय और एक जैसी विचारधारा के हैं। इन चारों ने जन साधारण में अपने स्वर्णिम अतीत के प्रति आस्था जाग्रत करने, उन्हें एकता के सूत्र में बाँधने और समकालीन राजनीतिक व्यवस्था से ऊपर उठकर उच्चतर मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करने हेतु प्रकृति को अपना विषय बनाकर राष्ट्रीय चेतना के साथ ही विश्व दृष्टि का परिविस्तार किया और इस प्रकार एक व्यापक धरातल पर अपने काव्यान्दोलन का मंगलारम्भ किया। इनमें से पंत की कविता तो पूर्णत: प्रकृति के ही रंग में रची-बसी है।

4.3 जीवन परिचय एवं कृतित्व :-

सुमित्रानंदन पंत का जन्म उत्तराखण्ड के जिला अल्मोड़ा स्थित कौसानी नामक स्थान में 20 मई, सन् 1900 ई. में हुआ था। जन्म के कुछ घण्टों के बाद ही इनकी मां सरस्वती देवी का निध न हो गया और बालक पन्त का लालन-पालन उनकी फूफी की देख-रेख में हुआ। पिता पं. गंगादत्त पन्त जमींदार थे और कौसानी राज्य में कोषाध्यक्ष का काम करते थे।पन्तजी के बचपन का

नाम गुसाईंदत्त था। कौसानी पाठशाला में विद्यारम्भ करके अल्मोड़े के स्कूल में आने पर गुसाईंदत्त ने अपना नाम बदलकर सुमित्रानंदन पन्त रख लिया। इसके बाद काशी के जय नारायण हाईस्कूल से स्कूल लीविंग की परीक्षा पास करके ये उच्चतर शिक्षा के लिए सन् 1919 में प्रयाग चले आये। प्रयाग में उन्होंने म्योर सेन्ट्रल कालेज में प्रवेश लिया और अपने बड़े भाई के साथ हिन्दू हास्टल में रहने लगे। सन् 1921 में गांधी जी की प्रेरणा से असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होकर इन्होंने पढ़ाई छोड़ दी। अनेक वर्षों तक आप आकाशवाणी में उच्च पद पर आसीन रहे। अविवाहित रहकर आपने अपना सम्पूर्ण जीवन मां भारती के चरणों में समर्पित कर दिया। पन्त जी को 'कला और बूढ़ा चांद' पर साहित्य अकादमी 'लोकायतन' पर सोवियत लैंड नेहरू और 'चिदम्बरा' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुए। भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया। मां भारती का यह अद्‌भुत चितेरा 21 दिसम्बर 1977 को सदैव के लिए विदा हो गया।

Notes

पंत जी ने छठवीं कक्षा में पढ़ते समय ही 'हार' नामक एक लघु उपन्यास की रचना कर डाली। सन् 1919 में 'ग्रन्थि' नामक खंडकाव्य की रचना की। इनका पहला काव्य–संग्रह 'पल्लव' सन् 1925 में इंडियन प्रेस प्रयाग ने प्रकाशित किया।

कृतित्व :–

सुमित्रानंदन पंत की रचनाएँ निम्नलिखित हैं :–

उच्छ्वास	(सन् 1920)
वीणा	(सन् 1927)
ग्रन्थि	(सन् 1920)
पल्लव	(सन् 1928)
गुंजन	(सन् 1932)
युगान्त	(सन् 1934)
युगवाणी	(सन् 1936)
ग्राम्या	(सन् 1940)
स्वर्णधूलि	(सन् 1947)
स्वर्णकिरण	(सन् 1947)
युगपथ	
उत्तरा	(सन् 1949)
अतिमा	(सन् 1955)

Notes

वाणी

कला और बूढ़ा चांद (सन् 1959)

किरण–वाणी

पौ फटने से पहले

गीतहंस

लोकायतन (सन् 1964)

मधुज्वाल

युगान्तर (सन् 1948)

चुनी हुई कविताओं के संकलन :– पल्लविनी, रश्मिबंध, आधुनिक कवि, चिदम्बरा, हरिबांसुरी, सुनहरी टेर, तारापथ।

काव्य रूपक :– ज्योत्सना, रजतशिखर (1951 ई.), शिल्प और दर्शन (निबंध, भाषण और वार्ताएं), छायावाद; पुनर्मूल्यांकन ( ), कला और संस्कृति

काव्यात्मक जीवन चरित्र :– मैं और मेरा जीवन

4.4 सुमित्रानंदन पंत के काव्य की अंतर्वस्तु :–

छायावादी कवियों में सुमित्रानंदन पंत का व्यक्तित्व सतत जागरूक, कला सचेष्ट, नव दिशान्वेषी तथा गतिशील है। पंत की सबसे बड़ी विशेषता है युग–बोध। जहाँ उनकी कला एक दिशा में चरमसीमा पर पहुंचती है, वहीं वह किसी दूसरी दिशा की ओर संकेत कर देते हैं। पंत मूलत: सौंदर्य और प्रकृति के कवि हैं, लेकिन उनके काव्य में सौंदर्य के आलंबन बदलते रहे हैं। प्रकृति के प्रति जिज्ञासा और विस्मय का भाव, अमांसल मानवीय सौंदर्य, कल्पना, मानवीयता, रहस्य, युग–बोध ा और कर्म चेतना का स्वर उनकी कविताओं में प्राय: दिखाई देता है।

यहां हम पंत की विभिन्न पहलुओं पर लिखी हुई कविताओं का मूल्यांकन करेंगे।

4.4.1 कोमल कल्पनाओं की प्रमुखता :–

पन्तजी कोमलतम कल्पनाओं के कवि कहे जाते हैं क्योंकि उनके काव्य का प्रमुख तत्व कोमलता है, कठोरता, वीभत्सता का दर्शन हमें उनके काव्य में नहीं होता है। सर्वत्र सुकुमार भावना एवं कोमल कल्पनाओं के दर्शन होते हैं। पन्त जी की यह कोमलतम् भावना उनके सम्पूर्ण काव्य में छिपी हुई है। वीणा, पल्लव और गुंजन में वह एक शिशु की कोमल दृष्टि से सम्पूर्ण सृष्टि का दर्शन करते हैं। उनकी कोमलतम् भावनाओं ने काव्य कला के बाहरी रूप को भी मधुर बना दिया है, इसी

कारण भाषा में लालित्य आ गया है, कवि पूछता है –

Notes

प्रथम रश्मि का आना रंगिणि

तने कैसे पहचाना ?

कहाँ–कहाँ हे बाल विहंगिनि

पाया तूने यह गाना ?

पन्तजी में कोमलता का भाव इतना प्रबल है कि वह कोमलता का निर्वाह करने के लिए सम्पूर्ण सृष्टि को ही 'नारी नयन' देखने लगते हैं। एक जगह पर तो कवि स्वयं नारी बनने लगता है। इसका कारण यह है कि नारी विधाता की सुन्दरतम् कृति है, नारी का हृदय सदैव कोमल भावनाओं से आपूरित रहता है। इसी कारण उनकी कविता में मार्दव और कोमलता अत्यधिक है। पन्तजी सर्वत्र कोमलकान्त पदावली का प्रयोग करते हैं, उनके शब्द इस प्रकार होते हैं कि जो एक दूसरे से बन कर झंकार उत्पन्न करते हैं, देखिए–

'नीरव तार हृदय में

गूंज रहे हैं मंजुल लय में

अनिल पुलक से अरुणोदय में

चरण कमल में अर्पण कर मन

रज रञ्जित कर मन

मधु रस मञ्जिल कर भ्रम जीवन

चरणामृत आशय में।'

पंत जी की रचनाओं में इतनी कोमलता, इतनी लावण्यता और इतनी मसृणता है कि पाठक की दृष्टि और वाणी सहज ही उन पर से फिसीलती हुई भाव–गर्त में समा जाती है। उनकी भावना और कल्पना का सुन्दर समन्वय इन पंक्तियों में देखिए–

'अरुण अधरों की पल्लव प्राप्त मोतियों साहिलता हिमहास

इन्द्र धनुष पट से ढंग गात, बाल–विद्युत सा पावन लाय।'

4.4.2 नव रहस्यवाद और नवमानवतावाद :–

नव अध्यात्मवाद या नव रहस्यवाद वह बौद्धिक–रहस्यवाद है जो उपनिषदमूलक होने के कारण प्राचीनतम भी है तथा अरविन्द के भूमि स्वर्गीकरणवाद एवं जुंग (युंग) के मनोवैज्ञानिक–

Notes

अध्यात्मवाद प्रभृति से विकसित होने के कारण नवीनतम भी। रहस्य चिरंतन है। किंतु नवरहस्यवाद में वह अस्मिता–सापेक्ष हो गया है, समाज–सापेक्ष हो गया है। व्यास का 'न मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्' का घोष नवरहस्यवाद का बीजमंत्र माना जा सकता है। पंत ने औपनिषदिक अद्वैतवाद एवं उसकी अरविन्द–प्रतिपादित व्याख्या, वात्स्यायन एवं उनसे प्रेति फ्रायड के कामवाद, एडलर के अहंवाद, चिरगतिश्याील भारतीय अध्यात्म–चिंतन एवं उससे प्रेरित जुंग (युंग) के अध्यात्मवाद इत्यादि को समन्वित कर हिन्दी कविता में नवरहस्यवाद के प्रवर्तक का गौरव प्राप्त किया है। नवरहस्यवाद निवृत्तिप्रधान नहीं प्रवृत्ति प्रधान है। वह अलौकिक पर आश्रित नहीं है, लौकिक को ही अलौकिक का गौरव प्रदान करता है। वह मोक्ष पर नहीं जीवन पर रीझता है। वह न तो धर्मविरोध ी है, न धर्मबद्ध। पंत प्रत्येक दृष्टि से नव रहस्यवाद के निकष पर सफल सिद्ध होते हैं। दो उदाहरण प्रस्तुत हैं :–

1. ताक रहे हो गगन ? मृत्यु नीलिका गहन गगन ?
   नि: स्पंद शून्य, निर्जन, नि:स्वन ?
   देखो भू को, स्वर्गिक भू को।
   मानव पुण्य प्रसू को। (पर्या लोचन : 'आधुनिक कवि')

2. आकाश झुक रहा धरती पर
   बरसा प्रकाश के उर्वर कण,
   धरती उसके उर में बुनती
   छाया का सतरंग सम्मोहन। (उत्तरा)

पंत आरंभ से ही मानवतावादी रहे हैं। वस्तुत: स्वच्छंदतावाद सर्वत्र मानवतावाद से अनुप्राणित रहा है। नर–नारी, उच्च–निम्न, श्वेत–अश्वेत, विभिन्न धर्मानुयायियों के बीच एकता तथा वैश्विक स्वातंत्र्य प्रतिपादलन बड़े सवर्थ, कीट्स, शेली, बायरन, रवीन्द्र, प्रसाद, निराला, पंत सभी ने किया है। प्रसाद ने विशद समरसतावादी दर्शन प्रस्तुत किया, निराला ने अखण्ड समतावाद का उद्घोष किया पंत ने विशदतम नवमानव का चित्रण किया–

मैं नव मानवता का संदेश सुनाता

स्वाधीन लोक की गौरव गाथा गाता

पंत का मानवतावाद देवता या दानव के छोरों पर नहीं, मानव पर रीझा है। वह न कोरा दु:खवादी है, न कोरा सुखवादी : वह पूर्णतावादी है। उसका तप जड़ एवं प्रतिक्रियावादी नहीं प्रत्युत

संवेदनवादी है। वह शवपूजावादी नहीं, जीवनपूजावादी है। उसकी जीवन्तता विलक्षण है :-

Notes

'मैं नहीं चाहता चिर-सुख,

मैं नहीं चाहता चिर-दुख;

सुख-दुख की खेल मिचौनी

खोले जीवन अपना मुख।'

4.4.3 प्रगतिवादी युग चेतना :-

प्रगतिवाद का प्रभाव सबसे प्रथम निराला पर हुआ। निराला तो जन्मजात विद्रोही थे, पर स्वभाव से सुकोमल एवं प्रकृति प्रेमी पन्त से यह आशा किसी को नहीं थी कि मधुप कुमारि से स्वर्गिक गान सीखना छोड़कर घूरे पर से पन्नी बीतने दरिद्र-दीन बालकों की छवि उतारने लगेंगे। प्रगतिवाद का प्रभाव होते ही पन्त का ध्यान सर्वहारा वर्ग के असुन्दर एवं फूहड़ बिम्बो की ओर भी जाने लगा। चमार चौदस के रंग के साथ-साथ उन्हें धोबियों की होली ने भी कम आकर्षित नहीं किया -

'बज रहा ढोल धाधिन धातिन,

औ हुडुक घुड़कता ढिम ढिम ढिम,

मंजीर खनकते खिनं-खिन-खिन,

मदमस्त रजक होली का दिन।'

विचारों की परिवर्तनशीलता पन्तजी के काव्य की मुख्य विशेषता है। इनके काव्य का प्रारम्भ (सुन्दरम् के उद्देश्य को लेकर प्रारम्भ हुआ फिर धीरे-धीरे उसमें सत्यम् और शिवम् का भी समावेश हुआ। प्रारम्भ में कवि छायावाद की आकाशीय उड़ाने भरता था। फिर रहस्यवाद से गुजरते हुए कवि धरती पर उतर आया। प्रगतिवाद की मान्यता स्वीकारने में कोई आपत्ति नहीं हुई। सच पूछिये तो 'युगान्त' के साथ ही पन्त जी प्रगतिवाद के प्रवर्तक हो जाते हैं। गावों की दयनीय दशा देखकर उनका कवि हृदय क्षुब्ध है -

यह तो मानव लोक नहीं रे, यह है नरक अपरिचित।

यह भारत की ग्राम सभ्यता, संस्कृति से निर्वासित।'

पन्तजी का काव्य युग-चेतना का प्रतीक है। इनके काव्य में भौतिकवादी दर्शन, गांधीवाद और कार्ल मार्क्स का प्रभाव भी विद्यमान है, किन्तु मार्क्स का प्रभाव स्थायी नहीं रहता और

Notes

महर्षि अरविन्द से भेंट होने पर इनमें भारतीय अध्यात्म और पश्चात्य विज्ञान का अद्‌भुत समन्वय दिखलाई पड़ता है।

4.4.4 चित्रणशक्ति (चित्रात्मकता) :-

पन्त की चित्रण शक्ति बड़ी सजीव और आकर्षक है तथा इसमें पन्त की कल्पना-प्रखरता ने पूर्ण योगदान किया है। कवि अपनी कल्पना की सचेतना और प्रखरता के कारण अपनी अनुभूतियों को चित्र रूप देने में समर्थ हुआ है। पन्त की कृतियों में स्थिर और गत्यात्मक दोनों ही प्रकार के चित्र प्राप्त होते हैं।

'पल्लव' की प्रसिद्ध कविता 'भावी पत्नी के प्रति' में कवि ने नायक के अनेक स्थिर चित्र दिये हैं। यथा-

'आरे वह प्रथम मिलन अज्ञात।

विकम्पित उर मृदु पुलकितगात सशेकित ज्योत्सना सी चुपचाप।'

यहाँ जड़ित पन, जमित पलक दृगपात में ठिठकी हुई म्लानमुखी लज्जावती का रूप कितना प्रत्यक्ष है। कवि की प्रतिमा स्थिर चित्रों तक ही सीमित नहीं है। सौन्दर्य के अंकन में भी वे कुशल हैं। 'नौका विहार' का एक चित्र यहाँ पर उल्लेखनीय है -

मृदु मन्द मन्द मन्थर मन्थर,

लघु तरिणि हंसिनी-सी सुन्दर

भीतर रही खोल पालों के पार।'

इस प्रकार के चित्रों में चलचित्रों की-सी गति देखी जा सकती है। कवि पंत की इस चित्रात्मकता में ध्वन्यात्मक शब्दों, चित्रोपम विशेषणों और वर्ण परिज्ञान से बड़ी सहायता मिली है। चित्रमय विशेषणों के अतिरिक्त पन्त का रंगों का ज्ञान भी उनको चित्रात्मक शक्ति द्वारा सहायक हुआ है। 'आंसू' कविता में रंगों का मिश्रण देखिए -

'देखता हूँ जब पतला, इन्द्रधनुषी हलक,

घूँघट बादल का खोलती है कुमुद कला।'

4.4.5 प्रकृति चित्रण :-

प्रकृति आदिकाल से ही पुरुष की सहायिका रही है। जहाँ पुरूष है वहाँ प्रकृति है, जहां प्रकृति है वहां पुरूष है। प्रकृति और पुरूष का अन्योन्याश्रम सम्बन्ध है। प्रकृति की ममता भरी गोद

में बैठकर पुरुष जिस स्नेह और शान्ति का अनुभव करता है वह शान्ति अन्यत्र दुर्लभ है। पन्तजी ने प्रकृति का सम्बन्ध मानव जीवन से जोड़ा है और प्रकृति के भीषण स्वरूप में भी कोमलता के दर्शन किये हैं। हिमाद्रि के कठोर तथा ठोस पत्थर की शिलाओं के वर्णन में भी उन्हें चन्द्रमा की शीतलता प्राप्त होती है। पन्त जी दार्शनिक गुत्थियों में उलझकर भी प्रकृति का पल्ला पकड़े हुये हैं। अपनी 'मौन निमन्त्रण' कविता में उन्होंने लिखा है कि –

'स्तब्ध ज्योत्सना में सब संसार चकित रहता शिशुसा नादान,
विश्व के पलकों पर सुकुमार, विचरते हैं सब स्वप्न अजान,
न जाने नक्षत्रों से कौन, निमन्त्रण देता मुझको मौन।'

उद्दीपन के रूप में प्रकृति–चित्रण पन्त की अनेक रचनाओं में प्राप्त होता है। बसन्त की मादकता और वर्षा की शीतल फुहार उसे उद्दीप्त बना देती है। कोकिल उनकी वेदना की ओर भी तीव्रता प्रदान करती है। देखिये कितना मनोरम चित्रण है –

'काली कोकिल सुलगा उर में,
स्वरमयी वेदना का अंगार।'

प्रकृति के रहस्यात्मक रूप को भी पन्तजी ने देखा है। प्रकृति के अन्दर उन्होंने किसी अज्ञात सत्ता के दर्शन किए हैं। 'नौका विहार' में कवि का अत्यन्त दार्शनिक रूप उभर कर सामने आया है। गंगा का स्मरणीय चित्र उपस्थित करता हुआ कवि दार्शनिक हो जाता है। संसार में जीवन मरण का चक्र भी गंगा की धारा के समान है –

'शाश्वत है गति शाश्वत संगम,
हे जग जीवन के कर्णधार चिर जन्म मरण के आरपार,
शाश्वत जीवन नौका विहार।'

इस प्रकार पन्त के काव्य में प्रकृति के विविध रूपों की अभिव्यक्ति हुई है।

4.5 संरचना शिल्प :–

छायावाद के इस कवि के महत्व का बहुत कुछ श्रेय इसकी काव्य भाषा को ही है। पन्त में 'पल्लव' की भूमिका में भाषा के स्वरूप को पहचानते हुये ठीक ही लिखा है कि 'भाषा संसार का नादमय चित्र है और ध्वनिमय स्वरूप है – यह विश्व की हृत्तन्त्री की झंकार है, जिसके स्वर से वह अभिव्यक्ति पाता है।' पंत की अंतर्दृष्टि ने शब्दों के चयन में बड़ी ही सूक्ष्मता से काम लिया है। भाषा के ध्वन्यात्मक एवं चित्रात्मक गुण के साथ ही शब्द–संयोजन में भी पंत ने कुशलता प्राप्त की

Notes

है –

प्रिय प्रिय, विषाद यह अपना,

प्रिय 'प्रि अह्लाद यह अपना।

इसी प्रकार से कवि ने लहर, हिलोर, वीचि, भौंह, भ्रू भ्रकुटि आदि पर्यायवाची शब्दों के सूक्ष्म अन्तर और उसमें निहित भावों को कवि ने ठीक से पहचाना है। पन्त जी के प्रयोगों की यह व्यंजनाशक्ति कभी कभी इतनी विकसित हो जाती है कि एक ही शब्द समस्त वाक्य को अनुप्राषित करता है, यथा–

'तुम पूर्ण इकाई जीवन की

जिसमें असार भव शून्य लीन।

यहां पर अकेला 'इकाई' शब्द दोनों पंक्तियों की आत्मा स्वरूप है। भावुकता, लाक्षणिकता, मूर्तिमत्ता उनकी शैली की विशेषताएँ हैं। आपने सादृश्यमूलक अलंकारों का ही अधिक प्रयोग किया है। मात्रिक छन्दों, प्राकृतिक बिम्बों, माधुर्ययुक्त शब्दावली, संगीतात्मक गीति शैली के प्रयोग द्वारा पंत जी ने कवि होने के साथ–साथ एक श्रेष्ठ शब्द शिल्पी होने का भी गौरव प्राप्त किया है।

4.6 काव्य वाचन और संदर्भ सहित व्याख्या :–

यहाँ हम आपको काव्य पाठक के लिए सुमित्रानंदन पंत की दो कविताएँ 'परिवर्तन' और 'नौका विहार' के कुछ अंश दे रहे हैं। हम आपको इनमें से कुछ अंशों की व्याख्या करना भी सिखायेंगे। कुछ अंशों की व्याख्या आप करेंगे।

परिवर्तन (1)

कहाँ आज वह पूर्ण पुरातन, वह सुवर्ण का काल ?

भूतियों का दिगन्त छवि जाल,

ज्योति चुम्बित जगती का भाल ?

राशि–राशि विकसित वसुधा का वह यौवन विस्तार ?

स्वर्ग की सुषमा जब साभार

धरा पर करती थी अभिसार।

प्रसूनों के शाश्वत श्रृंगार,

'स्वर्ण भृंगों के गन्ध विहार'
गूँज उठतके थे बारम्बार
सृष्टि के प्रथमोद्‌गार।
नग्न सुन्दरता थी सुकुमार
ऋद्धि औ सिद्धि अपार।
आये विश्व का स्वर्ण स्वप्न संसृति का प्रथम प्रभात,
कहाँ वह सत्य वेद विख्यात ?
दुरित, दुख दैन्य न थे जब ज्ञात,
अपरिचित जरा-मरण भ्रू-पात।
नौका विहार
शान्त स्निग्ध ज्योत्सना उज्जवल
अपलक अनन्त नीख भूतल।
सैकत शय्या पर दुग्ध धवल, तन्वगी गंगा, ग्रीष्म विरल,
लेटी हैं श्रान्त, क्लान्त, निश्चल।
तापस बाला गंगा निर्मल, शशिमुख से दीपित मृदु करतल,
लहरे उर पर कोमल कुन्तल।
गोरे अंगों पर सिहर-सिहर, लहराता तार-तरल सुन्दर
चञ्चल अञ्चल सा नीलाम्बर।
साड़ी की सिकुड़न सी जिस पर, राशि की रेशमी विभा से भर
सिमटी है वर्तुल मृदुल लहर।

काव्यांशों की व्याख्या :-

अंश (1)

कहाँ आज वह पूर्ण पुरातन, वह सुवर्ण का काल ?
भूतियों का दिगन्त छवि जाल,

Notes

Notes

ज्योति चुम्बित जगती का भाल।

राशि–राशि विकसित वसुधा का वह यौवन विस्तार ?

स्वर्ग की सुषमा जब साभार

धरा पर करती थी अभिसार।

संकेत– कहाँ आज वह पूर्ण ..... अभिसार।

सन्दर्भ– प्रस्तुत अवतरण 'रश्मिबंध' काव्य संग्रह में संकलित एवं छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित 'परिवर्तन' कविता से अवतरित है।

प्रसंग– इन पंक्तियों में कवि ने परिवर्तन की निरन्तर गतिशीलता की ओर संकेत करते हुए बताया है कि समय के अनुसार किस प्रकार वैभव, समृद्धि, इतिहास और आनन्द आदि नष्ट हो जाते हैं।

व्याख्या– पंत जी ने देश के वैभव और समृद्धि से परिपूर्ण प्राचीन युग का स्मरण और वर्णन किया है। समृद्धि और वैभव से भरा हमारा यह प्राचीन युग, हमारे इतिहास का स्वर्णकाल, कहां विलीन हो गया ? उस समय चारों दिशाओं में ऐश्वर्य और समृद्धि व्याप्त थी। चारों ओर ज्ञान का आलोक छाया रहता था, भारत ज्ञान की ज्योति से जगमगाता रहता था। चारों ओर लहलहाती खेती और हरियाली के रूप में मानों धरती का यौवन विकसित होता रहता था। उस युग की सुषमा को देखकर ऐसा प्रतीत होता था, मानों स्वर्ण की सुन्दरता ही धरती का आभार स्वीकार कर प्रेम–क्रीड़ा करने के लिए धरती पर उतर आयी हो अर्थात धरती पर चारों ओर स्वर्ग का–सा सौन्दर्य, वैभव और आनन्द छाया रहता था।

विशेष– मानवीकरण अलंकार, ओजगुण, लक्षणा शब्द शक्ति, भयानक रस।

अंश (2)

शान्त स्निग्ध ज्योत्सना उज्ज्वल

अपलक अनन्त नीरव भूतल।

सैकत शय्या पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विरल, लेटी हैं श्रान्त, क्लान्त निश्चल।

संकेत– शान्त स्निग्ध ..... क्लान्त निश्चल।

सन्दर्भ– प्रस्तुत पंक्तियाँ 'रश्मिबंध' काव्य–संग्रह में संकलित एवं कविवर सुमित्रानन्दन पंत द्वारा रचित 'नौका विहार' कविता से अवतरित हैं।

व्याख्या– शान्त वातावरण है। स्वच्छ, निर्मल और कोमल चांदनी फैली हुई है। आकाश निर्निमेष तारों के रूप में पृथ्वी की नीरवता को देख रहा है। रेत की शय्या पर क्षीणकाय ग्रीष्म तपिता गंगा किसी थकी स्त्री की भांति लेटी हुई है।

Notes

काव्य सौन्दय :- (1) शब्द-सज्जा दर्शनीय है।

(2) चित्रात्मकता (3) गंगा का मानवीकरण (4) कोमलकान्त पदावली

(5) तत्समयुक्त भाषा (6) माधुर्य गुण

शेष अंशों की व्याख्या स्वयं करें।

4.7 सारांश

पंत जी बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न साहित्यकार थे। उन्होंने स्वयं छायावाद को ऐहिक जीवन की आकांक्षाओं, स्वप्नों एवं संवेदनाओं को अभिव्यक्ति देने वाला और स्वयं को चिरन्तन छायावादी कहा है। कवि पंत की कल्पनाएँ और प्राकृतिक बिम्ब बड़े मर्मस्पर्शी हैं। उनकी कविताओं में अद्‌भुत सरसता और माधुर्य भरा पड़ा है। रहस्य और मानवीयता का बोध करातीं उनकी कविताएँ नए युग की कल्पना करती हैं। ध्वन्यात्मक संगीत और भाव प्रवणता से परिपूर्ण उनके गीत सर्वथा नवीन और अनूठी मार्मिकता से युक्त हैं। उनकी रचनाधर्मिता उन्हें कवि होने के साथ-साथ विचारक और श्रेष्ठ शिल्पी की कोटि तक पहुँचाती है।

4.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें :-

(1) प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ : वाचस्पति पाठक; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1969 ई.

(2) छायावाद पुनर्मूल्यांकन : श्री सुमित्रानंदन पंत; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1965 ई.

(3) प्रसाद, निराला और पंत : अधुनातन आकलन : डॉ. राम प्रसाद मिश्र; दिनमान प्रकाशन, दिल्ली, सन् 1990 ई.

(4) पथ के साथी महादेवी वर्मा; लोकभारती प्रकाशन, सन् 2000 ई.

(5) रश्मिबंध : श्री सुमित्रानंदन पंत : राजकमल प्रकाशन दिल्ली, सन् 1997 ई.

(6) मुक्ति यज्ञ : सुमित्रानंदन पंत; लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, सन् 1978

Notes

4.9 बोध प्रश्न और उनके उत्तर :-

प्र.1. 'प्रकृति का सुकुमार कवि' किसे कहा गया है ?

उत्तर : कविवर सुमित्रानंदन पंत को।

प्र.2. 'रश्मिबंध का रचनाकाल, रचनाकार और विधा बताइए।

उत्तर : 'रश्मिबंध' काव्य संग्रह की रचना श्री पंत ने सन् 1958 में की।

प्र.3. पन्त जी का जन्म कब और कहां हुआ था ?

उत्तर : अल्मोड़ा जिला के कौसानी गांव में सन् 1900 ई. में।

प्र.4. पन्त का बचपन का क्या नाम था ?

उत्तर : गुसाईदत्त।

प्र.5. पन्त जी को 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार किस रचना पर मिला

उत्तर : 'कला और बूढ़ चांद' पर।

प्र.6. पंत जी को ज्ञानपीठ पुरस्कार किस रचना पर मिला ?

उत्तर : 'चिदम्बरा' पर

प्र.7. पन्त जी का प्रथम काव्य संग्रह कौन-सा था ?

उत्तर : पल्लव (सन् 1925 ई.)

प्र.8. 'मैं और मेरा जीवन' किसकी रचना है ?

उत्तर : सुमित्रानंदन पंत की।

प्र.9. 'परिवर्तन' कविता किस कवि की है ?

उत्तर : सुमित्रानंदन पंत की

प्र.10. पंत की शैली का परिचय दीजिए।

उत्तर : शैली की दृष्टि से भी पन्त जी का अपना विशिष्ट स्थान है। भावुकता, लाक्षणिकता, मूर्तिमत्ता उनकी शैली की विशेषताएँ हैं। कुछ अंग्रेजी कवियों की कविताओं का प्रभाव भी पन्त जी की शैली पर है।

इकाई– 4 (ख) माखनलाल चतुर्वेदी :–

Notes

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 पृष्ठभूमि

4.3 जीवन परिचय एवं कृतित्व

4.4 माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य की अंतर्वस्तु

4.4.1 विद्रोह का स्वर

4.4.2 राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना

4.4.3 प्रकृति चित्रण

4.4.4 सौन्दर्यदृष्टि

4.5 संरचना शिल्प (काव्य रूप, काव्य भाषा)

4.6 काव्य वाचन और संदर्भ सहित व्याख्या

4.7 सारांश

4.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.9 बोध प्रश्न और उनके उत्तर

Notes

4.0 उद्देश्य :-

इस काई को पढ़ने के बाद आप :

- छायावादी राष्ट्रीय - सांस्कृतिक धारा के प्रमुख कवि माखनलाल चतुर्वेदी के युग की पृष्ठभूमि एवं उनके जीवन और कृतित्व के बारे में जान सकेंगे;
- माखनलाल चतुर्वेदीजी की कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे और
- कवि की भाषा-शैली आदि की विशेषताओं को जान सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना :-

पिछली इकाइयों में आपने छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी के बारे में अध्ययन किया था इस इकाई में आप एक और छायावानी कवि माखनलाल चतुर्वेदी के बारे में पढ़ेंगे। पहले हम माखनलाल चतुर्वेदी की पृष्ठभूमि को देखेंगे। इसके बाद उनके जीवन परिचय और कृतित्व की जानकारी हासिल करेंगे।

अंतर्वस्तु में आप माखनलाल चतुर्वेदी की काव्यगत विशेषताओं के बारे में पढ़ेंगे। चतुर्वेदीजी की कविताओं का स्वर राष्ट्रीयता एवं सांस्कृतिक चेतना से सम्पृक्त है। उसमें संकीर्णता के स्थान पर संश्लिष्ट भावभूमि को दर्शाया गया है। संरचना-शिल्प के अंतर्गत उनके काव्यों के शिल्प, भाषा, बिंब, प्रतीक, उपमान योजना, छंद योजना आदि का सम्यक् विवेचन पढ़ेंगे।

अब आइए, माखनलाल चतुर्वेदी की युगीठ पृष्ठभूमि देखें।

4.2 पृष्ठभूमि :-

पिछली चार इकाइयों में हमने छायावादी कवियों प्रसाद, निराला, पन्त, महादेवी को प्राप्त जिस पृष्ठभूमि की चर्चा की थी- लगभग वही पृष्ठभूमि माखनलाल चतुर्वेदी की भी है। इनकी मूल चेतना एवं अभिव्यंजना शैली छायावादी काव्य के अनुरूप ही थी किन्तु माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर, नवीन और सोहनलाल द्विवेदी सरीखे कुछ कवियों का झुकाव वैयक्तिक विषयों के स्थान पर राष्ट्रीय स्वातन्त्रय एवं क्रान्ति की ओर हो गया जिससे इनके काव्य में देश-प्रेम, स्वातन्त्रय भावना एवं राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति प्रमुख रूप में हुई है। यह विचारधारा भारतेन्द्र युग से ही निरन्तर विकसित होती हुई इन कवियों में मुखर रूप से दिखाई देती है।

4.3 जीवन परिचय एवं कृतित्व :-

Notes

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म सन् 1889 ई. में मध्यप्रदेश में हुआ था। इनके पिता का नाम पं. नन्दलाल चतुर्वेदी था। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात इन्होंने घर पर ही संस्कृत, बंगला, गुजराती, अंग्रेजी आदि का अध्ययन किया। इन्होंने कुछ दिन अध्यापन कार्य भी किया। सन् 1913 ई. में ये सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'प्रभा' के सम्पादक नियुक्त हुए। श्री गणेश शंकर विद्यार्थी की प्रेरणा तथा साहचर्य के कारण वे राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेने लगे। इन्हें कई बार जेल यात्रा करनी पड़ी। पंडितजी सन् 1943 ई. में हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के अध्यक्ष हुए 80 वर्ष की अवस्था में 30 जनवरी, 1968 को इनका स्वर्गवास हो गया।

कृतित्व :-

चतुर्वेदी जी की प्रसिद्धि कवि रूप में ही अधिक है किन्तु इनके अतिरिक्त इन्होंने नाटक, कहानी, निबन्ध, संस्मरण भी लिखे हैं। ये पत्रकार और सिद्धहस्त सम्पादक भी थे। इनकी प्रकाशित काव्य रचनाएँ निम्नलिखित हैं -

हिम किरीटिनी	(सन् 1943 ई.)
हिम तरंगिनी	(सन् 1949 ई.)
माता	(सन् 1951 ई.)
युगचरण	(सन् 1956 ई.)
समर्पण	(सन् 1956 ई.)
वेणु लो गूँजे धरा	(सन् 1960 ई.)

भाषण संग्रह :- चिन्तक की लाचारी, आत्म दीक्षा

गद्य-काव्य :- साहित्य देवता

4.4 माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य की अंतर्वस्तु :-

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य की अंतर्वस्तु का क्षेत्र व्यापक है। इनके जीवन के अनुरूप इनके काव्य में भी राष्ट्रीयता की प्रवृत्ति प्रमुख है। साथ ही आध्यात्मिकता एवं रहस्यवाद की प्रवृत्ति भी उसमें दृष्टिगोचर होती है।

Notes

माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं का प्रवृत्यात्मक मूल्यांकन हम निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत करेंगे –

4.4.1 विद्रोह का स्वर :–

छायावाद के मूल में विद्रोही भावना थी। अपनी इसी स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति के कारण इन कवियों ने द्विवेदी युगीन काव्य के परम्पराबद्ध रूप के प्रति विद्रोह व्यक्त करके एक अभिनव काव्य रूप का प्रवर्तन किया तथा स्थूल बन्धनों को नकार कर अपनी सूक्ष्मतम अभिव्यक्ति की प्रतिस्थापना की। इसको बंगला तथा अंग्रेजी रोमांटिक काव्य से प्रभावित माना गया है। किन्तु सत्य यह है कि इन कवियों ने अपनी वैयक्तिक भावनाओं को व्यक्त करने के लिए एक नई पद्धति अपनाई जो छायावाद नाम से प्रसिद्ध हुई। समाजवादी विचारधारा और मार्क्सवादी विचारधारा के प्रभाव से छायावादी कवियों में सामाजिक जड़ता और बुराइयों से विद्रोह की भावना जाग्रत हुई। एक विद्रोह 'बच्चन' में प्रकट हुआ, दूसरा माखनलाल चतुर्वेदी और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जैसे कवियों में उभरा, जिसमें सड़े–गले समाज को विध्वस्त करने की लालसा है– 'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल–पुथल मच जाए।' यद्यपि सुमित्रानंदन पंत भी युगांत में 'गा कोकिल बरसा पावक कण, नष्ट भ्रष्ट हो जीर्ण पुरातन' कहकर यही विद्रोह प्रकट कर चुके थे, किंतु माखनलाल और नवीन जैसे कवियों का स्वर अधिक उग्र एवं विद्रोहात्मक है। उदाहरण के लिए माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'जवानी' में देखिए –

'द्वार बलि का खोल
चल, भूडोल कर दें,
एक हिम–गिरि एक सिर
का मोल कर दें,
मसल कर, अपने
इरादों–सी उठाकर,
दो हथेली हैं कि
पृथ्वी गोल कर दें ?'

4.4.2 राष्ट्रीय साँस्कृतिक चेतना :-

Notes

माखनलाल चतुर्वेदी का काव्य राष्ट्रीय साँस्कृतिक चेतना का काव्य है। राष्ट्रीय-साँस्कृतिक चेतना का मूल सम्बन्ध राष्ट्र की प्रेरक शक्ति राष्ट्रीयता से है, जो कि समष्टि भावना की सूचक है। यह एक अमूर्त भावना है, जो व्यक्ति पर आधारित है। देश के प्रति मंगल की कामना राष्ट्रीयता है। यह मूल अर्थ में आधुनिक है। इस युग के प्रायः प्रत्येक काव्य में राष्ट्र-प्रेम की प्रधानता है। इसकी परम्परा भारतेन्दु युग से आई, किन्तु व्यवस्थित प्रसार हुआ सन् 1885 ई. में राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के पश्चात चतुर्वेदी जी ने राष्ट्रीयता की भावना को ग्रहण करके देश सम्बन्धी अनेक गीतों की सृष्टि की जो हिन्दी कविता की अमूल्य निधि हैं। 'युग चरण' काव्य-संग्रह में संकलित 'पुष्प की अभिलाषा' में की राष्ट्रप्रेम की भावना दर्शनीय है -

'मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृ भूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक।'

चतुर्वेदी जी की कविता में राष्ट्रीयता के साथ-साथ त्याग, बलिदान, कर्तव्य भावना और समर्पण का भाव है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को स्वर देने वालों में इनका प्रमुख स्थान रहा है।

4.4.3 प्रकृति चित्रण :-

छायावादी कवियों में प्रकृति का मानवीकरण करने की प्रवृत्ति सक्रिय रूप में देखी जा सकती है। प्रकृति के स्पर्श से इनकी काव्य प्रतिभा प्रभावित हुई और भावोद्दीपन हेतु उसका चित्रण अपनी कविताओं में इन्होंने किया। चतुर्वेदी जी ने उषा को रवि का प्रजनन, क्षितिज की मेंहदी घुली गुलाल, किरणों की शिखरों पर सूखती साड़ियाँ, पर्वत पर विचरण करती बकरियाँ, (बिजुरी काजल आँज रही), तुनहली रेशम डोर, चांदी के बाड़े में चरती सोने की गाएं (वेणु लो गूंजे धरा) आदि कहा है। कवि ने प्रभात को कलरव पूर्ण पैंजन पहने, कुहरे की शाल ओड़े दिन के राज कुँवर' रूप में चित्रित किया है। चतुर्वेदी जी ने अंधेरी रात में टिमटिमाते हुए नक्षत्रों को नीलम के घर में जगमगाते फानूस (बिजुरी काजल ऑज रही) की संज्ञा दी है। उन्होंने चाँदनी को मक्खन की डली, चपल नर्तकी (बिजुरी काजल ऑज रही), दूध की ग्वालिन (वेणु जो गूंजे धरा), चन्दन की मृदुल फुहार, देशम डोर आदि की उत्प्रेक्षा में देकर अपना ज्योत्स्नानुराग व्यक्त किया है। 'पुष्प की अभिलाषा में पुष्प का मानवीकरण देखिए -

Notes

'चाह नहीं', मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,

चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,

चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ,

चाह नहीं देवों के सिर पर चढूँ भाग्य पर इठलाऊँ,

स्पष्टत: ये चित्र सराहनीय हैं। ऐसे चित्र कवि की प्रकृति परायणता और इनकी सौंदर्य-विधायिनी दृष्टि के साक्षी हैं।

4.4.4 सौंदर्य दृष्टि :-

छायावादी कवि बसंतकालीन युवा प्रकृति और भारतीय कुलवधू (रमणी) की रमणीयता से आकृष्ट हैं। यदा-कदा वन्य, ग्राम्य या आदिम प्राकृत सौन्दर्य का रूपांकन भी इन्होंने किया है। इनका इनका सौन्दर्यबोध नेत्रेन्द्रियों का विषय होकर भी अतीन्द्रिय है। समग्रत: कहा जा सकता है कि छायावादी रूप-सौन्दर्य के तीन स्तर हैं- 1. कैशोर भावुकता, वायवीयता और अभिजात्य से प्रेरित सौन्दर्य, 2. प्रगतिवादी आन्दोलन से प्रभावित स्थूल देह-बोध एवं सर्वहारा का अपरूप सौन्दर्य, 3. प्राणी-मुखी नव्य सौन्दर्य-बोध। इन कवियों ने मानव-देह को देवी-मन्दिर की भांति समलंकृत किया है। इसलिए इनका सौंदर्यबोध असाधारण है। चतुर्वेदी जी सुन्दरता से अधिक सत्य के पुजारी हैं (चिन्तन की लाचारी)। वे सौंदर्य के नाम पर नारी के प्रति व्यक्त होने वाले अपरिपक्व तरुण आवेग से असहमत हैं और नारी के मात्र श्रृंगारिणी (अमीर इरादे : गरीब इरादे) न बनने के प्रेरक रहे हैं। प्रेम और सौन्दर्य की परिपक्वता का एक नमूना उनकी 'तुम मिले' कविता में देखा जा सकता है -

'भूलती-सी जवानी नई है उठी,

भूलती-सी कहानी नई हो उठी,

जिस दिवस प्राण में नेह-बंसी बजी,

बालपन की रवानी नई हो उठी।'

कवि ने उपर्युक्त पंक्तियों में प्रणयानुभूतियों की व्यंजना अत्यन्त सरस रूप में प्रस्तुत की है। यहाँ माधुर्य का गुण अपने विकसित रूप में उपलब्ध होता है।

4.5 संरचना शिल्प :-

Notes

चतुर्वेदी जी का शिल्प-सौन्दर्य भी उल्लेख है। भारतीय कलाओं में इन्होंने संगीत, स्थापत्य, चित्र, मूर्ति आदि का यत्र-तत्र स्पर्श किया है। इनकी भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है। कहीं-कहीं उर्दू-फारसी के शब्द भी हैं। शब्द-योजना सुसंगत है और छन्द योजना में भी नवीनता है। बिम्ब विधान की दृष्टि से इनकी राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना की कविताएँ सर्वथा सम्पन्न हैं। बिम्बों में प्राकृतिक बिम्बों की अधिकता है। चतुर्वेदीजी एक स्थल पर रूपक सृष्टि करते हुए 'वायु-रूपी कहारों द्वारा वाहित गंधों की डोली' की कल्पना की है, और इस प्रकार अपनी गंध रुचि का प्रमाण दिया है।

ध्वनि सौन्दर्य के प्रति ये कवि अपेक्षाकृत अधिक आकृष्ट हैं। इन्होंने स्थूल-सूक्ष्म (व्यक्त-अव्यक्त) सभी प्रकार की ध्वनियों को कणगत किया है और प्राय: उन्हें अविकल रूप में प्रतिध्वनित करने का प्रयत्न भी किया है। इन्हें प्राकृतिक ध्वनियाँ सर्वप्रिय हैं। चतुर्वेदी जी की स्पष्ट घोषणा है कि -

'ये कलरव कोमल कंठ सुहाने लगते हैं,

वेदों की झंझावात नहीं भाती मुझको।'

4.6 काव्य वाचन और सन्दर्भ सहित व्याख्या :-

यहाँ हम आपको काव्य-पाठ के लिए माखनलाल चतुर्वेदी की दो कविताएँ 'पुष्प की अभिलाषा' और 'जवानी' दे रहे हैं। हम आपको इनमें से कुछ अंश लेकर व्याख्या करना भी सिखायेंगे। कुछ अंशों की व्याख्या आप करेंगे।

'पुष्प की अभिलाषा'

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,

चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,

चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ,

चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,

'मुझे तोड़ लेना वनमाली,

Notes

उस पथ में देना तुम फेंक।

मातृ-भूमि पर शीष चढ़ाने,

जिस पथ जावें वीर अनेक।'

'जवानी'

प्राण अन्तर में लिये, पागल जवानी।

कौन कहता है कि तू

विधवा हुई खो ओज पानी ?

चल रहीं घड़ियां,

चले नभ के सितारे,

चल रहीं नदियां,

चले हिम खण्ड प्यारे,

चल रही है सांस,

फिर तू ठहर जाये ?

दो सदी पीछे कि

तेरी लहर जाये ?

पहन ले नर-मुंड माला,

उठ, स्वमुंड सुमेरु कर लें,

भूमि-सा तू पहन बाना आज धानी

प्राण तेरे साथ हैं, उठ री जवानी।

द्वार बलि का खोल

चल, भूडोल कर दें

एक हिम-गिरि एक सिर

का मोल कर दें,

मसल कर, अपने

इरादों–सी, उठा कर

दो हथेली हैं कि

पृथ्वी गोल कर दें ?

Notes

काव्यांशों की व्याख्या :–

अंश (1)

मुझे तोड़ लेना वनमाली,

उस पथ में देना तुम फेंक।

मातृ–भूमि पर शीश चढ़ाने,

जिस पथ जावें वीर अनेक।'

संकेत– मुझे तोड़ लेना ..... वीर अनेक।

सन्दर्भ– प्रस्तुत गीत 'युगचरण' में संकलित 'पुष्प की अभिलाषा' कविता से अवतरित किया गया है। इसके रचयिता माखनलाल चतुर्वेदी जी है।

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने पुष्प को माध्यम बनाकर अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए देशभक्त वीरों की चरण रज बनने की कामना की है। पुष्प उनके पथ में बिछना सर्वोत्तम मानता है।

व्याख्या– हे वन के माली ! तुम मुझे तोड़कर उस मार्ग में फेंक देना, जिस मार्ग से अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अनेक वीर अपने आपको न्योंछावर करने जा रहे हो।

काव्य सौन्दर्य– (1) कवि ने यहां देशभक्ति को सर्वश्रेष्ठ भक्ति बताया है।

(2) ओज गुण, वीर रस, तुकान्त पदावली।

अंश (2)

प्राण अन्तर में लिये, पागल जवानी।

कौन कहता है कि तू

विधवा हुई, खो ओज पानी ?

Notes

चल रही घड़ियाँ,

चले नभ के सितारे,

चल रही नदियाँ,

चले हिम खण्ड प्यारे;

चल रही है साँस,

फिर तू ठहर जाये ?

संकेत– प्राण अन्तर में ..... तू ठहर जाये ?

सन्दर्भ– प्रस्तुत पंक्तियाँ 'हिम किरीटिनी' काव्य संग्रह की 'जवानी' कविता से अवतरित की गई है। इनके रचयिता कवि माखनलाल चतुर्वेदी जी हैं।

प्रसंग– इन पंक्तियों में कवि देश के नौजवानों की युवावस्था पर आक्षेप लगाता हुआ कहता है–

व्याख्या– हे जवानी ! अपने अन्दर शक्तिशाली प्राणों को समेटे हुए तू अपना पराक्रम खोकर विधवा हो गई है, ऐसा कौन कहता है ? जब समय गतिमान है, तारे नक्षत्रादि अनवरत रूप से गतिमान है; नदियाँ और हिमालय की बर्फ का अपनी गति से बनना और बढ़ना जारी है; जब तक यह सृष्टि है (उसमें वायु का संचार है), तब तक ऐसा कैसे हो सकता है कि तू रुक जाए ? तुझे निरन्तर आगे ही बढ़ना होगा।

काव्य–सौन्दर्य : (1) युवाओं को सचेत किया गया है। (2) वीर रस, ओज गुण, अनुप्रास अलंकार, लयात्मकता

शेष अंशों की व्याख्या स्वयं करें।

4.7 सारांश :

कहने का आशय यह है कि माखनलाल चतुर्वेदी भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को स्वर देने वाले प्रमुख छायावदी कवि हैं। इनकी कविता में यदि कहीं ज्वालामुखी की तरह धधकता हुआ अन्तर्मन है तो कहीं पौरुष की हुंकार और कहीं करुणा से भरी मनुहार है। भाषा–शैली को संस्कारित, रूप एवं बिम्ब, प्रतीक, उपमान योजना को पूरी गहराई और स्वच्छंदता के साथ प्रस्तुत करने में माखनलाल चतुर्वेदीजी अद्वितीय हैं। चतुर्वेदी जी की कविता में भाव–पक्ष की कमी को कला पक्ष पूर्णता देता है।

4.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें :-

Notes

1-छायावाद की सही परख-पहचान : डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित; साहित्य रत्नाकर 104ए/118 रामबाग कानपुर, सन् 1991

2-हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास; गणपति चन्द्रगुप्त; लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, सन् 1989 ई.

3-हिंदी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स नोएडा, सन् 2004 ई.

4-छायावाद पुनर्मूल्यांकन : श्री सुमित्रानंदन पंत; लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1965 ई.

5-हिन्दी साहित्य का विवेचनपरक इतिहास : मोहन अवस्थी; वाणी प्रकाशन 21ए-दरियागंज नई दिल्ली, सन् 2008 ई.

4.9 बोध प्रश्न और उनके उत्तर :-

प्र.1. माखनलाल चतुर्वेदी किस काव्यधारा के कवि हैं ?

उत्तर- राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के कवि हैं।

प्र.2. माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म कब हुआ ?

उत्तर- सन् 1889 ई. में।

प्र.3. उनके पिता का क्या नाम था ?

उत्तर- पं. नन्दलाल चतुर्वेदी।

प्र.4. माखनलाल चतुर्वेदी हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष कब बने

उत्तर- सन् 1943 ई. में।

प्र.5. चतुर्वेदी जी को डी.लिट. की उपाधि कहां मिली ?

उत्तर : सागर विश्व विद्यालय से।

Notes

प्र.6. भारत सरकार ने चतुर्वेदी जी को कौन–सा सम्मान दिया ?

उत्तर– 'पद्म भूषण'।

प्र.7. मासिक पत्रिका 'प्रभा' का सम्पादन किसने किया ?

उत्तर– माखनलाल चतुर्वेदी ने।

प्र.8. 'हिम तरंगिनी' का रचनाकाल बताइये।

उत्तर– सन् 1949 ई.।

प्र.9. 'वेणु लो गूंजे धरा' की रचना कब हुई ?

उत्तर– सन् 1960 ई. में।

प्र.10. 'साहित्य देवता' माखनलाल चतुर्वेदी की किस प्रकार की रचना है ?

उत्तर– गद्य काव्य।

इकाई – 5 द्रुत पाठ –

मुकुटधर पाण्डेय, जानकीवल्लभ शास्त्री, विद्यावती कोकिल, सुमित्रा कुमारी सिन्हा, रामकुमार वर्मा

इकाई की रूपरेखा :–

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 पृष्ठ भूमि

5.3 जीवन परिचय एवं कृतित्व

5.3.1 मुकुटधर पाण्डेय का जीवन परिचय एवं कृतित्व

5.3.2 जानकीवल्लभ शास्त्री का जीवन परिचय एवं कृतित्व

5.3.3 विद्यावती कोकिल का जीवन परिचय एवं कृतित्व

5.3.4 सुमित्राकुमार सिन्हा का जीवन परिचय एवं कृतित्व

5.3.5 रामकुमार वर्मा का जीवन परिचय एवं कृतित्व

5.4 द्रुत पाठ हेतु चयनित कवियों के काव्य की अंतर्वस्तु

5.4.1 मुकुटधर पाण्डेय के काव्य की अंतर्वस्तु

5.4.2 जानकीवल्लभ शास्त्री के काव्य की अंतर्वस्तु

5.4.3 विद्यावती कोकिल के काव्य की अंतर्वस्तु

5.4.4 सुमित्रा कुमारी सिन्हा के काव्य की अंतर्वस्तु

Notes

5.4.5 रामकुमार वर्मा के काव्य की अंतर्वस्तु

5.5. संरचना शिल्प (काव्य रूप, काव्य भाषा)

5.5.1 मुकुटधर पाण्डेय का संरचना शिल्प

5.5.2 जानकी वल्लभ शास्त्री का संरचना शिल्प

5.5.3 विद्यावती कोकिल का संरचना शिल्प

5.5.4 सुमित्रा कुमारी सिन्हा का संरचना शिल्प

5.5.5 रामकुमार वर्मा का संरचना शिल्प

5.6 सारांश

5.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.8 बोध प्रश्न और उनके उत्तर

5.0 उद्देश्य :–

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- द्रुत पाठ हेतु चयनित कवियों के युग की पृष्ठभूमि एवं उनके जीवन और कृतित्व के बारे में जान सकेंगे,
- पाँचों कवियों के काव्य की अंतर्वस्तु बता सकेंगे, और
- कवियों की भाषा–शैली आदि की विशेषताओं को जान सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना :–

इस इकाई में आप मुकुटधर पाण्डेय, जानकीवल्लभ शास्त्री, विद्यावती कोकिल, सुमित्राकुमारी सिन्हा और रामकुमार वर्मा के बारे में अध्ययन करेंगे। सबसे पहले इन कवियों की युगीन पृष्ठभूमि को देखेंगे। इसके बाद आप इन पांचों कवियों के जीवन परिचय और कृतित्व की जानकारी हासिल करेंगे।

अन्तर्वस्तु में मुकुटधर पाण्डेय, जानकीवल्लभ शास्त्री, विद्यावती कोकिल, सुमित्राकुमारी सिन्हा और रामकुमार वर्मा की काव्य विशेषताओं के बारे में पढ़ेंगे। इन पांचों कवियों ने छायावादी कविता को छायावादोत्तर कविता से जोड़ने का पुल निर्मित किया है। संरचना शिल्प के अंतर्गत आप इन्हीं पांचों कवियों के काव्य शिल्प, काव्य भाषा के बारे में पढ़ेंगे। इन्होंने युगानुरूप नवीन शिल्प में अपनी कविताओं को ढाला है और छायावादी कविता को एक नया आकार प्रदान किया है।

Notes

आइए, इन कवियों की युगीन पृष्ठभूमि देखें।

5.2 पृष्ठभूमि :–

इकाई 1, 2, 3 और 4 में हमने छायावादी कवियों प्रसाद, निराला, महादेवी, पंत और माखनलाल चतुर्वेदी को प्राप्त जिस सामाजिक, साहित्यिक; आर्थिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि की चर्चा की थी। छायावाद की प्रारम्भिक रचनाओं में परिलक्षित उद्देश्य और चिन्तन को छायावाद के अन्त की सामाजिक, राजनैतिक परिस्थितियों पर आधारित राष्ट्रीयतावादी कविताओं में अनुभूति की सच्चाई और आवेश के साथ प्रस्तुत करने का कार्य इन पांचों कवियों ने किया है।

5.3 जीवन परिचय एवं कृतित्व :–

इस शीर्षक के अन्तर्गत द्रुत पाठ हेतु चयनित पांचों कवियों मुकुटधर पाण्डेय, जानकीवल्लभ शास्त्री, विद्यावती कोकिल, सुमित्रा कुमार सिन्हा और रामकुमार वर्मा का संक्षिप्त जीवन परिचय एवं कृतित्व अलग–अलग उपशीर्षकों में प्रस्तुत किया गया है।

5.3.1 मुकुटधर पाण्डेय का जीवन परिचय एवं कृतित्व :–

श्री मुकुटधर पाण्डेय को छायावाद का प्रवर्त्तक माना जाता है अवन्तिका के जनवरी 1954 के अंक में एक परिसंवाद ''छायावाद का प्रवर्तक कौन ?'' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। जिसमें सियाराम शरण गुप्त ने आचार्य शुक्ल के इतिहास से उदाहरण प्रस्तुत करते हुए मैथिलीशरण गुप्त और मुकुटधर पाण्डेय को छायावाद का प्रवर्तक माना है। मोहन अवस्थी ने हिन्दी साहित्य का विवेचनपरक इतिहास' में लिखा है कि ''छायावाद शब्द को लेकर हिन्दी में जो धमा–चौकड़ी मची, उससे अनिर्णय की स्थिति में पड़कर मैंने श्री मुकुटधर पांडेय को सन् 1968 में एक पत्र लिखा था, जिसमें निवेदन था कि इस शब्द का प्रयोग करने में आपका जो भाव था, उसे बताने की कृपा करें। पांडेय जी ने सन् 1920 की श्री शारदा में प्रकाशित अपने लेखों का हवाला देते हुए लिखा था कि

Notes

जो रचनाएँ मुझे अस्पष्ट जगी थीं, उन्हें मैंने छायावादी कह दिया था। मुझे क्या पता था कि यह शब्द चल पड़ेगा।''

मुकुटधर पांडेय का ध्यान 'छायावाद' का नामकरण करने में इन चार तत्वों पर केंन्द्रित था– धुंधलापन, अंतर्मुखी विचार–सरणि, आभिधानिक सीमा का अल्लंघन, नई शैली।

पूजा फूल इनकी प्रसिद्ध काव्य रचना है।

5.3.2 जानकी वल्लभ शास्त्री का जीवन परिचय एवं कृतित्व :–

जानकी वल्लभ शास्त्री के अनेक काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं– रूप–अरूप (1940) तीर–तरंग (1944), शिप्रा (1945), मेघगीत (1950), अवन्तिका (1953) आदि। इन संग्रहों में कवि की आस्था, प्रणयानुभूति, रहस्य आदि की अभिव्यक्ति कोमल एवं मधुर स्वरों में हुई है। इनके अतिरिक्त राधा, सुरसरि, शिशिर किरण, पाषाणी, तमसा आदि काव्यों की भी इन्होंने रचना की।

5.3.3 विद्यावती कोकिल का जीवन परिचय एवं कृतित्व :–

विद्यावती कोकिल का जन्म सन् 1914 ई. में हुआ था। उनके कविता संग्रहों में 'अंकुरिता', माँ, 'सुहागिनी', 'पुनर्मिलन', 'आरती' आदि उन्नेखनीय हैं। इनके गीतों में विभिन्न कोमल मधुर भावों–स्नेह, वात्सल्य, प्रणय, भक्ति आदि की अभिव्यक्ति अत्यन्त सरल, अकृत्रिम एवं मार्मिक रूप में हुई है।

5.3.4 सुमित्राकुमारी सिन्हा का जीवन परिचय एवं कृतित्व :–

कवयित्री सुमित्राकुमारी सिन्हा का जन्म सन् 1914 ई. में हुआ था।

इनके चार गीत–संग्रह प्रकाशित हुए हैं :–

विहाग, आशापर्व, पंथिनी, बोलों के देवता

इनके रचनाओं में स्वच्छंद एवं अतृप्त प्रणय की अभिव्यक्ति सहज–स्वाभाविक रूप में हुई है।

5.3.5 रामकुमार वर्मा का जीवन परिचय एवं कृतित्व :–

डॉ. रामकुमार वर्मा का जन्म सागर (म.प्र.) जनपद के गोपालगंज ग्राम में सन् 1905 ई. में हुआ था। राबर्टसन कालेज जबलपुर तथा प्रयाग–विश्व विद्यालय में इन्होंने शिक्षा पायी। सन्

1929 ई. में प्रयाग विश्वविद्यालय की एम.ए. (हिन्दी) परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर इन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रयाग विश्वविद्यालय में ये अध्यापन कार्य करते रहे। सन् 1940 ई. में नागपुर विश्वविद्यालय ने इन्हें डाक्टर आफ फिलॉसफी की उपाधि प्रदान की। हिन्दी के प्रोफेसर होकर ये सोवियत यूनियन और श्रीलंका भी गये। भारत सरकार ने इन्हें 'पद्म भूषण' की उपधि से और हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने 'साहित्य-वाचस्पति' की उपाधि से सम्मानित किया। इन्होंने देव-पुरस्कार तथा कालिदास-पुरस्कार भी प्राप्त किये। सन् 1966 ई. में प्रयाग-विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष के पद से इन्होंने अवकाश ग्रहण किया। सन् 1990 ई. में उनका देहावसान हो गया।

Notes

अंजलि (1924), अभिशाप (30), रूपराशि (31), चित्ररेखा (35), चन्द्रकिरण (37), संकेत (39), आकाश-गंगा इनके काव्य-संग्रह हैं तथा 'एक लव्य और उत्तरायण प्रबन्ध काव्य हैं।

5.4 द्रुत पाठ हेतु चयनित कवियों के काव्य की अंतर्वस्तु :-

छायावादी चतुष्टयेत्तर कवियों में मुकुटधर पाण्डेय, जानकीवल्लभ शास्त्री, विद्यावती कोकिल, सुमित्राकुमारी सिन्हा और रामकुमार वर्मा आदि कवियों की कविताओं में स्पष्ट छायावादी आह्वान सुनाई देता है। उनकी रचनाओं में छायावाद से उनका लगाव देखा जा सकता है।

यहाँ हम इन पाँचों कवियों की काव्य-प्रवृत्तियों का अध्ययन करेंगे।

5.4.1 मुकुटधर पाण्डेय के काव्य की अंतर्वस्तु :-

पंत जी को मुकुटधर पाण्डेय की 'कुररी' के स्वरों में विशेष रूप से छायावादी आह्वान सुनाई दिया। 'छायावाद' शब्द का प्रयोग करके मुकुटधर पाण्डेय ने उन रचनाओं में एक अंतर्मुखी विचार-सरणि, धुधलापन और आभिधानिक सीमा का उल्लंघन करने वाली अभिनव शैली देखी थी। ये सारे बिंदु तत्कालीन परिवेश से उत्पन्न, मानव चेतना को ऊर्जस्वित करने वाले दार्शनिक, सामाजिक एवं मानसिक स्रोतों के फलस्वरूप कविता के माध्यम से अभिव्यक्त हो रहे थे। मन: सौन्दर्य के अंतर्गत इन्होंने चांचल्य, व्रीड़ा, विस्मय, वेदना तथा अलसता आदि भाव-भंगिमाओं तथा मुद्राओं को उभारा है। इनके अनुसार देह-सौन्दर्य की तरह मन का भी सौन्दर्य होता है। इसी भाव से पांडेय जी ने कहा है -

'कुटिल केश चुम्बित सहास मुख मण्डल।'

Notes

यहाँ चपलता–चंचलता को कवि ने सशब्द किया है। वेदना विह्वल सकरुण मुखश्री को भी इन्होंने रेखांकित किया है।

5.4.2 जानकी वल्लभ शास्त्री के काव्य की अंतर्वस्तु :–

शास्त्री जी के काव्य–संग्रहों में आस्था, प्रणयानुभूति, रहस्य, माधुर्य के साथ–साथ भारतीय पुराणों एवं इतिहास के पात्रों को भी नयी भाव–भूमि के साथ किया गया है, यथाकुन्द और उपगुप्त, 'पार्वती', 'शकुन्तला', 'चाणक्य', 'मेघ–गीत' आदि में। वस्तुत: इनके काव्य में विचार और भाव, सत्य और सौन्दर्य का सुन्दर समन्वय प्रस्तुत हुआ है, यहां उदाहरणार्थ कुछ पंक्तियाँ उद्धृत हैं –

'नव निर्माण करेंगे हम इस भव शव का,

रहे नींव में भस्म तुम्हारे वैभव का।'

कवि की अन्त:वाणी कहीं–कहीं इस प्रकार से उभरी है –

'नींद नहीं आती, आ जाती तेरी याद,

कैसे तुझे सुनाऊँ अपना अन्तर्नाद।'

जानकी वल्लभ शास्त्री ने कला में सौन्दर्य की अवस्थिति अनिवार्य मानी है और उसे जीवन सौन्दर्य से निस्सृत भी घोषित किया है। उनके अनुसार 'जीवन में सौन्दर्य का उत्स न हो तो वह कला में कहां से आयेगा। शास्त्री जी ने 'कदम्ब के समान फूली', 'तमसा' में तम के सागर में खिली किरण कलिका, 'श्यामल सरसी पर श्रम सीकर' आदि की कल्पनाएँ कर अपना रसात्मक सौन्दर्य–बोध ा व्यक्त किया है। शरद को तो इन्होंने 'विरद ऋतु' कहा है। इन्होंने बसंत एवं पावस का भी रूपांकन किया है। 'मदन दहन' में भंवराई अमराई का चित्रांकन करते हुए कवि ने वासन्तिक शोभा का सफल उपस्थापन किया है –

'पल्लव वसन ललित लतिका में खिले फूल रतनार।

झर झर झरे गर्म गंधी स्वर गूंजे बसन्त बिहार।'

इसी प्रकार 'उत्फुल्ल मल्लिका मुकुल मुकुल शेफाली, मधु गंध भार लचती लचती–डाली।' आदि उक्तियां इस ऋतु सौन्दर्य की साक्षी हैं। कालिदास के मेघ रूपी दूत के स्थान पर रामगिरि के आश्रम से अब वायुयान गुजरते हैं, इस परिवर्तन को शास्त्री ने ऐसे चित्रित किया है –

'मेघदूत बन जाओ मेरे कालिदास के देश,

कहना हतभागी कविता का इतना ही सन्देश,

आज राम गिरि के आश्रम की चौड़ी छाती चीर,

धूम्रयान चलते उसाँस की बहती उष्ण समीर।'

Notes

5.4.3 विद्यावती कोकिल के काव्य की अंतर्वस्तु :-

इनके गीतों में विभिन्न मधुर, कोमल भावों-प्रणय, भक्ति, स्नेह, वात्सल्य आदि की अभिव्यक्ति अत्यन्त सरल अकृत्रिम एवं मार्मिक रूप में हुई है। कहीं-कहीं रस-सौन्दर्य की इनकी दृष्टि इनके भावों को दार्शनिकता की ओर मोड़ती हुई-सी जान पड़ती है -

'सखि अब रस बरसे मैं भीजूँ,

भीतर बरसैं बाहर बरसै दिन बरसै भर राती,

रस मुझमें सीझा, मैं रस में, तनिक तनिक कर सीझूँ

मिलन के बाद विरह की वेदना का वर्णन भी इन्होंने निम्नलिखित पंक्तियों में बड़ी चतुराई से दिया है -

'तुम चले तो किन्तु मिलकर प्राण रीते भर न पाए।'

डॉ. शिवकुमार मिश्र ने इनकी काव्यकला का विश्लेषण करते हुए इनकी गणना निस्संकोच रूप में आधुनिक गीतकारों की प्रथम श्रेणी के अंतर्गत की है, जो उचित ही है।

5.4.4 सुमित्रा कुमारी सिन्हा के काव्य की अंतर्वस्तु :-

कवयित्री सुमित्राकुमारी सिन्हा के काव्य में स्वच्छन्द एवं अतृप्त-प्रणय भावना की सहज अभिव्यक्ति हुई है। इन्होंने प्रेम को जीवन एवं सृष्टि का मूलाधार मानते हुए उसके प्रति दृढ़ आस्था व्यक्त की है। प्रारम्भिक तीन संकलनों में जहाँ प्रणय अनुभूति, वेदना एवं छटपटाहट अधिक है वहाँ चौथी रचना में प्रेम का संयमित, प्रौढ़ एवं गम्भीर रूप प्रस्फुटित हुआ है। इसमें कवयित्री ने प्रणय की व्यक्तिगत सीमाओं से ऊपर उठकर धरती के दु:ख-दैन्य, संघर्ष-पराजय एवं सन्तोष-असन्तोष को भी देखने का प्रयास किया जो उनके दृष्टिकोण की व्यापकता का परिचायक है। यहाँ इनकी कतिपय पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं :-

'जी करता है आज भुजा दूँ, सपनों का दर्द पुराना।

Notes

नन्हीं शिखा प्रणय की, अंजन लहरों में कब तक बल पाये ?'

5.4.5 रामकुमार वर्मा के काव्य की अंतर्वस्तु :-

इनके गीतों में रहस्यवाद की प्रवृत्ति विशेष रूप से दृष्टिगोचर होती है। इन्होंने स्वयं भी इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है- 'मैंने कविता को एक अत्यन्त पवित्र अनुभूति के रूप में समझा है। इसीलिए मैंने किसी हलके क्षण में कविता नहीं लिखी। ..... संभवत: यही कारण है कि मैं भौतिक श्रृंगार की कोई कविता नहीं लिख सका या जीवन की उन बातों पर प्रकाश नहीं डाल सका जो पार्थिव जीवन के क्रोड़ में अपनी दैनिक गति से घटित होती रहती है।' अस्तु इन्होंने दिव्य प्रेम या रहस्यानुभूतियों की व्यंजना मार्मिक रूप में प्रस्तुत की है।

'मेरे स्वर परिमित हैं जैसे प्रात: नभ के तारे।

किन्तु मिलन के भाव न भर सकते हैं, सागर सारे।

जीवन का यह बाण चुभा है मुझ में कैसा विषमय।

क्या निकाल सकते हैं, अंतिम क्षण के हाथ तुम्हारे।'

डॉ. रामकुमार वर्मा मुख्यत: कोमल, कैशोर एवं रहस्य के कवि हैं पर उनका संकलन गजरे तारों वाले, वस्तुत: उनकी छायावादी रचनाओं का अच्छा संग्रह है। इन्होंने सौन्दर्य संबंधी अनेक तथ्य उद्घाटित किये हैं। सौन्दर्य को परिभाषित करते हुए उन्होंने काव्य और सौन्दर्य की पारस्परिकता स्थापित की है। डॉ. वर्मा के शब्दों में 'सौन्दर्य स्थूल से उत्पन्न सूक्ष्म की वह सहज परिस्थिति है, जिसकी प्रगति सुख या आनन्द की ओर है। वर्मा जी ने आत्मा की गूढ़ सौन्दर्य-राशि का भावना के आलोक से प्रकाशित हो उठने को कविता कहा है। इनका सौन्दर्य-चिंतन मौलिक एवं महत्वपूर्ण है। उदाहरणार्थ -

'अरुण कोमल चितवन में यौवन मदिरा।'

सौन्दर्य विधान के अंतर्गत इन्होंने वय: सौन्दर्य सम्बन्धी कुछ उल्लेखनीय मानक भी स्थिर किये हैं। वर्मा जी को कैशोर के प्रति भी आसक्ति है। कैशोर अथवा वय: सन्धि इनको प्रचण्ड यौवन और वार्धक्य की अपेक्षा अधिक प्रिय है।

5.5 संरचना शिल्प :-

मुकुटधर पाण्डेय, जानकी वल्लभ शास्त्री, विद्यावती कोकिल, सुमित्राकुमारी सिन्हा और

रामकुमार वर्मा की कविताओं की संरचना और शिल्प-विधान विविधतापूर्ण है। इन्होंने अपने भाव स्पष्ट करने के लिए हर तरह के छंदों और काव्य शैलियों का प्रयोग किया है। ये कवि प्राय: छायावाद के उत्तरार्द्ध के हैं, अस्तु कहीं तो इनकी भाषा अतिशय कोमल और लोचदार है और कहीं भावों की तीव्रता के कारण धारदार और ऊबड़-खाबड़-सी प्रतीत होती है। बिम्ब सर्जना, उपमान योजना, प्रतीक निरूपण और अलंकार योजना में तो इन पांचों कवियों में मानों होड़-सी लगी हुई दिखाई देती है। नीचे इन पांचों कवियों के संरचना शिल्प पर पृथक् पृथक् चर्चा संक्षेप में करेंगे।

Notes

5.5.1 मुकुटधर पाण्डेय का संरचना शिल्प :-

मुकुटधर पाण्डेय की भाषा तत्सम शब्दावली से युक्त खड़ी बोली है। शब्द-संयोजन इतना सटीक और कलात्मक है कि कहीं-कहीं निराला का-सा स्वच्छंदतावाद दिखाई देता है। 'पूजा फूल' के मुक्तक गीतों में इनकी छन्द योजना और अलंकारों का समन्वय देखने योग्य है। शिल्प की दृष्टि से इनके गीत अत्यधिक प्रभावशाली और बिम्बात्मक है। उदाहरणार्थ 'पूजा फूल' काव्य-संग्रह की ये पंक्तियां देखिए-

'कज्जलित लोल लोचन रसाल

चन्दन चर्चित भुज चारु चीर।'

5.5.2 जानकी वल्लभ शास्त्री का संरचना शिल्प :-

जानकी वल्लभ शास्त्री जी की भाषा कोमलकान्त पदावली से युक्त खड़ी बोली है। सौन्दर्य चित्रण या श्रृंगारिक चेष्टाओं का चित्रण करते समय यत्र-तत्र भाषा में मैथिली भाषा का प्रभाव दिखाई देता है। चाक्षुष बिम्ब का एक उदाहरण प्रस्तुत हैं -

'सद्य स्नाता पथ गंधिनी उन्मादन।

कृष्णा गुरू सौरभ वासित वाम।।'

इसी प्रकार के चित्र बहुपलब्ध हैं। ध्वन्यात्मकता की दृष्टि से जानकी वल्लभ जी को बड़ी सफलता प्राप्त हुई है। उन्होंने नैसर्गिक ध्वनियों की संगीतात्मकता का सफल निर्वाह किया है। उदाहरणार्थ -

'मेघ मन्द्र में मंद्र सान्द्र ध्वनि द्रिम द्रिम द्रिम उन्मुद मृदंग की

भाद्र समुद्र रुद्र रव रशना नाच रही नव दश दिशि बसना

Notes

रिमझिम रिमझिम रुनझुन रुनझुन घुनकिट तच्छन टलमल टलमल

छुन छुन छननन झननन झुनझुन

यहाँ ध्वन्यात्मकता की सृष्टि प्राय: वर्णो एवं शब्दों की आवृत्ति द्वारा हुई है। यह प्रवृत्ति सायास होते हुए भी ध्वनि–सौन्दर्य की दृष्टि से सराहनीय है। इसी प्रकार इनके गीतों में मुक्तक शैली के साथ–साथ प्रतीकों और विराट रूपकों का प्रयोग भी हुआ है।

5.5.3 विद्यावती कोकिल का संरचना शिल्प –

विद्यावती कोकिल जी की भाषा उनके नाम के अनुसार ही मधुर एवं भावानुकूल खड़ी बोली है। कृत्रिमता से मुक्त उनके मुक्तक गीतों में श्रृंगार, वात्सल्य और भक्ति रस की प्रधानता है। कहीं–कहीं आवृत्ति एवं अनुप्रासों के प्रयोग से भी अनुभूति पर विशेष बल देने का प्रयास उन्होंने किया है –

तुम चले किन्तु सब बादल तमस के फट न पाए

तुम चले किन्तु सब बन्धन कसक के कट ना पाए।'

इस तरह से कवयित्री की शैली में सरलता एवं सरसता के साथ ही लयात्मक प्रवाह भी है जो पूर्ववर्ती कवियों में देखने को मिलता है।

5.5.4 सुमित्राकुमारी सिन्हा का संरचना शिल्प :–

सुमित्रा कुमारी सिन्हा की काव्य भाषा भी अन्य छायावादी कवियों की भाँति छायावृत्ति से प्रभावित प्रौढ़ और प्रांजल खड़ी बोली है। शैली की दृष्टि से मुक्तक गीतों की प्रधानता है। श्रृंगार, भक्ति, करुणा पर आधारित इनके गीतों में प्राकृतिक बिम्बों का प्रयोग बहुलता से हुआ है। मानवीकरण का भी प्रयोग प्राय: किया गया है।

5.5.5 रामकुमार वर्मा का संरचना शिल्प :–

डॉ. रामकुमार वर्मा की कविताएँ पूर्णत: छायावादी हैं। प्रकृति के मर्मस्पर्शी चित्र इनकी रचनाओं में सर्वत्र बिखरे पड़े हैं। इनके गीत संगीतात्मकता और चरम सीमा पर पहुंचे भावों के आवेश से पूर्ण हैं। इनका अलंकार–विधान नवीन तथा भावानुकूल है। नवीन उपमाओं का प्रयोग, चित्रात्मकता, कोमलकान्त पदावली तथा भाषा की स्वच्छता और स्पष्टता इनकी कविता की प्रमुख विशेषताएँ हैं। वर्माजी का 'एकलव्य' महाकाव्य छायावादी अभिव्यंजना का श्रेष्ठतम महाकाव्य है।

उनकी अभिव्यंजना-पद्धति अलंकृत और वक्र होते हुए भी अपेक्षाकृत सरल है और अनुभूति को प्रभावशाली रूप में मुखर करने में समर्थ है। वर्मा जी ने ध्वनि और दृगेन्द्रिय को यत्र-तत्र एकाकार करके 'चितवन कानों के पास' तथा 'आंख उठकर ध्वनि सुनती' जैसे प्रयोग भी किए हैं। मानवीकरण का एक उदाहरण देखिए -

'शब्दों के अधखुले द्वार से

अभिलाषाएँ निकल न पातीं।

उच्छवासों के लघु-लघु पथ पर

इच्छाएँ चलकर थक जातीं।'

5.6 सारांश :-

निष्कर्ष यह है कि काव्य की दृष्टि से इन पांचों कवियों (मुकुटधर पाण्डेय, जानकीवल्लभ शास्त्री, विद्यावती कोकिल, सुमित्राकुमारी सिन्हा और राम कुमार वर्मा) का भी अपना अलग स्थान है। इन्होंने छायावादी काव्यान्दोलन में अपने कर्त्तव्य द्वारा न केवल अपना योग अर्पित किया है, बल्कि छायावादी काव्य-सौन्दर्य को युगव्याप्त भी किया है। अपने काव्य में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और युगीन समस्याओं को उभारते हुए नवीन शिल्प के प्रति भी इन कवियों ने सजगता दर्शायी है और इस प्रकार छायावृत्ति तथा सौन्दर्यवृत्ति को एकात्म करने का उपक्रम किया है।

5.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें :-

1. छायावादी की सही परख पहचान : डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित; साहित्य रत्नाकर रामबाग कानपुर, सन् 1991 ई.
2. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास : गणपतिचन्द्र गुप्त; लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, सन् 1989 ई.
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र; मयूर पेपर बैक्स नोएडा, सन् 2004 ई.
4. छायावाद पुनर्मूल्यांकन : श्री सुमित्रा नंदन पंत; लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, सन् 1965 ई.
5. हिन्दी साहित्य का विवेचन परक इतिहास : मोहन अवस्थी वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली; सन् 2008 ई.

Notes

5.8 बोध प्रश्न और उनके उत्तर :

प्र.1 'छायावाद' का नामकरण किसने किया ?

उत्तर : मुकुटधर पाण्डेय ने।

प्र.2. जानकी वल्लभ शास्त्री की प्रमुख काव्यकृतियों के नाम बताइए।

उत्तर : रूप–अरूप, तीर तरंग, शिप्रा, मेघगीत, अवन्तिका, राधा, सुरसरि, शिशिर किरण, पाषाणी, तमसा, आदि काव्यों की रचना इन्होंने की।

प्र.3. विद्यावती कोकिल के प्रमुख काव्य–संग्रह कौन–कौन से हैं ?

उत्तर : विद्यावती कोकिल के प्रमुख काव्य–संग्रह 'अंकुरिता', माँ', 'सुहागिन', 'पुनर्मिलन', 'आरती' आदि उल्लेखनीय हैं।

प्र.4. सुमित्राकुमारी सिन्हा का जन्म कब हुआ था ? इनकी किन्हीं 4 काव्य रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर : सुमित्राकुमारी सिन्हा का जन्म सन् 1914 ई. में हुआ था। इनके चार गीत–संग्रह 'विहाग', 'आशापर्व', 'पंथिनी' और 'बोलों के देवता' हैं।

प्र.5. डॉ. रामकुमार वर्मा के किन्हीं 5 काव्य–संग्रहों के नाम तथा किन्हीं 2 प्रबन्ध काव्यों के नाम लिखिए।

उत्तर : काव्य संग्रह– 'अंजलि', 'अभिशाप', 'रूपराशि', 'चित्ररेखा', संकेत आदि।

प्रबन्ध काव्य– 'एकलव्य' और 'उत्तरायण'

प्र.6. डॉ. रामकुमार वर्मा की भाषा–शैली की विशेषताएँ संक्षेप में बताइए।

उत्तर : डॉ. रामकुमार वर्मा की भाषा सामान्य बोलचाल की तत्समयुक्त खड़ी बोली है। इनकी भाषा में छायावादी माधुर्य और कोमलता विद्यमान है। भाषा– संस्कार की दृष्टि से रामकुमार वर्मा छायावाद के श्रेष्ठ कवियों में है। इनके गीत प्राय: मुक्तक शैली में सरल और अलंकृत हैं। लगभग कविता की सभी मनोरम शैलियाँ इनकी रचनाओं में देखने को मिलती हैं।

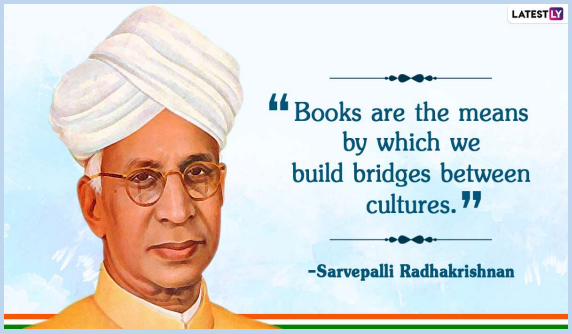

Center for Distance Learning & Continuing Education
MAHATMA GANDHI CHITRAKOOT GRAMODAYA VISHWAVIDYALAYA
Chitrakoot, Satna (M.P.) 485334
E-mail : directordistancemgcgv@gmail.com